

हमारे पर्व और त्यौहार

(सामाजिक प्रतिवेशों द्वारा समवायी ज्ञान)

ची० हरिहर मिह एम० ए०, बी० टी० (बनारस)

बी० टी० (सेवाग्राम) एम० टी० (देवमाह)



अनमार्ग प्रकाशन - दिल्ली.

प्रथम संस्करण 1965

प्रकाशक सन्माग प्रकाशन १६ यू० बी०
बगलो रोड दिल्ली ७

मूल्य सात रुपये पचास पस

मुद्रक वमन प्रस पटना ६

दो शब्द

आज का मानव चांद एवं अणु शक्ति पर पहुँचने की कल्पना को चरिताय करने के लिए प्रयत्नशील है। उसने अपने भस्तिष्क का इतना विकास कर लिया है कि चांद पर पहुँचना अथवा कुछ वर्षों की ही बात रह गयी है। लेकिन मानवता का जीवित अपने के लिए भस्तिष्क के साथ साथ हृदय का भी समुचित विकास आवश्यक है।

जहाँ मनुष्य का भस्तिष्क इतना विकसित हुआ है हृदय संकुचित होता जा रहा है आज के तथाकथित शिक्षित मनुष्य की अपेक्षा तथाकथित अपढ़ का हृदय अधिक विकसित है। उमम सरनता, कृष्णा अतिथि मवा एवं परापकार की भावना पड़े लिये की अपेक्षा अधिक है।

विद्यार्थ्या ये अपेक्षा की जाती है कि वे वरुचा के समुचित विकास की अपेक्षा देते वरुचो के भस्तिष्क के विकास के अनेक साधन वहा उपलब्ध हैं। उनका शरीर के विकास के लिए भी व्यायाम एवं खेल कूद का प्रयत्न रहता है परन्तु उनका मनुष्य बनाने वाले हृदय के विकास का साधन म्कूला में पर्याप्त मात्रा में नहीं देना जाता।

मनुष्य के हृदय के विकास के लिये समाज सेवा ईदर ममपण तथा माहिय और गरीब आदि बानाया का उपासना और अभ्यास एक मात्र साधन है। मैं दस्ता है कि विद्यार्थ्या में महापुरुषों की जयन्तिया और एक त्यौहार मनाये जाते हैं पर इन तरह नहीं मनाये जाते जिसमें वरुचा का विकास हो। इन पर त्यौहारों के दिन विद्यार्थ्या बन्द कर दिया जाता है और ममम लिया जाता है कि हमने एक त्यौहार मान लिये।

जयन्ती और एक त्यौहार तो एक साधन है जिन अवसर पर हम पीछे घूम कर दगते हैं और धाग बाने के लिये मात्र विनाशक बनते हैं। जयन्ती के द्वारा हम महापुरुषों के आदर्श जीवनो से प्रेरणा ग्रहण कर अपने जीवन का उन्नत बनाने हैं। इन प्रकार त्यौहार से भी अपने गिणा ग्रहण करते हैं और समाज में अपना मन्थक स्थापित कर समाज की कुरीतियों को दूर करने का प्रयत्न करते हैं और अपना परिभाजन भी करते हैं। यदि ऐसा कर सकते हैं तो हम यह कह सकते हैं कि हमने अपने विद्यार्थ्या में समुचित ढंग से एक त्यौहार मनाया।

बुनियादी विद्यार्थ्या में ज्ञान के तीन साधन हैं। समाज, प्रकृति और उद्योग। यदि मूल ज्ञान में कमी आये तो ज्ञान का मुख्य साधन समाज ही है। प्रकृति और उद्योग का ज्ञान समाज ही सजता है और समाजिक ज्ञान म्कूला है कि बुनियादी गिणा

गमाज के द्वारा, गमाज के लिये समाज को दी जाता है। समाज में हम का जाना और समाज में ही मरना है। समाज में बाहर रह कर मनुष्य तेवता बन जाय तो बन जाय पर मनुष्य नहीं बन सकता। आजकल भारत का समाज अस्त-यस्त अवस्था में है। भारत में समाज एक व्यक्ति को अलग अलग दृष्टिकोण से देया जाता है फलस्वरूप क्षेत्र विशेष में व्यक्ति विशेषता इतना आम बढ जाता है कि वह मसार का अद्वितीय महापुरुष बना जाता है लेकिन वह समाज का अपने साथ खीच नहीं सकता। समाज जहा का तहा रह जाता है। इस कमी को दूर करने के लिये समुचित ज्ञान देन की यत्रम्या विद्यालयों में होनी चाहिये ताकि नये समाज का निर्माण हो सके।

इसीलिये इस पुस्तक का रचना की गई। इस पुस्तक में समाज में मनाय जाने वाले पंच और त्यौहारों का स्कूला में मनाये जाने का ढंग बतलाया गया है। मैं मग भता हू शिक्षक यदि इसमें उल्लिखित ढंग से नये समाज की रचना का दृष्टिकोण में रचन हुए समाज से सम्पर्क स्थापित करें तो इन पंच त्यौहारों से बच्चा का समुचित विकास होगा और तब जाति निगम रंग धर्म और भूगोल की दिवारें ढहगी और मनुष्य, मनुष्य बनगा। इस उपदेश का लेखक इस पुस्तक की रचना की गई है।

आशा है इसमें बाछित पत्र मिलेगा।

(चीधरी हरिहर सिंह)

जिला शिक्षा पदाधिकारी

महाराणा

विषय-सूची

✽

→ म संख्या

(१) बुनियाती तालीम और मुक्ति	पृष्ठ संख्या
(२) बुनियादी शिक्षा म समवाय	१६
(३) बुनियादी शिक्षा म स्वावलम्बन का स्थान	७ १४
(४) नई तालिम म सामाजिक प्रतिवेगा का स्थान	१५ २१
(५) समान मे पर्वों का स्थान	२२ २५
(६) संस्थाओं म पर्व किस प्रकार मनाना चाहिए	२६-२८
(७) पर्वों का विभाजन	२९ ३२
(८) नव पव	३३ ३५
(९) २३ जनवरी—सुभाष जयन्ती	३६-३७
(१०) २६ जनवरी	३८ ४१
(११) २८ जनवरी—लाला लाजपत राय जयन्ती	४२ ४७
(१२) ३० जनवरी—गांधी पुण्य तिथि	४८ ५१
(१३) २ फरवरी—मोतीलाल पुण्य तिथि	५२ ५५
(१४) ११ फरवरी—जमनालाल बजाज पुण्य तिथि	५६ ६८
(१५) १२ फरवरी—सर्वोप्य दिवस	५९ ६१
(१६) १३ फरवरी—सरोजिनी नायडू जन्म तिथि	६२ ६५
(१७) १८ फरवरी—रामकृष्ण परमहंस जयन्ती	६६ ६७
(१८) १९ फरवरी—गोपालकृष्ण गोखले पुण्य तिथि	६८ ७०
	७१-७३

क्रम मर्या	पृष्ठ मर्या
(१९) २२ फरवरी—कम्बूरवा पुण्य तिथि	७४ ७६
(२०) १२ मार्च—उण्डी कूच दिवस	७७ ७९
(२१) १३ अप्रैल—जालियावाला बाग हत्याकाण्ड	८० ८२
(२२) २३ अप्रैल—गान्धी कुँवर सिंह	८३ ८७
(२३) ७ मई—रवा द्रनाथ टगार	८८ ९२
(२४) १० मई—प्रथम स्वाधीनता सप्ताह दिवस	९३-१०३
(२५) १ जून—दादा भाई नौरोजी पुण्य तिथि	१०४ १०७
(२६) ११ जून—गान्धी चितरजन दास पुण्य तिथि	१०८ ११२
(२७) १८ जून—महागनी लक्ष्मी प्राई	११३ ११७
(२८) २३ जुलाई—तिलक जयन्ती	११८ १२१
(२९) ९ अगस्त—भारत छोड़ो आन्दोलन	१२२ १२४
(३०) ११ अगस्त—स्वतंत्रता दिवस	२२५ १२७
(३१) ११ सितम्बर—विनावा जयन्ती	१२८ १३२
(३२) ३१ अक्टूबर—पटेल जयन्ती	१३३ १३५
(३३) १२ नवम्बर—महामना प० मदनमोहन मालवीय जी	१३६ १४०
(३४) १४ नवम्बर—नहरू जयन्ती	१४१ १४५
(३५) ३ दिसम्बर—राजेन्द्र प्रसाद जयन्ती	१४६ १५०
(३६) २५ दिसम्बर—ईसा मसीह जयन्ती	१५१ १५५
(३७) चन्द्र गुक्ल रामनवमी	१५६ १५९
(३८) चन्द्र गुक्ल १३—महावार जयन्ती	१६० १६३
(३९) वैशाख गुक्ल ३—गणपति वृत्तीया	१६४-१६५
(४०) वैशाख गुक्ल ३—परपुराण जयन्ती	१६६ १६७
(४१) वैशाख गुक्ल ५—महाकवि मूर जयन्ती	१६८ १७८
(४२) वैशाख पूर्णिमा—बुद्ध जयन्ती	१७९ १८५
(४३) ज्येष्ठ कृष्ण १५—बट मावित्रा व्रत	१८६ १८८

क्रम सख्या

पृष्ठ सख्या

(४४) ज्येष्ठ शुक्ल १०—गंगा दशहरा	१८९-१९०
(४५) ज्येष्ठ पूर्णिमा—करीर जयन्ती	१९१-१९७
(४६) श्रावण शुक्ल ५—नागपंचमी	१९८
(४७) श्रावण शुक्ल ७—तुलसी जयन्ती	१९९-२०९
(४८) श्रावण पूर्णिमा—रक्षाबंधन	२१०
(४९) भाद्रपद कृष्ण ८—कृष्णाष्टमी	२११-२१३
(५०) भाद्रपद शुक्ल ३—हरतालिका व्रत	२१४-२१५
(५१) भाद्रपद शुक्ल ४—गणेश चतुर्थी	२१६-२१७
(५२) भाद्रपद शुक्ल पंचमी—भारत दु हरिश्चंद्र	२१८-२२४
(५३) भाद्र शुक्ल पंचमी—ऋषि पंचमी	२२५-२२६
(५४) भाद्र शुक्ल १४—अनन्त चतुर्थी	२२७-२२८
(५५) आश्विन वदी ८—जीवित पुत्रिका	२२९
(५६) आश्विन कृष्ण १५—महालय	२३०
(५७) आश्विन शुक्ल १०—विजयाष्टमी	२३१-२३०
(५८) कार्तिक कृष्ण ४—रक्त चतुर्थी	२३३-२३४
(५९) कार्तिक अमावास्या—दीपावली	२३५-२३९
(६०) कार्तिक अमावास्या—स्वामी दयानंद सरस्वती निवाण	२४०-२४५
(६१) कार्तिक पूर्णिमा—नानक	२४६-२४४
(६२) माघ सुती पंचमी—वसन्त पंचमी	२४५-२४७
(६३) फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी—महाशिवरात्रि	२४८-२६०
(६४) फाल्गुन शुक्ल १५—होलिकोत्सव	२६१-२६६
(६५) माघ की १५ तारीख—समवरात	२६७-२७१
(६६) माघ की पहली तारीख—इंदुलफिट्टर	२७२-२७४
(६७) जित्त की दस तारीख—इंदुल जोहा	२७५-२७६
(६८) पाटघाला प्रवच	२७७-२८९

(1 घ 1)

क्रम सख्या	पृष्ठ सख्या
(६९) आदर्श विद्यार्थी	२९० २९४
(७०) आदर्श शिक्षक	२९५ ३००
(७१) प्रायना	३०१ ३०५
(७२) एकादशी व्रत	३०६ ३१०
(७३) मुहरम	३११ ३१२
(७४) आदरा विद्यालय	३१३ ३१४

प्रथम परिच्छेद
बुनियादी तालीम और मुक्ति

"सा विद्या या विमुक्तये"

हमार ऋषिया का यह उन्धोप है 'विद्या वही है जिममे हम मुक्ति प्राप्त होता है । हमारे यहाँ विद्या को एक प्राचीन परम्परा थी और थी उसनी एन अपना विशेषता । हम उस विद्या मानत ही न थे जिसस हम मुक्ति न मिल । हमार सार काय-कलाप इसीलिय होते थे कि हम मुक्ति मिल ।

मनुष्य परमात्मा का एक अंश है और परमात्मा म मिल जाना ही इसकी मुक्ति है । जीवन मरण के बंधन से छूट जाने को ही मुक्ति कहत हैं । मुक्ति का यह सन्तुलित अर्थ हुआ या अन्तिम अर्थ हुआ । इस मुक्ति का यह सन्तुलित अर्थ प्रवार के बंधना से मुक्ति प्राप्त करनी होगी । तब अन्त म आवागमन की मुक्ति स्वाभाविक और स्वत हो जायगी । अब प्रश्न यह है कि विद्या द्वारा मुक्ति प्राप्त करने के लिये क्या करना चाहिय और उसम नई तालीम कहीं तब सहायक होगी ।

आज हम चार आर म अनेक प्रकार के बंधन म जकड़े हुए हैं । अर्थ का बंधन है, गानतंत्र का बंधन है समाज का बंधन है धर्म का बंधन है, माया ममता और माह का बंधन है और अंत म है इस गारार का बंधन । सबन पहल हम गारार का इन बंधन से मुक्त करता है और तब आत्मा का मुक्त करत बिन्ह अवस्था म पहुचना है ।

अर्थ का बंधन पहला बंधन है और पराजन्मबन्धन इनकी पहली सीनी और स्वावगम्यन प्रमाण द्वार है । नई तालीम म हम कम को स्वत देत है । हम कहत है कि तिनो जन्मान कम के द्वारा ज्ञान की प्राप्ति जाना चाहिये । कम से अनेक हम ज्ञान का अस्तित्व नही मानने परन्तु इसी कम और ज्ञान के मध्य म आधुनिक स्वावगम्यन का रहस्य छिपा हुआ है । अर लौकिक हमन प्रारंभ भय-कलह का बंधन टट गया और हम मुक्त हो गय । यह एक एकांगी मुक्ति है ।

का बोझ ता बढ़ता है किन्तु मुक्ति किसी प्रकार की नहीं है प्रत्युत बाधन ही बनना जाता है। कोरे मस्तिष्क का विकास मनुष्य को शतान बना देता है और शोषक बनाता है। कारे हृदय का विकास मनुष्य को अकमण्य और नपुंसक बना देता है और कोरे शरीर का विकास मनुष्य का बल बनाता है। इस प्रकार अप्रेक्षा द्वारा चलाई गई शिक्षा पद्धति मनुष्य का शतान और शोषक बनाती है। किन्तु यूरोप में चलने वाली शिक्षा पद्धति में शरीर और मस्तिष्क दोनों का विकास होता है और मनुष्य मनुष्य न रहकर भगवान् हो जाता है। इसलिए नई तालीम में समाज सेवा, लाज सेवा तथा स्वस्थ विनोद का स्थान देकर हृदय के विकास के लिए भी प्रयाप्त स्थान रखा है।

रावण बुद्धिमान था। कहा जाता है कि उसके पाम दम व्यक्तियों की बुद्धि और पराक्रम था। किन्तु तार सग्रह की शक्ति तो राम में ही आई, जिन्होंने पाप को भी छूट नारी बना दिया। बदरो का देवता बना दिया और इस प्रकार एक सिर और दो भुजाओं वाला राम रावण से थोड़ा हा गया।

हम राम राज्य लाना है और इस गणतंत्र को रामतंत्र बनाना है। इसके लिए हम सबसे प्रथम राम बनना होगा। और इसके लिए नई तालीम ही मिल्द वाहन बन सकती है। पूणता का प्राप्ति करनी ही तो मुक्ति है। पूण में पूण का मित जाना ही तो मुक्ति है। लाज सग्रह की भावना का रख करके सारा व्यक्ति का विकास करना हा तो मुक्ति है और राम भगवान बन गये लाज सग्रह का विकास करके ही। यह देग मन्चे अर्थ में देवताओं का दंग हा जायगा यदि हम नई तालीम के सक्ता पर चरत हुए मुक्ति की ओर अप्रसर हा।

काम के एन और पहलू का हम त्त है क्याकि काम सत है। उसके बाद चित्त है और तब जानन्द आना है। गास्त्रा में कहा गया है कि चित्त वक्तिया का निरोध करना ही योग है। उसन लिए बहुनन्म रास्त बनाये गये हैं। यम और नियम का उहा त्तनी की गई है। जा साधारण मनुष्य के लिए सबथा असम्भव है। चित्त वक्तिया का निराध करके हम योगी बनना है। यम और नियम का अनुसरण करके चित्तवक्तिया का निराध करन में हम टुबन हैं। जब प्रान यह है कि हम योगी बने बनें क्याकि बिना योगी बने हम आश्रममें के बाधन से मुक्त नही हो गरन। चित्तवक्तिया का निराध करना ध्यान को एवाग्र करन का एक मांग बतलाया गया है। यम

और नियमों से ध्यान का एकाग्रिकरण होता है। परन्तु वह हमसे होगा नहीं। क्याकि हम दुबल हैं और हैं मासारिक। कबीर ने रास्ता बतलाया प्रेम का। प्रेम के द्वारा भी ध्यान एकाग्र हो सकता है। परन्तु हममें वह भी शक्ति नहीं है कि हम प्रेम करें। सत्कार की ज्वाला, भूषण की ज्वाला और माया-भ्रमता की ज्वाला से हमारा प्रेम टिकता नहीं है और प्रेम की धार पर चरना तल वार की धार पर चलने व समान है। बड़ी समस्या है यागी बनने की कोरी महत्वाकांक्षा है परन्तु मामन भयकर बाधाएँ और भीतर भयकर दुबलताएँ माग विराध करती हैं। अब बतलायें कि हम योगा कैसे करें और मुक्ति कैसे प्राप्त करें। नई तालीम हमारा सहायिका व रूप में आती है। वह कहती है कि लाव कल्याण का भावना से काम करने पर, उद्योग करने पर, सेवा करने पर और प्रयास करने पर अपने आप चितवसिया का निराध होना है और मन एकाग्र हो जाता है। भगवान न भी ता कहा है—'याग कममु कौशलम्।' हमने कम किया। उमम हमन पान प्राप्त किया और हा गय इस प्रकार हम बिना प्रयास व योगी। क्या है इससे भी बढ़कर सरल माग मुक्ति का, विदह हाने का और यागी बनने का ?

एक बात और। याग का अर्थ हाना है जोड़ना और जोड़ने वाले को कहते हैं यागी। ता कम और पान का जा सम-वय कर इन दोना का जाड़े वही ता हुआ योगी, और इस प्रकार व याग की माधना करने वाले को ही प्राप्त होनी है भौतिक तथा आध्यात्मिक मुक्ति।

ऊपर मैं लिखा है कि मुक्ति प्राप्त करना ही शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य है और एतन् लिय साधन बतलाया है सच्चिदानन्द का दान। यदि इसे इस तरह न कहें ता और स्पष्ट होगा कि सच्चिदानन्द का दान करना और मुक्ति प्राप्त करना दाना एव ही वस्तु है। और इनके लिय साधन है लोक-कल्याण की भावना व पानपूर्वक उत्पानक वाप करना। अब हम यही पर एक बात और समझ लनी चाहिये कि जम—मत् चित् और आनन्द तीना का समन्वित रूप ही सच्चिदानन्द कहलाना है उसी प्रकार बाहु हृदय और मस्तिष्क तीना व समन्वित रूप को हा मनुष्य कहत हैं। जिस प्रकार मनुष्य व त्रिमी एक अंग का मनुष्य नहीं कहत। उमा प्रकार सच्चिदानन्द के त्रिमी रूप का सच्चिदानन्द नहीं कहेंग। जिस प्रकार सत्-चित्त और आनन्द के समन्वित कल्पना को हा सच्चिदानन्द कहते हैं उसी प्रकार काम पान और आनन्द व समन्वित रूप को ही काम कहत है। जिस प्रकार मनुष्य का विना-

जन नहीं हो सकता, उसी प्रकार हम ऐसे काम की परिवर्तना भी नहीं कर सकते जिसमें केवल आनन्द ही हो, या केवल ज्ञान ही हो या केवल काम ही हो। हम बुनियादी शिक्षा में उस तरह के काम की कल्पना करते हैं जिस काम में ज्ञान और आनन्द का अयो-यात्रय तथा नित्य सम्बन्ध हो। और उस प्रकार के काम में ही हम मुक्ति मिलेगी।

एक बात और दखिय। सच्चिदानन्द का नाम ही बतला रहा है कि प्राथमिक क्या किस मिनती चाहिये और पृष्ठभूमि क्या है। सत चित और आनन्द में सबप्रथम सत है और तब चित है और उसके उपरान्त ज्ञान है। सत का अर्थ मन काम बतलाया है और उस तरह का काम बतलाया है जिससे क्षुधा की तृप्ति हो, शरीर की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो तथा लाव का कल्याण हो। इस प्रकार हम देखते हैं कि काम की पृष्ठ भूमि पर ज्ञान का ताना-बाना बुना जा सकता है और तब सात्विक आनन्द की अठसैलियाँ जगड़ाने लेंगी। यही है बुनियादी शिक्षा और यही है शिक्षा की बुनियाद।

द्वितीय परिच्छेद

युनियादी शिक्षा में समवाय

प्रचलित शिक्षा में इतिहास, भूगोल तथा भाषा पढ़ाने का अनुभव बलाएँ निकाली है, जिनके सहारे विद्यार्थियों के मस्तिष्क में इन विषयों की विभिन्न सूचनाएँ भरी जाती हैं। सूचनाएँ "गान" नहा हैं क्योंकि वे अनुभव पर बिल्कुल आधारित नहीं हैं। एसी सूचनाएँ बाज मान्य हैं। पर युनियादी शिक्षा ज्ञान प्राप्ति का आधार 'काम का मानती है एवं काम' द्वारा प्राप्त ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है। ता जिन दृश का, अंशबन्ध ग्रहण कर ज्ञान प्राप्त हो वह समवाय पद्धति है और जिन सूचनाएँ प्राप्त हैं वह सूचना महत्त्व पद्धति ही बहो जा मानी है।

समवाय हमारी एक पुरानी पद्धति है। इसके विवे हिन्दी में कोई दूसरा शब्द नहीं और अंग्रेजी में तो बिल्कुल ही कोई दूसरा शब्द नहीं है। परन्तु हम अंग्रेजी में कोरेलेशन (correlation) शब्द से समवाय का अर्थ निकालते हैं जो बिल्कुल गलत है। कारलेशन से वस्तुओं का सम्बन्ध तो जुटना है किन्तु जाना का अलग-अलग अस्तित्व भी रहना है। परन्तु समवाय में काम और ज्ञान का अन्यायाभिन सम्बन्ध होता है। एक के अभाव में दूसरे का अभाव निश्चित है, एक की कल्पना बिना दूसरे की कल्पना की ही नहीं जा सकती। जाना एक ही जिव के दो पहलू बह जाते हैं और इसी को समवाय कहते हैं। हम में और स्पष्ट करता हूँ। माँ-बाप का सम्बन्ध कोरलेशन कहा जायगा माँ भाई का सम्बन्ध कोरलेशन कहा जायगा। उमर जाना का अलग-अलग अस्तित्व रहते हुए भी एक दूसरे का महत्त्व कहा जा सकता है। हम इन प्रकार भी समझ सकते हैं। सम के दो समानान्तर लाइनों का (correlation) है। वे एक दूसरे में सम्बन्धित हैं। एक के अभाव में दूसरे का अर्थ है। परन्तु एक के अभाव में दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती एसी बात नहीं है। जाना का स्वतंत्र अस्तित्व है जाना को मिना-कर एक उमर का रूप है यह ठीक है परन्तु जाना मिना कर एक वस्तु है, उनका रूप परिवर्तित हो गया और उनको सजा, बचन तथा लिपि में भी परिवर्तित हो गया एसा बात नहीं। हम प्रकार जहाँ दो वस्तुएँ हैं प्रकार मिल जायें कि उनका सजा, बचन और लिपि में भी परिवर्तित हो जाय तथा

उनकी उपयोगिता भी दबल जाय वही समवाय प्रारंभ होगा। समवाय तो शास्त्रीय शब्द है। घडा और मिट्टी में जो सम्बन्ध है, सूत और वस्त्र में जो सम्बन्ध है, और छुरी तथा छुरी के ढट में जो सम्बन्ध है उसी को समवाय कह सकते हैं। चाकू में लकड़ा लगी है। कोई कहे कि यह चाकू नहीं है, लकड़ी है तो क्या दूर पड़ी हुई लकड़ी से काम किया जा सकता है, नहीं। यदि उसे लकड़ी न कह करके केवल चाकू कहते हैं और उसमें हम लकड़ी निकाल लेते हैं तो क्या वह चाकू का काम करेगा नहीं। स्पष्ट है कि एक की कल्पना दूसरे के अभाव में नहीं जा सकती और उसे ही समवायी सम्बन्ध कहते हैं। इस और भी स्पष्ट कराना चाहते तो इस तरह करेंगे। यूरोप के ज्ञान और काम की पद्धति कोरेलेशन की पद्धति कही जा सकती है। काम का अलग अस्तित्व है ज्ञान का अलग अस्तित्व है। लड़के कुछ ज्ञान प्राप्त करते हैं और कुछ काम भी करते हैं। परन्तु वे इस सिद्धान्त के कायल नहीं हैं कि काम द्वारा ज्ञान है। इसलिये उनकी पद्धति कोरेलेशन की पद्धति कही जायगी और हमारे काम द्वारा ज्ञान की पद्धति समवाय की पद्धति कही जायगी। वे काम व महत्त्व को तो मानते हैं परन्तु वे इसके कायल नहीं हैं कि काम का सम्बन्ध वास्तविक जीवन से हो और काम उत्पादक है। इसलिये उनके काम और ज्ञान की पद्धति वाली शिक्षा से जीवन की शिक्षा नहीं प्राप्त हो सकती जब कि हमारे यहाँ उत्पादक कार्यों द्वारा जीवन की शिक्षा मिलती है। और जो वास्तविक शिक्षा है। इसीलिये हमारी समवाय पद्धति में जीवनापयोगी उत्पादक कामों के द्वारा जीवनापयोगी शिक्षा दी जाती है। जो स्वावलम्बी नागरिकों को पैदा करती है।

समवाय शब्द में दो शक्तियाँ हैं—सम और वाय। दाना शक्ति का अपना अपना विशेष अर्थ है। जिस प्रकार मोटर में दा शक्तियाँ होती हैं एक गति देती है और दूसरी दिशा घनलाने है उसी प्रकार समवाय शब्द में दो शक्तियाँ हैं। वाय से गति प्राप्त होती है और सम से शिक्षा।

कई काम हैं जिनसे ज्ञान प्राप्त होता है। काम किया था उससे अनुभव प्राप्त हुआ उस अनुभव के आधार पर फिर काम किया और उससे कुछ और अनुभव प्राप्त हुआ। न काम का अज्ञान ज्ञान है न अनुभव का। आवश्यकता के अनुसार काम करने हैं और काम के अनुसार ज्ञान प्राप्त करते हैं। इसी को समवाय कहते हैं।

- आजकल एक बड़ो भूत हो गई है। भूल यह है कि इतिहास, भूगोल आदि विषयों को हम विषय न समझकर एतद सम्बन्धी ज्ञान की सचनार्ये देने लगे हैं। और फिर इसकी ज्ञान प्राप्ति व नियम काम का आयाजन करते हैं। यह ज्ञान प्राप्ति का बिलकुल ही गलत ढंग है। दुसरे तो उस समय जानते हैं जब बड़े बड़े विद्वानों का भी समय का ओर इसी दृष्टि से देखते हुये पाते हैं। अभी पाठे ही जिन हुआ जब बिहार के एक विगिष्ठ विद्वान तथा एक विश्वविद्यालय के उपकुलपति ने यह प्र न किया कि भूगोल पढाना है आप किम प्रकार काम करके समवाय द्वारा भूगोल पढायेंगे। मैंने उत्तर दिया कि मुझे भूगोल नहा पढाना है, सुक्त काम करना है और काम करते और कराने उस समय यदि विद्यार्थियों के अस्तित्व में जिज्ञासा उपपन्न हो गई तो उह गणित इतिहास, भूगोल तथा माहिल्य का सचनार्ये दे सकने हैं। ये सूचनार्ये अनुभव आधारित ज्ञान के कारण ज्ञान की सत्ता में भी पुकारो जा सकती हैं।

समवायों पद्धति द्वारा दिए गये ज्ञान में इतिहास भूगोल तथा दान के नाम से ज्ञान का पूरक करनेवाली रखाएँ नहा खाची जा सकती प्रत्युत ज्ञान समग्र ज्ञान के रूप में किया जाता है और ग्वि और परिम्यति के अनुसार विद्यार्थी उस ज्ञान का सम्बद्ध न स्वाध्याय, अनुभव सत्संग पढटन और ज्ञान-सम्पक द्वारा विगेष रूप से कर सकते हैं।

समवायी ज्ञान के हमारे ज्ञान साधन हैं—प्रकृति, समाज तथा उद्योग। हमारे यहाँ तीनों के लिये विगाल क्षेत्र पडा हुआ है। हमारे देश की तरह छे श्रुतियों और बारह महीने समार के किसी भी ऋतु में नहीं पाये जाने। हमारे देश की तरह गटाटोर अधकार से घिरे हुए दिन तथा दुग्ध धवल गति समार के विमा भी दान में नहीं पाये जाते। आवाग न वारें करनेवाले पहाड, धन अधकार पूण जंगल तथा पानान की घाट लनवान् गत हमारे देश में हैं। भयकर जाटेवाल् स्थान बिलबिलाना धूपवान् स्थान तथा सग्न वषा की बहार उठानवाउ स्थान हमारे देश में हैं। प्रकृति के इन विभिन्न रूप हम गिगा दन के लिये प्रम्युत हैं।

समाज के पव-योहार समाज के राति रिवाज समाज के अभ्यास और आनं, समाज के दुग्ध और सुग्ध, समाज की गान्धी और गमा समाज में उंच-नीच तथा समाज की ज्ञान ज्ञानवाउ परिचयन हमारे ज्ञान हैं।

जोवन-न्यायन तथा भौतिक आव-पकताओं की पूर्ति के लिये अनेक प्रकार के काम और धर्म हमारे ज्ञान हैं।

१ -समवाय के पहले पहलू का निश्चय करते हुये कायकर्ता स्थान तथा समय की परिस्थिति का ध्यान रखना पडेगा । कामकर्ता की परिस्थिति तथा स्थान और इन दोनों परिस्थितियों के साथ-ही-साथ कायकर्ता की मानस की परिस्थिति का भी ज्ञान रखना चाहिये । शिक्षक तथा शिक्षार्थी के सामन काम का उद्देश्य स्पष्ट रखना चाहिये । उद्देश्य में आर्थिक, नतिक तथा आध्यात्मिक के अतिरिक्त भौतिक उद्देश्य रखना चाहिये । जैसे कपडा बना रहे है तो पहनने के लिये । अपने पहनने के लिये, अपने परिवार के पहनने के लिये तथा अपने साथ वाला के पहनने के लिये । काम करते समय ही यदि विद्यार्थी के मस्तिष्क में जिज्ञासा उत्पन्न हो, और अवश्य होगी तो शिक्षक का काम उन ज्ञान पिपासा को केवल तृप्त करना ही नहीं है प्रत्युत तीव्र भी करना है । इस प्रकार जो ज्ञान प्राप्त होगा वही वास्तविक समवायी ज्ञान कहा जायगा और इस प्रकार जो काम होगा वही समवायी काम कहा जायगा । समवायी पद्धति द्वारा ज्ञान दिये जाने वाले पद्धति में शिक्षक का स्थान माग प्रशक के अतिरिक्त जोर कुछ नहीं रह जाता । वह विद्यार्थियों के साथ साथ रहकर परोक्षरूप से जिज्ञासा का उद्दीपन करता रहेगा । जोर यथाशक्ति उनकी तृप्ति करत हुये विद्यार्थियों में नवीन की जिज्ञासा उत्पन्न करेगा । जिससे वे स्वाध्याय और स्वप्रयत्न द्वारा ज्ञान दीपक को और अधिक प्रज्वलित करेंगे । शिक्षक सदा यह देखेगा कि विद्यार्थी के हृदय में उत्पन्न प्रदीप्त ज्ञान-दीपक अनायास अनाध्याय, अकर्म दुष्कर्म विषय वयार, आलस्य दम्भ और अनिच्छा द्वारा बुझ न जाय । शिक्षक की सतत जागरूकता के पहरे में विद्यार्थी कम करेगा और ज्ञान प्राप्त करेगा सवा करेगा और ज्ञान प्राप्त करेगा चिन्तन, अभ्यास और अनुभव द्वारा उसे पक्का करेगा और उसे ही समवायी ज्ञान कहा जायगा ।

- आजकल एक बड़ो भूत हो गई है। भूल यह है कि इतिहास, भूगोल आदि विषयों को हम विषय न समझकर एतद सम्बन्धी ज्ञान की मचनाएँ देने लगे हैं। और फिर इसकी पान प्राप्ति के निये काम का आयोजन करते हैं। यह पान प्राप्ति का बिलकुल ही गलत ढंग है। दुःख तो उस समय हाता है जब बड़े बड़े विद्वानों को भी समवाय की ओर इसी दृष्टि में देखते हुए पाते हैं। अभी थोड़े ही दिन हुआ जब बिहार के एक विगिण्ट विद्वान तथा एक विश्वविद्यालय के उपकुलपति ने यह प्रश्न किया कि भूगोल पढ़ाना है आप किस प्रकार काम करके समवाय द्वारा भूगोल पढ़ायेंगे। मैंने उत्तर दिया कि मुझे भूगोल नहीं पढ़ाना है, मुझे काम करना है और काम करते और कराने उस समय यदि विद्यार्थियों का मास्टर में जिनामा उत्पन्न हो गई तो उन्हें गणित इतिहास, भूगोल तथा साहित्य का सचनावें दे सकते हैं। ये सूचनावें अनुभव आधारित होने के कारण पान को सनाम भी पुकारा जा सकती है।

समवायी पद्धति द्वारा दिये गये पान में इतिहास, भूगोल तथा दर्शन के नाम से पान को पृथक् करनेवाली रेखाएँ नहीं खोबी जा सकनी प्रत्युत पान समग्र पान के रूप में किया जाता है और मन्त्रि और परिम्विनि के अनुसार विद्यार्थी उम ज्ञान का सम्बद्धन स्वाध्याय, अनुभव, मन्सग पयटन और जन-सम्पक द्वारा विगेष रूप से कर सकते हैं।

समवायी पान के हमारे तीन माधन हैं—प्रकृति, समाज तथा उद्योग। हमारे यहाँ तीनों के निये विगान छेन्न पडा हुआ है। हमारे देश की तरह छे ऋतुयें और बारह महान सप्ताह के किमी भी दश में नहीं पाय जाने। हमारे देश की तरह पत्ताटोप अथकार में घिरे हुए म्नि तथा दुग्ध घवल रात्रि सप्ताह के किमी भी दश में नहीं पाय जाने। आवागमन बार्ने करनेवाठ पहाड, धन अथकार पूण जगल तथा पानान की घाह केनवाल गन हमारे देश में हैं। भयकर जाहवाल स्थान, चिलचिलाती धूपवाल स्थान तथा मदा वर्षा की बहार उठानवाल स्थान हमारे देश में हैं। प्रकृति के इनन विभिन्न रूप हम गिगा दन के निये प्रस्तुत हैं।

समाज के पवन्साहार समाज के रानि रिवाज, समाज के अम्पान और आन्नें, समाज के दुःख और मुग, समाज की गादी और समाज समाज में अंष नाग तथा समाज की नित्य होनेवाल परिवतन हमारे गिगा है।

जावन-आपन तथा भौतिक आवश्यकताओं का पूर्ति के निये अन्व प्रकार के काम और धंधे हमारे गिगा हैं।

ज्ञान प्राप्त करने के लिये जिज्ञासा होनी चाहिये। और यदि हम जिज्ञासा हाकर क्यों, कब, कस और किस तरह के प्रश्नों के साथ आँख खोलकर चलते हैं तो हम ज्ञान का बिखरी हुई राशि मिलती है। हम अपनी रचि के अनुसार उन रत्नों का चयन करना है और इस प्रकार अपने जीवन को सबल बनाना है। यही है समवायी ज्ञान।

ऊपर मैंने लिखा है कि अनुभव का ही ज्ञान कहते हैं। काम करते हैं, सोचते हैं। काम करना सीखते हैं यह भी एक अनुभव अर्थात् ज्ञान हुआ। काम करने में भूलें हुई यह भी ज्ञान हुआ और अनुभव हुआ और उस काम से सम्बन्ध रखनेवाली अथवा बात का भावनात्मक है और उनका अनुभव करते हैं। दूसरी ओर हम इतिहास पढ़ते हैं या भूगोल पढ़ते हैं। उस इतिहास से हम अक्षरों के काम कलापा से परिचय प्राप्त करते हैं। यदि अक्षरों के काम कलापा का पत्र अपने काम-कलापा का गुण नहीं कर सब अक्षरों के भ्रमों से अपने भ्रमों का निवारण नहीं कर सकते तो अक्षरों के साथ पुनः का नाम रटने से क्या लाभ जबकि हम अपने ही पितामह और प्रपितामह का नाम जानते हैं। और इस प्रकार मस्तिष्क को कूटाखाना बनाने से मनुष्य का विभाग बुझित हो जाता है। हमने पढ़ लिया है कि भारतवर्ष के उत्तर में हिमालय है। परन्तु हम पता नहीं कि हमारा गाँव के उत्तर में क्या है। तो ऐसी अवस्था में उत्तर में हिमालय के जाने का ज्ञान आवश्यकता से सम्बद्ध न होने के कारण सड़ा हुआ ज्ञान क्या न कहा जायगा। हम दान शास्त्र के विद्वान हैं किन्तु ईश्वर के प्रति भक्ति नहीं हम डाक्टर और वैद्य हैं, स्वास्थ्य के पंडित हैं परन्तु बीड़ी और सिगरेट का सेवन करते हैं और रात्रि में जगकर सूर्योदय तक सोते रहते हैं तो हमारे स्वास्थ्य का ज्ञान एक विडम्बना मात्र क्या न कहा जायगा। हम स्वास्थ्य की परीक्षा में १०० नम्बर लाते हैं किन्तु दातुन करने का अभ्यास नहीं है तो स्वास्थ्य की परीक्षा में पास करता क्यों न हमारा स्पर्धक ममता जायगा। ऊपर लिखी ये मारी विडम्बनाएँ जो अपने आप में सत्य हैं समवाय पद्धति द्वारा दिये गये ज्ञान तथा अनुभव में असम्भव हैं।

सतार में सबसे पहले बान्धिकाएँ स्त्रियों से आवाज उठायी—'करा और सीला। इस विचार का प्रचार हुआ। हाउस में इस पर महल खड़ा किया। माटेमरी विडगाडन प्राजकट मयार डाल्टन प्लन आदि की पद्धतियाँ करा और सीला के आधार पर ही विज्ञान का गई। स्त्रियों के ज्ञान की अगुली जल गई परन्तु उमने कहा—राजा मन जलने दो। उममें वह माँगेगा।

और इस जलन में सीखनेवाले अनेक पैदा हुए। परतु इतिहास और भूगोल की पन्त वम ही चलता रही। गांधी आया। उसने कहा कि करो और सीखा की पद्धति तो ठाक है परतु निरयक कम से निरयक ज्ञान की प्राप्ति हाने की सम्भावना है और साथ ही उसने यह भी कहा कि विद्यार्थी समाज का प्राणा है उम समाज में किय जानेवाले कामों से सीखना है और साथ ही उसने यह भी कहा कि उत्पादन कामों द्वारा उत्पादन अनुभव प्राप्त करने हुए भाग्य मनुआ का उत्पादन करके स्वयं भोगना और ममार का भागने दना ही वास्तविक करा और मीमा के मिद्वान की गिया हागा। और इस प्रकार उसके हृदय का विकास हागा और वह पूण हागा। यही ता समयायी ज्ञान है।

मत्स्यराम आता है गुरु-आश्रम में और कहता है महाराज ? मुझे ब्रह्म विद्या दीजिये। गुरु उम एक हजार गाये दना है और कहता है इसे चार हजार करन ले आना। आजकाल तो हम इस कहम 'आया था हरि भजन का जोटन नग बपाग'। आया था विचारा ब्रह्म विद्या प्राप्त करने के लिये और चराने लगा गाय। परतु श्रद्धा पूर्वक उमने एक हजार गाया की मवा की और मेवा करत तथा काम करत हुए उमने अनुभव प्राप्त किया और नम अनुभव के दान पर उमने ब्रह्म ज्ञान प्राप्त किया। गुरु ने दगा उमके चेहर पर दिव्य तज है। गुरु ने कहा—बटा ब्रह्म ज्ञान मिल गया ? उमने कहा—हाँ गुरु और गिद्य दाना मनुप्ट हा गये। एमे ही ज्ञान का समवाय पद्धति कहत है। भगवान न भी ता कहा है—

श्रद्धावान नभत ज्ञानम या 'विश्वामम फल दायकम्'।

एक गदहा है। उमने पीठ पर ज्ञान और विज्ञान की पुस्तका का वास लदा है। गधे का उन पुस्तका के उपयोग का अनुभव नहीं प्राप्त है। उन पुस्तका में बणिन विद्याया का वह ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकता है। यही अवस्था उम मनुष्य की है जिमके मस्तिष्क में ताता रटन विद्याया का वाप पदा हुआ है और जा परीमाया में परीमा पुस्तक के पना पर उगत दन के निय है। उमके मस्तिष्क की विद्याया का उपयोग उमने लिए उतना ही है जितना गधे का पाठ पर रपी हुई पुस्तका का उपयोग गधे के लिय है। एक मुसाजी म। बहुत बडे विद्वान म। गणित के आचार्य म। व एक नदी के किनारे गधे म। उनका माय उनका दम कप की बच्चा ना था। हाने नदी के तट पर जाकर माचना प्रारम्भ किया कि नदी में कितना पाना है। यदि नदी के पानी की गहराई लटके की ऊंचाई में अधिक होगी ता मनुष्य को

पार करने की दूसरी व्यवस्था करनी होगी। उन्होंने पानी का नापा और उसका औसत निकाला और उस औसत से सिद्ध हुआ कि पानी उस लडके के कमर के बराबर है। उन्होंने लडके को पार करने की आजादी दी और कहा कोई हानि नहीं। गणित असत्य नहीं हो सकता। लडका नदी पार करने लगा और बीच में जाकर डूब गया। क्योंकि, बीच में पानी अधिक था और तट पर कम जिनका औसत लडके के कमर के बराबर था। मु'गीजी न सर पर हाथ रख कर 'कहाँ—लेखा जोखा घाटे लडका डूबा काहे। समवायी ज्ञान के अभाव में मु'गीजी का सारा ज्ञान व्यर्थ हुआ और उन्हें लडके में भी हाथ धाना पडा।

पंचतंत्र की प्रसिद्ध कहानी-मुस्तक में भी व्यवहारहीन परंतु प्रवीण पण्डिता की क्याए आई है। जिनसे यही सिद्ध होता है कि कम के बिना ज्ञान व्यर्थ है। और कई अज्ञानों में वह हानिकर सिद्ध होता है।

प्राचीन काल में हमारे यहाँ आश्रमों की स्थापना होती थी। विद्यार्थी गुरुकुल में जाकर गुरु के परिवार में मम्मिलित होता था। वहाँ रात्रि परिवार के बालक तथा भिक्षुक के बालक में कोई अंतर नहीं रहता था। वहाँ श्री कृष्ण और मुदामा दोनों लकड़ों काटते थे। घोर शारीरिक श्रम करके गुरु परिवार का पालन पोषण करते थे और अपने शरीर का भी सगठन करते थे। वहाँ का प्रधानता रहती थी जीर श्रम का माध्यम से ही चरित्र तथा हृदय की उत्थिति की जाती थी और किया जाता था मस्तिष्क का विकास। और इसीसे ही उन गुरुकुलों का नाम आश्रम पडा था। वास्तविक समवाय पद्धति उसी समय चलती थी। आयु भरत के पूर्वकाल की शिक्षा पद्धति आश्रम और समवाय की पद्धति कही जा सकती है। उस समय श्रम के बाद दूसरा स्थान चरित्र का था अर्थात् हृदय का था और तीसरा स्थान मस्तिष्क का था। जीवन का प्रारम्भिक काल में पच्चीस वर्षों तक विद्यार्थी श्रम पूरा जीवन व्यतीत करता था और (साध-ही-साध शास्त्र-पटुता तथा व्यवहार पटुता सघषण-गील सत्कार के उत्तरदायित्व तथा गुरुरा काया का उदाहरण प्रस्तुत करता था)। उस समय परम्परा थी कि पाँच वर्ष तक जननी नौ वर्ष तक पिता और तदुपरांत पच्चीस वर्षों तक आचार्य विद्या प्रदान करता था। विद्यार्थी पच्चीस वर्षों तक बल विद्या विज्ञान तथा वीर्य की रक्षा करता था और इस प्रकार ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करता था। ब्रह्म का अर्थ परमात्मा, विद्या और वीर्य तीनों होता है और श्रम का अर्थ उपासना,

अध्ययन और रमण हाता है और इस प्रकार विद्यार्थी ब्रह्म की उपासना, विद्या का अध्ययन तथा बीज की रक्षा करने हुए गुरुकुल में समयापन करता था। ईश्वर, विद्या तथा बीज तीनों का बमश उपासना, अध्ययन तथा रमण करता था और माध्यम या इनके लिए दारिरीक श्रम द्वारा विद्या हुआ उत्पादक कार्य। वहस्पति गुत्राचार्य का दुश्मन था। परन्तु गुत्राचार्य महम्पति क पुत्र कच का अपनी गुप्त विद्या सजीवनी देन में कृप भी नहीं हिचके। परन्तु गिणा दन क पहले उमकी पात्रता की पूरी परीक्षा कर ली गई और प्रमाण तो उमन तुरत ही द दिया। उमने दवयानी की प्रणय प्राथना को तुरत ही ठुररा दिया और बदल म इतनी कठिन तपस्या ने मीम्बी हुई विद्या मे भी वाज आया। इम तरह क चरित्र बल क अनेका उदाहरण हमारे उम समय के आश्रमा म पाय जात है।

जनक राजा थे—विदेह थे। विदेह उस कृत हैं जिसम रूप, रम, गंध, स्वाद और गन्ध के प्रति आकषण नहीं हाता। जन क भीतर कमल क पत्ते की तरह रहता है उसे विदेह कहने हैं उम ही बीतरागी कहने हैं। पर महति भी हल चलाकर लम्बी का उत्पन्न किया जिसम समार शीतल हा गया। और सिद्ध पर गिणा कि “पुम्पसिंह जा उद्यमी लम्बी ताकी चर। चञ्चर्वी राजा श्लोष न गीता का सवा की और गा रणा क लिय क अपन प्राणा की बनि दन के निय भी प्रस्तुत हा गये। भागवान श्रीकृष्ण का ता सारा जीवन ही बममय रहा है। बहन का तापम यह है कि बिना कम क पान प्राप्त नहा हा सक्ता है और बिना किसी कम क यदि पान प्राप्त हाता है ता उमे पान कहा नहा जा सक्ता। क्याकि उपर कहा गया है कि पान नम है। बिना कम क उपन्न पान कम की कमीटी क मामन आन पर अमपन गिद्ध हागा और मनुष्य धाता साधगा। इमतिय ममवाय पद्धति क अतरिकन गिणा की काई अय पद्धति नहीं है।

समयाप के चार पहलू हैं—

(१) हा क्या करना ह और रिग-प्रकार करना है इमका निश्चय करना चाहिय।

(२) निराय के अनुसार काय करना चाहिय।

(३) जोर गिर निय हुए काय का आताचता करनी चाहिय।

(४) और अन्न म सूबिया और रामिया क अनुसर अपना सुधार करना चाहिय।

समवाय के पहले पहलू का निश्चय करते हुये कायकर्ता, स्थान तथा समय की परिस्थिति का ध्यान रखना पड़ेगा । कायकर्ता की परिस्थिति तथा स्थान और इन दोनों परिस्थितिया के साथ ही-साथ कायकर्ता की मानस की परिस्थिति का भी ध्यान रखना चाहिये । शिक्षक तथा शिष्यार्थी के सामन काम का उद्देश्य स्पष्ट रखना चाहिये । उद्देश्य भौतिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक के अतिरिक्त भौतिक उद्देश्य रखना चाहिये । जिस कपटा बना रहे हैं तो पहनने के लिये । अपने पहनन के लिये, अपने परिवार के पहनने के लिये तथा अपने साथ वाला के पहनने के लिये । काम करत समय ही यदि विद्यार्थी के मस्तिष्क में जिनासा उत्पन्न हो, और अवश्य होगी तो शिक्षक का काम उस ज्ञान पिपासा का केवल तृप्त करना ही नहीं है प्रत्युत तीव्र भी करना है । इस प्रकार जो ज्ञान प्राप्त होगा वही वास्तविक समवायी ज्ञान कहा जायगा और इस प्रकार जो काम हागा वही समवायी काम कहा जायगा । समवायी पद्धति द्वारा ज्ञान दिये जाने वाले पद्धति में शिक्षक का स्थान मातृ प्रदशक के अतिरिक्त और कुछ नहीं रह जाता । वह विद्यार्थियों के साथ साथ रहकर परोक्षरूप से जिनासा का उद्दीपन करता रहेगा । और यथाशक्ति उसकी तृप्ति करत हुये विद्यार्थियों में नवीन की जिनासा उत्पन्न करेगा । जिससे वे स्वाध्याय और स्वप्रयत्न द्वारा ज्ञान दीपक की ओर अधिक प्रज्वलित करेंगे । शिक्षक जान यह देखेगा कि विद्यार्थी के हृदय में उत्पन्न प्रदीप्त ज्ञान-दीपक अनायास अनाध्याय, अकर्म दुष्कर्म, विषय-व्ययार ज्ञानस्य दम्भ और अनिच्छा द्वारा बुझ न जाय । शिक्षक की सतत जागरूकता के पहलू में विद्यार्थी काम करेगा और ज्ञान प्राप्त करेगा सेवा करेगा और ज्ञान प्राप्त करेगा चिन्तन, अभ्यास और अनुभव द्वारा उस पक्का करेगा और उसे ही समवायी ज्ञान कहा जायगा ।

तृतीय परिच्छेद

बुनियादी शिक्षा में स्वावलम्बन का स्थान

बुनियादी शिक्षा में स्वावलम्बन या स्वायत्तता को पूज्य वापू न बुनियादी शिक्षा की रीढ़ कहा है। शिक्षा का अर्थ ही मनुष्य की ईश्वर प्रदत्त सभी क्षमताओं का विकास करना और सभी क्षमताओं के विकास में ही स्वावलम्बन का भाव समाहित है। स्वावलम्बन की ओर हमनाम केवल आर्थिक दृष्टिकोण से देखते हैं। शिक्षा या विद्यार्थी अपना आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति जिस अर्थ में कर रहा है उसी अर्थ में शिक्षा या विद्यार्थी स्वावलम्बी माना जाता है। परन्तु यही हम भूल जाते हैं कि स्वावलम्बन के दूसरे पहलू भी हैं, जैसे नैतिक और आध्यात्मिक।

पुरानी पद्धति में शिक्षा प्राप्त व्यक्ति को यदि नौकरी मिल जाय तो आर्थिक दृष्टि से वह स्वावलम्बी कहा जा सकता है परन्तु नैतिक, आध्यात्मिक और शारीरिक एवं अन्य दृष्टियों से तो वह स्वावलम्बी कहा नहीं जा सकता। एक उदाहरण में यह बात स्पष्ट हो जायगी। आर्थिक दृष्टि से एक स्वावलम्बी व्यक्ति एक स्थान पर पहुँचना है जहाँ में उसका गन्तव्य स्थान तक पहुँचने के लिए कोई सवारी नहीं है तो उसका अर्थ का भार पराश्रम समाप्त हो जाता है। और यदि दूसरी दृष्टियों में स्वावलम्बी न हो तो वहाँ पर वह पूरी विफलता में पड़ जाता है। उसी तरह से अर्थ-सम्पन्न व्यक्ति का पाचक विना कारणों के ही अन्त चल जाय तो उस व्यक्ति के पास सब प्रकार का अर्थ-सम्पन्न रहने हुए भी उस व्यक्ति को उन्हीं पक्षों में ही पालन-पोषण करना पड़ता है। परन्तु बुनियादी शिक्षा प्राप्त व्यक्ति में सब प्रकार के स्वावलम्बन की पर्याप्त क्षमता रहनी है। अतः वह जीवन-यापन में सफल होता है।

आर्थिक और शारीरिक स्वावलम्बन के साथ ही नैतिक और आध्यात्मिक स्वावलम्बन भी आवश्यक है। केवल आर्थिक, शारीरिक तथा नैतिक दृष्टि में स्वावलम्बी व्यक्ति नानि और अनौचित्य क्षमता का आश्रय ले सकता है तथा आध्यात्मिक स्वावलम्बन के अभाव में वह अर्थ का अनर्थ कर सकता है। समाज के लिए वह महान् कष्टकर सिद्ध होगा। सबके लिए ही यह शिक्षा

सारा भारतवर्ष द्रस्त था । उसके समय में धर्म काय का लोप हो रहा था । साराश यह कि आध्यात्मिक स्वावलम्बन भां मनुष्य के लिए अपरिहाय है । आध्यात्मिक स्वावलम्बन ज्ञान पर ही उसके हृदय में करुणा का उद्रेक होगा, लोक सग्रह की भावना का स्फुरण होगा और इर्म प्रकार होगा वह समाज का पथिक । अब स्पष्ट हो गया कि स्वावलम्बन का वृहद अर्थ है बुनियादी गलाओ में । और यदि हम एक ही अर्थ लें तो यह एकांगी अर्थ कहा जायगा । परन्तु बड़े दुःख की बात है कि अधिकांश यत्कि स्वावलम्बन एक ही अर्थ अर्थात् आर्थिक स्वावलम्बन को आकत है । अभी कुछ ही दिनों पहले एक माननीय मंत्री ने निरीक्षण किया । वे बार बार विद्यार्थियों से यही जानना चाहते थे कि वे पत्थर सरकारी नौकरी चाहते कि जीवन में प्रवेश करके उत्पादक काम करेंगे । और जब विद्यार्थी उनसे यह कहते थे कि वे नौकरी नहीं करेंगे तो वे अपनी प्रसन्नता प्रकट करते थे । और उन्होंने यत्त किया ठीक है बुनियादी गलाओ में विद्यार्थियों से यही अपेक्षा की जाती है कि वे नौकरी नहीं करेंगे और स्वावलम्बन जीवन यत्तीत करेंगे । मैंने कहा कि यह ठीक है कि मरे विद्यार्थी स्वावलम्बी होंगे नौकरी नहीं करेंगे । इसका अर्थ यह हुआ कि वे नौकरी के पीछे परेशान नहों होंगे । परन्तु अत्र सर प्राप्त ज्ञान पर वे नौकरी भी प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि हमारे स्वावलम्बन की परिभाषा में यह भी जाता है कि परिस्थितिवश जो कोई भी काम सामान्य आय व्यक्ति उस चुनौती का स्वीकार कर उभय जच्छा अच्छा पत्र लाये । इस पर वे चौक जोर उन्होंने कहा कि यह तो ठीक नहीं है फिर तो नौकरी में भीड़ लगाने वाले लोग की समस्या की वृद्धि ही होगी । मैंने कहा कि मरे विद्यार्थी नौकरी में निरत पर जब विद्यार्थियों का तरह बजारों की समस्या की वृद्धि नहों करेंगे और भूखमरी के गिकार नहों होंगे । किन्तु आवश्यकता पडने पर नौकरी के अयाम्म सिद्ध न होंगे और नामा व्यवस्था में हाथ बटान लायक होंगे, स्वला से निरत हुए विद्यार्थियों की अपेक्षा में अपिक सम्पन्न होंगे, क्योंकि उन्हें स्वशासन की शिक्षा नहों दी जाती जबकि हमारे यहाँ विद्यार्थी प्रारम्भ से ही स्वशासन की शिक्षा ग्रहण करते हैं । अब बात रही भीड़ की । तो इस सम्बन्ध में मरे यह कहना है कि भाउ तो बड़े गौ हों, जवतक वक्त मानें सामाजिक ढाँचा रहेगा । इसके लिये गिना समाज और सरकार तीनों उत्तरदायी हों । एक कुम्हार उतने ही घट काम करके समाज में उन सामाजिक प्रतिष्ठा तथा आर्थिक अवस्था का नहों प्राप्त कर सक्ता जब कि उतने ही घट काम करके या उससे कम ही घट काम करके एक कुर्मी पर बठने वाले बाबू एन

आला एन्डर घूमनवाला डाक्टर, एन' वहम करने वाला वकील या भाषण देने वाला प्राफेसर उम कुम्हार की अपेक्षा कम योग्यता, कम महिष्णुता और कम उदारता तथा कम श्रम करके अधिक प्रतिष्ठा अधिक अथ तथा अधिक मौलिक मुल्का की उपनयि कर सक्ता है। ऐसी अवस्था में सभी व्यक्तियों का इस्तेमाल इन उत्पादक श्रमों की अपेक्षा उन कुर्सी वाले कामों के प्रति अधिक होगी। मरा वाता का मुनकर मंत्री महादेव जी चुप हो गये और उन्होंने हमारे तर्कों के घत का पहचाना और स्वीकार किया।

महामना पंडित मदनमाहन मालवायजी महाराज बहू बग्ने थे कि अपने विररविद्यालय से निकले हुए विद्यार्थियों से मैं अपेक्षा करता हूँ कि वे शाह देने न एन्डर उपयुक्तपति के उच्च पद पर पयन्त जिस पद पर रख दिए जायेंगे उस पद का मपादन योग्यता पूवक करेंगे। तो हम बुनियादी सिगक अपने विद्यार्थियों से यहा अपेक्षा करते हैं कि वे परिस्थिति और समय के अनुसार जिस काय का भी अपने हाथ में लेंगे उसका सम्पादन सुचारुपण सफलता पूवक करेंगे और यह होगी उनका स्वावलम्बन की एक व्यावहारिक कमीटी।

एक बालक है उस सामित साधना के साथ प्रतिकूल परिस्थिति में रग सिपा जाता है और वह अपने बुद्धिबल तथा बाहुबल का उपयोग कर उन्नति की आर अपमर हाता है, अपना अम्निक स्थिर कर लेता है, त्रिराधा पर विजय प्राप्त कर लेता है आर हृदय-बल के द्वारा उस प्रतिकूल परिस्थिति में भी सहयोग और सभानना का प्रसार करते हुए चतुर्दिक गत्य का प्रवाण करना है, गिव की यामना करना है और मुन्दर का निर्गण करता है। यह सच्चे अथ म नई तालीम का विद्यार्थी है। यही उसकी कसौटी है। मवाटे पद्धति से निकला हुआ विद्यार्थी ता नीमित साधना द्वारा प्रतिकूल परिस्थिति में बुचला जायगा और बेचल काय और णन की पद्धति से पढ़ा हुआ विद्यार्थी, जितने हृष्य का सम्बन्ध विचार न हुआ हा, बुचल भले जाय पर मगन का मृजन ता क्वापि नहा परेगा। ऐसी अवस्था में नई तालीम का विद्यार्थी सफल सिद्ध होगा और नई तालीम ही सफल तालीम सिद्ध होगी।

गिगा का कमीटी स्वावलम्बन ही क्या रखी गई, यह भी एक प्रश्न है। द्वा पर भी हम विचार कर लें। इन प्रश्न का उत्तर दन के पहा एक बात में मुसा दना चाहता हूँ। कुछ विद्वान यह समझते हैं कि बुनियादी गिगा में काम का महत्त्व ता अवश्य हाता चाहिए किन्तु क्विपर स्वावलम्बन का टका प्रश्न नहीं रगना चाहिए। उन सागा का मत है, उन्नत गिगा पर अन्तर

पढेगा बौद्धिक स्तर के ऊँचे उठने में स्वादट हागी और साथ ही विद्यार्थियों का शोषण भी हो सकता है। इस सम्बन्ध में मेरा नम्र निवेदन यह है कि उनके मस्तिष्क में अभी शिक्षा की स्पष्ट रेखा नहीं है। व इतिहास, भूगोल आदि तथ्या के संग्रह मात्र को ही शिक्षा तथा बुद्धि का विकास कहते हैं। परंतु हम उस अधूरी शिक्षा कहेंगे। छात्र, जूता बना रहा है लेकिन मुँदर और मजबूत जूतों का निर्माण उसने न किया तो उसका उस शक्ति का निर्माण कहाँ हुआ जिससे वह मजबूरी का पहचान कर सके, उस शक्ति का विकास कहाँ हुआ जिससे वह समझ सके कि उसके जूतों की बाजार में कुछ क्या नहीं है और फिर उसमें लोक-कल्याण की भावना का जागरित होने का अवसर कहीं मिला जिससे उसका हृदय विकसित होता। और इन गुणों के अभाव में केवल जूता बनाने की सैद्धांतिक योग्यता और किसी प्रकार से काम करने की भावना मात्र से वह शिक्षित कैसे कहा जायगा? यही नहीं बल्कि जाधिक स्वावलम्बन का पहलू का हटा देने से भारी अशिक्षा का डर है, मात्र और अज्ञान का फलने की शक्ति है। जोर विद्यार्थी तब वगैरों की भावना से काम करेगा। श्रम के प्रति वास्तविक निष्ठा उसके हृदय में नहीं जागी। सीमित समय में सुपुत्र काम करना है इसलिए वह करेगा। इसके प्रति भी हम सावधान रहना चाहिये। और इसलिए जाधिक स्वावलम्बन पर इतना जोर दिया गया है। अब केवल बात रही शोषण की। इसकी संभावना स्त्रियों नहीं है कि काम का नाप तो मिलेगा कि निर्माताओं के हाथ में है। शिक्षक तो सहायक माना गया है। और इसी बात को देखने के लिए निरीक्षकों की सेना भी तो तैयार है। ऐसी अवस्था में शोषण की आशंका नहीं करनी चाहिये। और फिर जहाँ उत्पादित वस्तुओं का उपयोग स्वयं करना है या समाज के कल्याण की भावना से उत्पादित करना है वहाँ शोषण का प्रश्न उठाना आवश्यकता से अधिक सावधानी रखलाना कहा जाय तो अनुचित नहीं होगा।

अब आएँ हम मूल प्रश्न पर अर्थात् स्वावलम्बन ही क्या ?

हम जड़ प्यास लगती है पानी पीते हैं और भूख लगती है तब खाते हैं, कपड़े की आवश्यकता होती है तब कपड़ा पहनते हैं और नहीं जरूरत रहने पर नहीं पहनते। बहने का तात्पर्य यह कि मनुष्य आवश्यकता का अनुसार कार्य करता है। महाभारत के युद्ध में भारी जन-हानि हुई। हमने आवश्यकता समझी कि जन शक्ति बढ़ानी चाहिये और तब नियम बनाय कि बिना पुत्रात्पत्ति के

स्वयं नहीं मिलेगा। इसी प्रकार जब नाजी जर्मनी को सैनिकों की आवश्यकता हुई तो डाक्टर कोमिन (Dr Ko Sching) ने Renssylvania Schoolmers's week proceeding, 1939) जर्मनी के आदर्श मनुष्य की रूपरेखा इस प्रकार प्रस्तुत की—' It is the ideal of the racially pure German of the Nordic endowed with all the racial characteristics ascribed to him in National Socialist thought to wit, a strong and beautifully balanced body untiring and resistant to any kind of hardship and, chief of all, the hardships of warfare, loyalty, obedience to the appointed leaders rather than individual, self assertion, a passionate desire to help in the accomplishment of German nation as the master nation above all the races Most of these qualities are the qualities of the soldier The Soldier is the new ideal of a man

इस तरह सम्पूर्ण राष्ट्र को ही सैनिक बनने में देखने की आकांक्षा करना जोर असैनिक-व्यक्तियों या पतित ममलाना कितना भयंकर चिन्तन और निष्ठा का उद्देश्य है।

समता के पुजारी तथा मस्थापक एक माकस के प्रिय निष्पक्ष महामा लिन ने कहा है "The School, a part from politics, is a lie and a hypocrisy" अर्थात् निष्ठा मस्याएँ राजनीति विहीन रहने पर सारहीन तथा असत्य की प्रतिपादनी होती हैं। इटली में निष्ठा का उद्देश्य "Work obey and Fight था। 'काम करो, जादग का पालन करो तथा लडो।' इस प्रकार हम लिया कि जिस दग में जिम प्रकार के व्यक्ति की आवश्यकता हानी है वसे व्यक्ति को तैयार करने के लिए उगी प्रकार का निष्ठा दी जाती है।

जब हमार यहाँ अदजा का शासन हुआ ता उनके राज के मचातन में सहामय मिद्ध हा और साथ ही उनके ध्यापार-वद्धन में मह्याग दें। अग्रजी निष्ठा-वद्धति के मस्थापक थी मर्वॉन न अपने पिता के पाग एक पत्र मन् १८३६ में निगा था—

"If our plans of education are followed up there not be a single idolator among the respectable

classes in Bengal thirty years hence"—अब इमी वान को दूसरे ढग ने लाड मेकालि साहब के गुह मिस्टर चाल्स ग्राट के मुख से इन प्रकार सुनिए—“And wherever, we may venture to say, our principles and language are introduced our commence will follow”—(General Appendix to Report from Select Committee on the affairs of East India Company, London, 1832, Page 88) अर्थात् जहाँ वही भी हम लोग के सिद्धान्त तथा भाषा का प्रवतन हुआ हम लोग का व्यापार फलगा । इसी प्रकार सर चान्म ट्रेवेलिण न अपनी पुस्तक “On the Education of People of India, 1838” म लिखा है कि भारतीया के मस्तिष्क से उनकी स्वतन्त्रता की याद को बिल्कुल मिटा देने के लिए उनम नवीन शिक्षा तथा सुधार का प्रचार करना चाहिए । लाड मेकाले ने अपनी यात को और भी स्पष्ट करन के लिए आग लिखा है—“Form a class who may be interpreters between us and the millions we govern, a class of persons Indians in blood and colour, but English in taste, in opinions, and morals and intellects” अर्थात् एक बग का निर्माण करा । जो हमारी तथा हमार बरादा नामित प्रजा के मध्य म द्विभाषीय का काम करे, वह बग ऐसा हा जा रूप रंग तथा रक्त से भारतीय हो परन्तु रचि, विचार, नतिवता तथा बुद्धि स अंग्रेज हो ।

अब स्पष्ट हा गया कि अंग्रेज दासवो का किस प्रकार के व्यक्तिया की आवश्यकता थी । और उन लागो न वैसे ही स्कूला का खान कर और उसी प्रकार की पढाई का प्रचलन कर वैसे ही व्यक्तिया का तयार करना शुरू किया । उन लोगो न प्राचीन पाठशालाआ का विनाश किया, जिस १८३३ के चाटर के Education नीयक म स्वीकार भी किया गया है और नये प्रकार का शिक्षा सस्थाआ का निर्माण भी किया । हम इसत विस्तार म तही जाना चाहत और न यह लिखलाना चाहत है कि अंग्रेजो ने किस प्रकार विला के स्थान पर विश्वविद्यालया का निर्माण कर अपने राज्य का दृढ़ किया ।

भारत आजात हुआ और पूज्य बापू न देखा कि अब हम ऐसे व्यक्तिया की आवश्यकता है जा शरीर स स्वस्थ्य हा और मन स दृढ़ सक्त्पवाले हा तथा जिनका हृदय बसवान तथा विशाल हो जो सहिष्णु हो चरित्रवान् हा

तथा जिनकी भुजाओं में इतना बल है कि वे नये भारत का निमण कर सकें, जिनमें शोषण न हो, छूआछूत न हो, ऊँच-नीच की भावना न हो और हों वे पूण स्वावलम्बी । इस प्रकार के व्यक्तियों से भरे हुए नये समाज का उन्मत्त हो जाय भारत से राग शाक, दुस्-स्वार्थिद्रव्य, ईर्ष्या-फूट और घर्मा-घना तथा अन्य प्रकार की सकीणताओं का दूर कर सकें—वे ऐसे समाज की रचना कर सकें जो शासनविहीन, विकेंद्रित तथा शापणहीन हो, मात्र ही वह ऐसे समाज की रचना कर सकें जो अहिंसा प्रेम और सत्य पर आधारित हो तथा प्रगति व पथ पर सगार की प्रतिद्वन्द्विता में सफलतापूर्वक दौड़ सकें, जिनकी आँखें, कान नाक आदि सभी इंद्रियाँ ज्ञान-मयम के लिए उन्मुक्त हो और जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सिद्धान्त का प्रचार कर सकें । इन्हीं भावनाओं से प्रेरित होकर नई तालीम का उद्भव हुआ ।

नई तालीम का जीवन की गिन्या बहुत है और यह जीवन के माध्यम से दी जाती है । यह गभावस्था में मृत्यु पश्चात् तक चलती रहता है, ऐसा महात्मा का वाक्य है । परन्तु मैं इससे भी एक कदम आगे बढ़कर कहने के लिए तैयार हूँ । हम हिन्दू हैं, हम पुनर्जन्म का सिद्धान्त को मानते हैं । पश्चिम की गिन्या पद्धति मनुष्य का अपने पैरों पर खड़ा तो अवश्य करती है किन्तु उसकी दृष्टि मनुष्य का इस जीवन तक ही सीमित रहता है । वह भौतिक गिन्या मात्र का ही गिन्या समझती है परन्तु हृदय का विकास तथा साक मरुह की भावना के माध्यम में आध्यात्मिक प्रगति का महत्व को स्वीकार करने की आवश्यकता को स्वीकार नहीं करती । पर नई तालीम जमा ऊपर लिखा गया है भौतिक तथा आध्यात्मिक स्वावलम्बन की भावना का संस्कार उत्पन्न कर मनुष्य की आत्मा को मृत्यु की साड़ी का उस पार भी ले जाती है और इस प्रकार उत्पन्न किया गया संस्कार मृत्यु का साड़ी का उस पार का जीव के श्रिया कलाप का निदग्गन तथा निदग्गन करता है । यह है नई तालीम में स्वावलम्बन का स्थान का महत्व ।

१—नई तालीम में सामाजिक प्रतिवेपों का स्थान

नई तालीम जीवन की शिक्षा है और जीवन के द्वारा दी जाती है

मनुष्य एक व्यक्ति है। व्यक्तियों के समूह को ही समाज कहते हैं। समाज और व्यक्ति का अयो-याथय सम्बन्ध है। यदि व्यक्ति अच्छे होंगे तो समाज भी अच्छा होगा और समाज यदि अच्छा होगा तो व्यक्ति अच्छे होंगे। अतः समाज का धर्म है कि व्यक्ति का स्वच्छ रखे और व्यक्ति का धर्म है कि समाज का स्वच्छ रखे। जो समाज अपने ऊपर रहनवाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए उन्नति तथा विकास का सम्भव अवसर देता है और सबकी भलाई चाहता है वास्तव में वही सर्वोदय समाज है। उस समाज में अधिकांश की भलाई का भाव नहीं रहता बल्कि सबकी भलाई का भाव रहता है। अधिकांश की भलाई की बात तो पश्चिम में बहुमत में सिद्धांत की दम है। यह हमारी वस्तु नहीं है। हमने तो 'सर्वेभूत हिता रता' तथा 'सर्वे भवतु सुखिन' का सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। एसा है हमारा समाज।

व्यक्ति और समाज में इतना स्पष्टीकरण करने में उपरान्त हम अपने मूल प्रश्न पर आते हैं कि नई तालीम जीवन की शिक्षा है। जीवन-यापन समाज में जाना है। समाज की इच्छाएँ एक दूसरे में सम्बद्ध हैं काम में द्वारा और वह काम तीन भागों में विभाजित हो सकता है—हृदय का पुष्ट करनेवाले काम मस्तिष्क का पुष्ट करनेवाले काम और ऊपर को पुष्ट करनेवाले काम। तीनों प्रकार के कामों में तीन प्रकार की पौष्टिकता रहती है। परन्तु किसी काम में किसी प्रकार की पौष्टिकता की विशेषता होती है।

नई तालीम में काम ज्ञान और आनन्द को विभाजक रेखाएँ नहीं खींची जा सकती। सतः चित और आनन्द की तरह वाहू, मस्तिष्क तथा हृदय तीनों का पुष्ट करने वाले काम ही सन्निधान का दान कराते हैं। परन्तु जसा हमने ऊपर कहा है कि किसी काम में किसी प्रकार की पौष्टिकता विशेष होती है। जसा भगवान् ने २४ अवतारों में प्रत्येक अवतार अपनी-अपनी एक-एक विशेषता के लिए प्रसिद्ध है उसी प्रकार सामाजिक काम ज्ञान

की वृद्धि तो करते हैं, शूष्मा तृप्ति द्वारा तथा आवश्यक बचपना द्वारा शरीर को तो पुष्ट करने ही हैं तथा मेवा और उल्लास का वातावरण (उपस्थित कर हृदय का विशाल और उमुक्त करते हैं परन्तु इन सामाजिक कार्यों तथा पत्र तथाहारा में विरोधना हृदय के विकास तथा मस्तिष्क के उन्नयन की बात आती है तब उमरे उन्नत शरीर की पौष्टिकता की बात आती है।

हम यहाँ सामाजिक प्रतिबन्धों द्वारा यह दिखलाने का प्रयत्न करेंगे कि मनुष्य किन प्रकार अपनी तीना गतिना का सम्यक विकास इन प्रतिबन्धों का उचित उपयोग करके कर सकता है और 'समुपव कुटुम्बक' की तरफ आगे बढ़ते हुए मृत्यु के उमर की भी बिगड़ी बना सकता है।

सामाजिक प्रतिबन्धों में मुख्यतया उन बातों का बणन किया जायगा जो प्रतिबन्धों में होनेवाले पत्र-योहार, राति रिवाज सामाजिक तथा हास परिहास में सम्मिलित रहने हैं। सामाजिक प्रतिबन्धों की तुलना हम उमर प्रकार का तथा म कर सकते हैं जिसका एक किनारा प्राकृतिक प्रतिबन्धों द्वारा किनारा औद्योगिक प्रतिबन्धों का छूना चलता है।

जसा हमने ऊपर लिखा है कि व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है इसलिए उन समाज में अलग रह कर उमर विकास की बचपना किडरगादन तथा डाल्टन-मन में भ्रम की जाय परन्तु नहीं सार्वभौम में इस प्रकार की बचपना की बलना ही नहीं की जा सकती। हम ता बालक का प्रारम्भ में ही समाज में रहकर समाज में मानने लायक गुणों का उत्तम उमर करना है जिसमें वह आगे चलकर मनुष्य अथवा सामाजिक प्राणी हो और जिस प्रकार उस समाज से बहुत कुछ ग्रहण कर अपने को पुष्ट किया है उसी प्रकार समाज को भी कुछ और समाज-मचालन में सहायक सिद्ध होकर उसकी सुख-सुविधा तथा मंगल का यदि करते हुए उन सर्वे भयानु सुगिन की ओर से चने जिससे सर्वोत्तम समाज की स्थापना हो सके।

समाज के बचपन में और समाज के प्रयत्न हलचल व्यवहार तथा रती रती रिवाज में मान की राति बिगरी पड़ी हैं और बालक मरफत गिखन के नेतृत्व में जीव मानकर चने ता उमर निव्य मान की प्राप्ति होगा। दत्तानेय ने २४ गुणों का इसी समाज में दत्ता और उनका आग्रहपूर्वक अपने आवरण में समावेश कर प्रत्यक्ष का प्राप्त कर लिया। उन किसी मंगलित निम्न संस्था में इन्हीं गुणों में गिना नहीं दी गई। समाज के सभी महादत्ताओं में -

समाज में ही अकृत्रिम ढंग से शिक्षा ग्रहण की और इस प्रकार परम तत्त्व की उपलब्धि हुई और इसलिए ता कहा गया है कि "समाजो परमेश्वर !"

आज हम अपने नई तालीम के विद्यालयों में भी रूढ़िवादी हात चले जा रहे हैं यह बड़े दुःख की बात है। जैसे पुराने प्रकार के विद्यालय समाज से अलग होकर कुछ खास प्रकार की मस्तिष्क सम्बन्धी सूचनाएँ विद्यार्थी के मस्तिष्क में भर देने मात्र को ही गिना कहते थे और अक्षर ज्ञान को गिना या साधन न मानकर शिक्षा मान बैठे थे और जिस प्रकार उन विद्यालयों से निकलनेवाले विद्यार्थी समाज के लिए अनुपयुक्त होते थे उसी प्रकार नई तालीम के विद्यालयों में भी सामाजिक प्रतिवेप तो नाममात्र के लिए ही रह गया है और कुछ खास प्रकार के उद्योगों का समावेश स्कूल की पढ़ाई में कर और उनका ही अधिकतर ज्ञान देकर तथा स्वतंत्र रूप से अक्षर ज्ञान कराकर नई तालीम द्वारा शिक्षा दी जाने की इतिश्री समय बैठे हैं। इस प्रकार नई तालीम के विद्यालय पुरानी तालीम के विद्यालयों की तरह कुछ कुछ रूढ़िवादी हात चल जा रहे हैं। यह रूढ़िवादीता अपने आप उठ जायगी जब हम सामाजिक प्रतिवेपों का सम्यक उपयोग कर सम्यक ज्ञान प्राप्ति की ओर दृष्टि रखेंगे। इसीलिए नई तालीम के विद्यालयों में सामाजिक प्रतिवेपों का अपन अन्तर्गत ही महत्वपूर्ण स्थान है।

अब हम समझते हैं कि यह स्पष्ट हो गया होगा कि नई तालीम के विद्यालयों में सामाजिक प्रतिवेपों का क्या स्थान है।

सामाजिक प्रतिवेपों का नई तालीम के विद्यालयों में स्थान है ऐसा हमने लिखा है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं समझना चाहिए कि पुराने ढंग से चलनेवाले विद्यालयों में इसका स्थान नहीं है। सच्ची शिक्षा जहाँ कहीं भी दी जाती है चाहे वह पुरानी तालीम का विद्यालय हो सभी स्थानों पर सामाजिक प्रतिवेपों का बराबर मूल्य है। और अब इस राज्य में नई तालीम और पुरानी तालीम की विभेदक दीवारें तो टूट ही रही हैं अब अब इसका प्रश्न ही नहीं रहा।

पुराने विद्यालय इतिहास भूगोल नागरिक शास्त्र आदि के तथ्यावहित ज्ञान संचयन, संचयन तथा सम्पुष्टिकरण सामाजिक प्रतिवेपों का उचित उपयोग करने के लिए हैं।

पुराने ढंग के चलनेवाले विद्यालयों में उनकी अपनी अनेक समस्याओं के साथ राष्ट्रव्यापी समस्या अनुशासनहीनता को आ गई है। हम कहेंगे कि समझदार (केवल बुद्धिमान और पंडित शिक्षक नहीं, केवल त्यागी और तपस्वी शिक्षक नहीं) और लगनगाल शिक्षक व नेतृत्व में यदि सामाजिक प्रतिबन्धों का उचित उपयोग किया जाय तो पान और रस की बट्टी व माय-ही-माय अनुशासन की समस्या भी दूर हो जायगी। ऐसा है महत्व इन सामाजिक प्रतिबन्धों का।

रह गई बान नई तालीम का। ता इसमें ता स्पष्ट ही है कि समाज की हरक हलचल हमारे शिक्षा की माध्यम हैं। अतः नई तालीम में तो इनका विशेष महत्व है और सामाजिक प्रतिबन्धों द्वारा शिक्षा ग्रहण करने के लिए विभिन्न प्रकार की कला, रचनाशक्ति, प्रतिभा, कल्पना तथा मुरचि, समझदारी, लगनगालता, त्याग और पाठित्य की आवश्यकता है और इनका है महत्वपूर्ण स्थान नई तालीम में इन सामाजिक प्रतिबन्धों का।

२—समाज में पर्वों का स्थान

उनके उदय होने के कारण, उनका प्रभाव

यत्र निर्जीव होते हैं परन्तु उन यत्रा की सतह पर काम करनेवाले अगु भी अनवरत काम करने के कारण थक जाते हैं और उन्हें विग्राम की आवश्यकता होती है। उनके सुचारु रूप से संचालन के लिए समय-समय पर स्निग्ध पत्राया का प्रयोग भी किया जाता है। यही अवस्था जीवित यत्र वाले प्राणा तथा प्राणियों में वननवायु समाज की भी है। ता जिन्होंने पर्व और त्याहार हम मानते हैं वे सभी प्रकृति और समाज की ध्वनि का दूर करते हैं उनमें नई भासा और नई उमर का संचार करते हैं तथा नए विचारों की प्रेरणा देते हैं। मनुष्य उन त्योहारों को मनाकर शिक्षा भी ग्रहण करता है और नए उत्साह के साथ जावन-सग्राम में जुड़ता है।

जीवन चक्र कुम्भकार के चक्र की तरह घूमता है परन्तु जब कुम्भकार के चक्र में गिरधिलता आने लगती है ता कुम्भकार अपने दण्ड प्रयोग से उसकी गति में तीव्रता ला देता है। उसी प्रकार जीवन चक्र जब शिथिल होने लगता है तो ये पर्व और त्याहार तथा जयन्तियाँ मनुष्य के जीवन में गति उत्पन्न करती हैं। मनुष्य अपनी भूला का सुधारता है और नया उल्लास नई चेतना तथा नई दृढ़ता के साथ आगे बढ़ता है।

किस मालूम नही कि सीता के उज्ज्वल चरित्र ने कितना का सती बनाया राणा और गिवा के चरित्रों ने देश पर सहायता होने की प्रेरणा पुरकी और किने नही मालूम है कि बालक गांधी राजा हरिश्चन्द्र के नाटक को देखकर ही सत्यव्रती और आग चलकर महात्मा हो गया।

अंगरज कवि लॉगफेला ने अपनी कविता 'शाम आफ लाईफ' (Psalm of life) में सत्य ही लिखा है कि बड़े आदमियों के जीवन चरित्र हम स्वयं बड़े बनने की प्रेरणा देते हैं जिससे जाग चलकर समय-समय पर हम स्वयं अपना पदचिह्न छोड़ जायें जा पीछे आनवालों के लिए मार्ग प्रदर्शन का काम कर उनका पथ प्रगस्त करता रहें।

पर्वों के उदय-निन्द के कार.

वास्तव देखकर मोर नाचते हैं। मोरों के लिए वादल का आना आनन्द का पव है। मनुष्य का प्रकृति के साथ तात्कालिक सम्बन्ध है तो प्रकृति के उल्लासमय वातावरण का प्रभाव मनुष्य पर पड़ता है। दीपक पर पतंग प्राण न्याछाकर बरता है और इसका कारण पतंग नहीं बतला सकता। मीठी गंधों से सती हुई वायु जीव को बहोश करती है। यदि जीव बेहोश न हो तो यह उसकी कमी समझी जायगी या उनका भीतर के पुष्प का जा चतन रूप है उस पर अधिक अधिकार माना जायगा जो अप्राकृतिक है। तो इस प्रकार बहुत-से पव समय तथा प्रकृति का दन का रूप में आते हैं। साथ ही मनुष्य स्वभाव से वीर पूना पमन्द करता है। मनुष्य अपने से बड़ी शक्ति के सामने झुक जाता है। तो हम किसी भाषण में आगे बढ़े हुए मनुष्य की जयतियाँ मनाते हैं। उनके काया की याद में उनके विप काया का विधियाँ मनाते हैं और साथ ही उनकी पुण्य नियमों मनाते हैं और इस कारण भी पर्वों का उदय होता है।

एक भी अवसर आते हैं कि मनुष्य का कायसतुन जीवन कुछ विनाश पाता है और उस समय हम आनन्द की छात्र में चला है जिसमें उनके उद्वेग, हृदय की अशांति, मस्तिष्क की विविधता तथा शरीर की शकामट दूर हो सक। तो हम उस प्रकार के भी त्योहार मनाते हैं। काई घटना घटनी है और जिस घटना का प्रभाव मनुष्य का ऊपर या समाज के ऊपर सुगमपव होता है तो उन घटना की विधि भी हम पव की तरह मनाते हैं।

मनुष्य का यह स्वभाव है, या जीवमान का यह स्वभाव है कि वे सुखकर यस्तु का बार-बार स्मरणना चाहते हैं। तो इस कारण भी हम पव त्याहारों का मनाना चाहते हैं।

हमारे यहाँ इतने कारण पवों को मनाया जाता था किन्तु अब इनका मनाने की दूसरी परम्पराएँ भी बन पड़ी हैं। भारतीय परम्परा का अनुसार सुगम नियमों की स्मृति ताजी रखते हैं और दुःख याता को भूल जान का प्रयत्न करते हैं। हम अपने जीवन में पराजय की कल्पना नहीं करना करना सुग और समृद्धि का सपना रगत है और इस कारण पव त्याहारों और जयनियों का मनाते हैं। परन्तु परिचय में एक विचार आया कि जीवन में केवल सुग ही सुग नहीं है दुःख भी है। और दुःख का अपना अनग महत्व

है। और उसमें कभी-कभी इतना प्रभाव उत्पन्न होता है, जीवन के मुद्धार में इतना बल मिलता है जितना सुख नहीं कर सकता। किंतु यह पश्चिम की देन है। हमारे यहाँ हमारे शास्त्रकारों ने इसकी मान्यता नहीं दी है। किन्तु आज पश्चिम और पूरव की दीवारें टूट रही हैं। एक दूसरे के रीति रिवाज एक दूसरे पर प्रभाव डाल रहे हैं। इसलिए हमने उन पर्वों को भी मनाना शुरू कर दिया है जिनका अन्त दुःखान्त होता है जस नेताओं की पुण्य तिथियाँ। उनसे हम प्रेरणा ग्रहण करते हैं शिक्षा ग्रहण करते हैं और ग्रहण करते हैं सत्य पर शहादत होने की शक्ति और साथ ही ग्रहण करते हैं उन परिस्थितियों से शिक्षा जिन कारणों से इन पुण्य तिथियों का अवसर उपस्थित हुआ। इस तरह हमें देखा कि पर्व-त्योहारों की उत्पत्ति प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनतिक कारणों से होती है।

अब यह गया इन पर्वों के मनाने का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है ? भारत बहुत पुराना देश है और यदि यह कहें कि ससार का सबसे पुराना देश है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इसी कारण यहाँ मनाए जानेवाले पर्व भी अति प्राचीन हैं। प्राचीनता में मिश्रण अनिवार्य और स्वाभाविक है। हमारे पर्व-त्योहारों में मिश्रण हुआ है। और यह भी स्वाभाविक है कि मिश्रण बुराई की ओर जाता है भलाई की ओर नहीं और कालक्रम में अच्छाईया का नाश होता है बुराईया का कम नाश होता है। इन्हीं प्राकृतिक नियमों के कारण हमारे पर्व-त्योहारों में बहुत मिश्रण हुआ है और समाज पर उसका कुप्रभाव भी पड़ा है। दृष्टान्तस्वरूप हम हाली के पर्वों का ही ले सकते हैं। उसमें इतना मिश्रण हुआ है कि उसका उच्च लक्ष्य आज समाप्तप्राय हो रहा है।

परन्तु पर्व-त्योहारों के मनाने में मनुष्य शिक्षा ग्रहण करता है तथा प्रेरणा प्राप्त करता है असा हमने ऊपर लिखा है और समाज पर सुन्दर अमर पड़ता है। और इन्हीं सुन्दर प्रभावों के कारण समाज में पर्व-त्योहारों का महत्त्व है। जिस समाज में जितने ही पर्व और त्योहार रहते हैं वह समाज उतना ही जागरूक और सचेत माना जाता है। भारतवर्ष के विनाश देण होने और विभिन्न प्रकार की शक्तियों की शीघ्रस्थली तथा अपनी प्राचीनता के कारण यहाँ पर्व-त्योहारों की बहुलता है। शिक्षण-संस्थाओं में इन पर्व-त्योहारों तथा तिथियों में से सुन्दर अवसरों का चयन करने चाहिए और उन्हें उपयुक्त ढंग से छेड़ें मनाना चाहिए।

३-संस्थाओं में पर्व किस प्रकार मनाना चाहिए ?

उनसे किस प्रकार मनुष्य के बाह्य, हृदय तथा मस्तिष्क का
विश्राम किया जा सकता है ?

सत्र के प्रारम्भ म वष म घटनेवाले पर्व की तालिका निश्चित कर लेनी चाहिए । वह तालिका सबविदित हो । पर्व उपस्थित होने के तीन दिन पहले ही विद्यार्थ्य के परिवार की एक बैठक होनी चाहिए और बैठक म पर्व मनाने की योजना प्रस्तुत कर लनी चाहिए । साथ ही एक बात और कर लेनी चाहिए कि पर्व के सम्बन्ध की जिननी भी अधिक पुस्तकें प्राप्त हूँ उन्हें शिक्षक और छात्र मिलकर सग्रहीत करें । अध्ययन तथा चिन्तन गभीरता के साथ होना चाहिए । अध्ययन तथा चिन्तन का नाट तैयार कर लेना चाहिए और नोटों का जाघार पर बरिना, निबन्ध आदि प्रस्तुत करने की योजना बना लेनी चाहिए । कार्यों का बंटवारा कर लेना चाहिए और जिग पर जिम काम का -सहदायित्व है उस मुबाररूपेण पूरा करें । शिक्षक मह्याग तथा माग प्रदर्शन करें । अध्ययन करनेवाले प्रमा की तालिका भी तयार करा दें और विद्यार्थियों को नाट करवा दें । विद्यार्थियों द्वारा नोट की हुई सामग्रिया का संगोषण करें । बरिना, निबन्ध तथा प्रश्नन म स्वयं भाग लें ।

पर्व त्योहारा का मनाने म अथ की आवश्यकता पडती है । इस सम्बन्ध म सावधान रहना चाहिए । अथ सग्रह म भा सावधानी रहनी चाहिए और व्यय म तो पूरी सावधानी बरतनी चाहिए । अथ सग्रह आवश्यकतानुसार सहयोग पर हा और व्यय का पूरा विवरण पर्व समाप्ति के दूगरे दिन ही तथा गीष्ट हा मुना देना चाहिए । शिक्षक भी व्यय नियन्त्रण की बात पर पूरा ध्यान दें । पर्व जिग दिन मनाना जाग उन दिन सुबह म व्यक्तिगत और सामूहिक मफार्द विगेष ढम से करनी चाहिए । भजन और प्रभात-मेरी भी सुबह म हा जाए ता और अ-द्धा हा । वायुमण्डल सुगन्धित करने के लिए गंध धूप का भी प्रयोग करना चाहिए जिगत आत्मा तृप्त तथा मन गुड हा । पर्व मनाने म प्रामीणा का भा सह्याग एता आवश्यक है और उन्हें भी निमन्त्रित

करना चाहिए। इसके बाद जिस कारण पव की उपस्थिति हुई हो उन कारणों पर प्रकाश डालना चाहिए। भाषण, कविता निबंध, प्रहसन आदि के प्रदर्शन का प्रबंध होना चाहिए और पव मनाने के उपरान्त धन्यवाद पापन और प्रसाद विनय भी होना चाहिए। जिस दिन पव मनाया जाय उस दिन पव के अनुरूप ही असन और वसन का भी यथाशक्ति प्रबंध होना चाहिए। पव मनाना प्रारम्भ करते समय एक बात पर ध्यान देना चाहिए। जिस स्थान से इस पव की उत्पत्ति हुई उस स्थान का भौगोलिक ज्ञान भी देना चाहिए। भाषण कविता और प्रहसन आदि को उपस्थित करते समय मंच पर उस देश का मानचित्र भी रहना चाहिए। और समय समय पर मानचित्र का प्रयोग कर भौगोलिक ज्ञान भी उपलब्ध करना चाहिए।

पव, तिथि का ज्ञान करने के लिए तत्कालीन राजनतिक सामाजिक, तथा आर्थिक अवस्थाओं पर प्रकाश डालना चाहिए और उन अवस्थाओं के पक्ष में मूलभूत स्थिति की व्याख्या करनी चाहिए और पव द्वारा उन समय की ऐतिहासिक अवस्था पर किस प्रकार प्रभाव डाला गया उस पर भी विचार विनिमय कर लेना चाहिए। इस प्रकार ऐतिहासिक ज्ञान की भी उपलब्धि कर लनी चाहिए।

पव मनाने के बाद सिंहावलोकन करना चाहिए और पव की महत्ता के अनुसार आगे भी कुछ दिनांक तर्काएँ हानी चाहिए। सिंहावलोकन करते समय हमने किस प्रकार पव मनाया, आर्थिक संयोजन किस प्रकार किया गया, श्रुतियाँ क्या रह गयीं सफलताएँ हमने कहाँ तक प्राप्त कीं, श्रुतियों का निवारण किस प्रकार होना चाहिए, आदि बातों का भी निणय कर लेना चाहिए। जो भी हो शैक्षणिक तथा सुधार की दृष्टि से, छिद्रावेपण की दृष्टि से नहीं जो भी हास्य भावना तथा सोहाय्य के साथ प्रेम और मित्राण के साथ, सहयोग और आयोग के साथ, उसमें कटुता तथा तीक्ष्णता नहीं आनी चाहिए। चर्चाओं को ऐतद्बद्ध कर देना चाहिए। विद्यार्थियों से उन चीजों के सम्बन्ध में कतिपय प्रश्न पूछना चाहिए और प्रश्नोत्तर के उपरान्त ही उनके ग्रहण करने की शक्ति की जाँच करनी चाहिए। इस प्रकार तो ठीक उनका बौद्धिक विकास।

यह भी देयना चाहिए कि अमुक प्रकार से कितने प्रकार की जिम्माएँ प्राप्त होती हैं और उन जिम्माओं को विद्यार्थी कहाँ तक ग्रहण कर अपने जीवन में

उतारते हैं । विद्यार्थियों से प्रश्न द्वारा उन शिक्षाओं का निकालना चाहिए । उन्हें श्यामपट पर अंकित कर देना चाहिए और विद्यार्थी भी अपनी बहियों में नोट कर लें । शिक्षक भी उन शिक्षाओं का व्यवहार में ले आवें और उन्हें व्यवहार में ले आने का सुगम भाग उन विद्यार्थियों का बतला दें । समय सेवा और त्याग, का उस व्यक्ति न जिस व्यक्ति का पब मनाया गया अपने जीवन में किस प्रकार उतारा था और हम किस प्रकार उतार सकते हैं इस पर प्रकाश डालना चाहिए और सबके अंत में उन शिक्षाओं का जीवन में उतारने का संकल्प भी विद्यार्थी से लेना चाहिए । और इस प्रकार होगा उनके हृदय का विकास । शिक्षक भी ध्यानपूर्वक यह देखना रहे कि विद्यार्थी अपने संकल्पों पर कहीं तक दृढ़ है और समय-समय पर उन संकल्पों में बल प्रदान करना चड़े ।

समय और नियमों का पालन करेंगे । अरुण और अरुण पर नियंत्रण रखेंगे । व्यवहारों का संस्कार करेंगे । सफाई करेंगे । और इस प्रकार होगा हमारे चरित्र का सतृप्तित्त विकास ।

एक दिन के बाद एक सप्ताह तक (एक की महत्ता के अनुरूप कम दिनों तक या अधिक दिनों तक) इस पर चर्चाएँ चलाना चाहिए ।

अपनी शिक्षण संस्थाओं में हम पर्वों को मनाकर बाह्य, हृदय तथा मस्तिष्क का विकास कर सकते हैं तथा सुन्दर चरित्र का निर्माण कर सकते हैं ।

एक मनाने के लिए एक बात और यह है कि जिस दिन में हमने उद्योग प्रारम्भ किया उस दिन से लेकर -स दिन तक, जिस दिन हमने एक सम्प्रदाय में अन्तिम चर्चा की सभी गतिविधियाँ, सभी तथ्य तथा निष्कर्षों सभी चर्चाओं, सभी शिक्षाओं, सभी प्रश्नों पर, भाषण तथा एकाग्रता आदि का लेखन करने पुस्तक के रूप में साक्षर जिन्दगी देना चाहिए और उन स्कूल पुस्तकालय में सुरक्षित रखना चाहिए जिस समय-समय पर उनका विचार और मनन हो सके आगे बढ़ने के लिए जो पढ़ना सीढ़ी के रूप में काम दे सके और दूसरे रूप में उन पदों का मनाने के समय के विभिन्न प्रतियों सहायिका के रूप में मिश्रित हो । एक बात पर ध्यान देना चाहिए । हम पुस्तक में उन सभी व्यक्तियों को रचनाओं तथा कथाओं का बिना उनकी श्रुतियों पर ध्यान दिए स्थान देना चाहिए जिन्हें सोचना न उन पदों के आयोजन में भाग लिया हो । इसका नाम ही होगा हार्नि नहीं । सम्पादक जी टिप्पणी में उन

व्यक्तियों के प्रति भी कृतज्ञता पापन किया करें जिन लोगों ने आयोजन में भाग लिया, किन्तु अपनी रचनाओं तथा इच्छाओं का समर्पण नहीं किया । उन सभी व्यक्तियों का नाम और उल्लेख सघन्यवाद होना चाहिए । आर्थिक प्रतिबन्धन की पूरी रिपोर्ट भी उस पुस्तिका में सम्मिलित रहे और इसके बाद सम्पादक का स्वतन्त्र विचार हो और उस विचार में आलोचना तथा मार्ग-प्रदर्शन और सुधार का क्षेत्र सम्मिलित हो ।

समय समय पर जब स्कूल निराकरण हो तो निरीक्षक महोदय उन लिखित प्रतियों का अवलोकन करें, उन प्रतियों के द्वारा यह देखें कि यह स्कूल प्रगति कर रहा है तो किम मात्रा में और उस अपने निरीक्षण प्रतिवेदन में अंकित करें ।

४—पर्वों का विभाजन

सामाजिक उत्सव, राजनतिक उत्सव, सांस्कृतिक
तथा सांख्यिक उत्सव

विविधता हमारे यहाँ का भूषण है। हम अनेकता में एकता देखते हैं और अनेकता का बनाए रखने में ही महिष्णुता का विकास पाते हैं। जिन प्रकार हमारा समाज विविध है उसी प्रकार हमारा जीवन भी विविध है और उस जीवन का सबल प्रदान करनेवाला पर्व भी विविध है और उन पर्वों से विविध प्रकार की गिणायें ग्रहण कर हम अपना सत्वतोमुखी विकास करते हैं। प्राचीन काल में जो राजनतिक पर्व थे आज वे धार्मिक या सामाजिक पर्व हो गए हैं। और आज के युग में अनेक प्रकार के राजनतिक पर्वों का कारण अनेक राजनतिक पर्वों का उत्थान हो रहा है। ऋतु का विभिन्नता के कारण हमारे समाज में अनेक प्रकार के ऋतु सम्बन्धी पर्व भी आ गए हैं और उन सभी पर्वों का अपना सांख्यिक महत्त्व है। वे मना मिलजुल कर मनुष्य का पूजातापी भाव लक्षित हैं। पर्वों का मना में हम अपने दैनिक जीवन से कुछ हट जाते हैं और एक उत्सवमय वातावरण में पहुँच कर समाज के दुःख-दारिद्र्य से दूर हट जाते हैं और छोटी दर के लिए हम अपने भाँगे भून कर ब्रह्ममानव के समान पहुँचते हैं और फिर नए उत्साह और नई गिणाई के साथ अपने साथ में जुड़ते हैं। पर्वों का मना कर हम अपना सत्वतोमुखी विकास करते हैं और सा विद्या या विमुक्तये की उक्ति का सिद्ध करना चाहते हैं। राजनतिक सभामें मुख्य-मुख्य घटनाओं का निषिद्धा का हम पर्व के रूप में मनाते हैं तथा राजनतिक नेताओं की बयगाथा तथा पुष्प निषिद्धा का हम पर्व का रूप में मानते हैं और ये हैं हमारे राजनतिक पर्व।

त्रिज्यात्मक शीपावली तथा हानीवागीत तथा उन सभी धार्मिक नेताओं की जन्म निषिद्धा तथा पुष्प निषिद्धा का हम पर्व के रूप में मानते हैं जिन्होंने हमारे समाज में सामाजिक शान्ति का उत्पन्न कर समाज का आशा बढाया। जैसे महात्मा बुद्ध महावीर इत्यादि रामरूप परमेश्वर तथा स्वामी विवेकानन्द आदि का जन्म निषिद्धा तथा पुष्प निषिद्धा। इन्हें ही हम धार्मिक तथा सामाजिक पर्व स्वाहा कहते हैं। ऋतु परिवर्तन के अनुसार मकर

सकन्ति गगा दशहरा वमत पचमी आदि पर्वों का हम ऋतुजा के अनुसार मनाते हैं और उनसे गिना प्राप्त करते हैं। इन सभी को हम ऋतु सम्बन्धी या सांस्कृतिक पर्व कहते हैं।

पर्वों का विभाजन हम लिंगों तथा वर्णों के आधार पर भी कर सकते हैं। बहुत से ऐसे पर्व हैं जिन्हें महिलाएँ विशेष रूप से मनाती हैं और उसी प्रकार बहुत से पर्व हैं जिन्हें पुरुष विशेष रूप से मनाते हैं। उसी प्रकार जस तोज, भ्रातृ द्वितीया, राखी, छठवत जिवित्पुलिका आदि पर्वों को स्त्रियाँ विशेष रूप से मनाती हैं। उसी प्रकार विजयादशमी, नागपचमी आदि को पुरुष विशेष रूप से मानते हैं।

बहुत ऐसे पर्व होते हैं जिन्हें बालक का पर्व कहते हैं और बालक तथा विद्यार्थी उसे विशेष रूप से मनाते हैं जैसे वसत पचमी।

बहुत से ऐसे पर्व हैं जिन्हें कोई विशेष वर्ग विशेष रूप से मनाता है। जैसे दीपावली, श्रेष्ठिया का पर्व और इसी प्रकार श्रावणी ब्राह्मणों का, विजयादशमी क्षत्रियों का तथा होलिकावसत सूद्रा का पर्व है।

धर्मों के आधार पर भी कुछ पर्व कुछ धर्म के हैं और कुछ पर्व कुछ धर्म के हैं। जस इदुलफितर तथा मुहरम मुसलमानों के, विजयादशमी तथा दीपोत्सव हिन्दुओं तथा त्रिसमस ईसाइयों के।

स्थानीय तथा राष्ट्रीय आधार पर भी पर्वों का विभाजन हो सकता है। कुछ पर्वों को मनाने की सीमा सीमित है तथा कुछ पर्वों का मनाने की सीमा बृहद् है, जैसे छठ आदि पर्व बिहार के कतिपय स्थान पर मनाये जाते हैं तथा विजयादशमी सारे भारतवर्ष में मनायी जाती है। जब हम पर्व मानते हैं तो हमको इस बात पर दृष्टि रखनी चाहिए और विशेष रूप से सामाजिक तथा धार्मिक पर्वों में—कि कोई ऐसी बात न हो जिससे किसी की भी धार्मिक भावना पर चोट पहुँचे। हम उन पर्वों का भी मनावें जो सामाजिक तथा धार्मिक दृष्टि से भिन्न हों, और इस प्रकार सहिष्णुता का पाठ सखें। इन पर्वों की उत्तम बातों को बिना किसी पूर्वाग्रह के उचित मस्तिष्क से ग्रहण करें। कहने का तात्पर्य यह है कि विद्यालयों में हम पर्व त्योहारों को सम्यक भाव से सम्यक आचरण द्वारा सम्यक तथा शांति गिरा के लिए सम्यक ढंग से मनावें।

हमने ऊपर दिखाया है कि कितने प्रकार के पत्र हमारे यहाँ हैं और उन्हें किस प्रकार विद्यालय में मनाना चाहिए । अब आगे हम प्रत्येक प्रकार के पत्रों को लेंगे, पत्रों से सम्बद्ध विभिन्न बातों को बतलायेंगे और उस सम्बन्ध की अगर कोई विशेष बात होगी तो उस पर भी प्रकाश डालेंगे ।

पत्रों पर प्रकाश डालते समय हम सत्र के प्रारम्भ से लेकर सत्र के अन्त तक चलेंगे और बीच बीच में पढ़नेवाले पत्रों पर प्रकाश डालते चलेंगे । हमारा यही क्रम रहेगा जिसमें विद्यालय में पत्र मानने में सुविधा है ।



१—नव वर्ष

हमारे यहाँ सत्र प्राचीनकाल में श्रावण की सप्तमी से प्रारम्भ होता था और हम उसे श्रावणी पूजा कहते थे। विद्यार्थी गुरुकुल में आते थे और नाम लिखाते थे। गृहस्थों के सारे काम समाप्तप्राय हो जाते थे। इसलिए गृहस्थ भी गुरुकुल में चतुर्मास ध्यानात् करते थे और इस प्रकार अपनी भूली हुई विद्याओं का पुनः संस्कार करते थे। परन्तु अब स्कूल के सत्र उस दिन से प्रारम्भ नहीं होता और न चैत मास के गुक्ल पथ की प्रतिपदा से ही नया सत्र प्रारम्भ होता है जिस दिन पौराणिक ग्रन्थों के अनुसार सृष्टि का प्रारम्भ हुआ था। अब हम साल के नए दिन का अग्रजो महीना के अनुसार मनाते हैं और जनवरी के पहले दिन से सत्र का प्रारम्भ होता है और उसी दिन साल का पहला दिन होता है।

विधान —स्कूल का बन्दवार और पताकाआ से सजाना चाहिये। मुख्य द्वार पर केले का पड गाड़ कर मिट्टी में जन भर देना चाहिये। कुलपति का पूजा होनी चाहिये और मंगीत तथा वाच का आवाजन होना चाहिये। विशेष प्रकार का सुविकर तथा पौष्टिक भाजन करना चाहिये।

अंगरेजा पद्धति के अनुसार नववर्ष का प्रथम दिन जनवरी महीने की पहली तिथि का ही माना गया है। यद्यपि इस दिन राज्यस्तर पर सरकारी छुट्टी रहती है और प्रायः विद्यालय आदि बन्द रहते हैं। फिर भी आवासीय विद्यालयों के छात्र तथा छात्रावास के छात्र पहली तिथि का भी उत्सव मना सकते हैं। या तो विद्यालयादि २ जनवरी का प्रायः खुल जाते हैं और सभी लोग अपने-अपने काम पर जुट जाते हैं।

नववर्ष के दिन—नववर्ष सुखमय ध्यतीत हो। हमने लिए प्रत्येक छात्र को अपने साथियों के प्रति नववर्ष की शुभकामनाएँ प्रकट करनी चाहिए। उस दिन सबसे हृदय खानकर बानें करनी चाहिए। एक-दूसरे के प्रति मंगल-कामना का आवाजा रखनी चाहिए। किसी के हृदय पर बातचीत से या बटु व्यवहार से चोट नहीं पहुँचानी चाहिए। गुरुजना के प्रति श्रद्धा के साथ अभिवादन के हाथ उठाने चाहिए। उनमें भी छात्रों का आशीर्वाचन प्राप्त करना चाहिए। परिवार के बन्धों, माता पिता एवं अन्य बड़े लोगों के साथ मृदुल व्यवहार रखना चाहिए। इससे छात्रों की गिण्टता प्रकट होती है।

पुरानी मान्यताएँ—नववर्षोत्सव चाहे जिस रूप में, जिस तिथि को, जिस महीने में मनाया जाय, लेकिन सदा का एक ही उद्देश्य रहता है कि वर्ष का प्रथम दिन अगर आनन्द पूर्वक बीत गया, तो फिर वर्ष के सारे दिन आनन्द पूर्वक बीतेंगे। यही हमारे यहाँ की सस्कृति की परम्परागत मान्यताएँ रही हैं। अँगरेज लोग भी प्रायः इसी को मानते हैं। सचमुच वर्ष का प्रथम दिन बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। हम उससे ही महत्ता को ठुकरा नहीं सकते। हमारे पूर्वजों ने भी किसी-न-किसी रूप में इसकी मान्यता दी है। भले ही उसके विधान तथा मनाने के ढंग की प्रक्रिया विभिन्न ढंग की हों।

गिण्टको का अर्थ—विद्यालय के गिण्टको का भी अर्थ है कि वे अपने ढंग के छात्रों का नववर्षोत्सव के अवसर पर अपने विचारों से उन्हें अवगत कराएँ और उसकी विद्यालय प्रक्रियाओं को समझाएँ। जिसमें यह दिन छात्रों के दैनिक जीवन में एक प्रेरणा-स्रोत का काम करता रहे।

२३ जनवरी : सुभाष जयन्ती

भौगोलिक अवस्था—बिहार राज्य में मटे दक्षिण में उड़ीसा राज्य है। पहले बिहार और उड़ीसा दोनों प्रांत संयुक्त थे। उड़ीसा की राजधानी कटक है। कटक महानदी के तट पर बसा हुआ है। इस कटक गहर में रायबहादुर जानकी नाथ बास रहते थे। वही के पुत्र श्री सुभाष चंद्र बास थे, जिनका जन्म १८९७ ई० की २३ जनवरी का हुआ था।

राजनीतिक अवस्था—जिस समय सुभाष बाबू का जन्म हुआ था, उस समय देश पराधीनता की बन्धियों में जकड़ा हुआ था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म १८८५ ई० में हुआ था। देश में थोड़ी बहुत राजनीतिक चेतना आ रही थी।

जीवन वृत्त—बाल्यकाल से ही सुभाष विचित्र स्वभाव के थे। उनके पिता जानकी नाथ बास कटक की नगरपालिका तथा जिला परिषद के प्रधान एवं नगर के महावीर और गण्यमाय वकील भी थे। सुभाष बाबू की माता का नाम प्रभावती बस था। वह कट्टर धार्मिक विचारों में विश्वास रखने वाली सरल सहृदय स्वभाव की सीधी सादा महिला थी। सुभाष बाबू की पाँच बहनें और छह भाई और थे। इनमें से सभी भाइयों ने अपने-अपने क्षेत्र में ख्याति प्राप्त की। सुभाष का उनकी माँ 'मुन्वी' कहकर पुकारती थी।

प्रारम्भिक शिक्षा—सुभाष की प्रारम्भिक शिक्षा एवं यूरोपियन स्कूल में हुई। इस स्कूल के प्राटेस्टेंट बालावरण के बालक सुभाष के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ा। घम के नाम पर जो डाग और दिखावा चलता है उसमें सुभाष की आस्था कभी नहीं रही यद्यपि वह स्वयं प्रकृति से धार्मिक व्यक्ति थे। जीवन्मूर्त उन्होंने ब्रह्मचर्य का पालन किया। स्कूल में प्रथम क्रम में प्रवर्गिका परागता में उत्तीर्ण होकर वह बतकता पहुँचे। सन् १९१३ ई० में उन्होंने कलकत्ता के प्रेसीडेन्सी कॉलेज में नाम लिगाया। इस कॉलेज में उनकी पढ़ाई अधिकांश नहीं चला क्योंकि एनाएन उनका मन आध्यात्मिक वृत्तियाँ की ओर चला गया। उन्होंने सोचा कि वह भी स्वामी विवेकानन्द के समान आध्यात्मिक गति उपन्यास करने बिना एक चमत्कार प्रकृत

करेंगे। इन्हीं विचारों के भाव प्रवाह में डूबकर वह सालह-सालह वष की आयु में ही बिना किसी को सूचित किये हिमालय की ओर गुरु की साज में खन दिया। कहते हैं इस मौन-त्याग से उन्हें गुरु तो नहीं मिला किन्तु स्वामी त्रिविक्रम-द का सांनिध्य अवश्य प्राप्त हुआ, जिससे रामकृष्ण मिशन के बारे में कुछ ज्ञान उन्हें मिला।

एक महीने तक यमनार घूमने के बाद जब सवेर के दान न हुए और न बार्दे गुरु ही मिला, तब मुभाय त्रिविक्रम व्यविमूढ़ होकर अपने घर लाट आया। वे अपनी माँ के चरणों में पड़ गये। अविरल अश्रुधारा बहती हुई माँ ने वेष्ट का गन्तगावर कहा— सुन्नी! तू न तो मुझ मार ही जाना था।”

मुभाय दास पर जोर डाला गया कि वह इंग्लैंड जाकर आई० सी० एम० की परीक्षा पास कर आये। सभाय दास के न जाने पर भी यह करना पड़ा। अगस्त १९२० ई० में आपन आई० सी० एम० की परीक्षा में उत्तीर्ण हो गये। परीक्षा पास करने पर उन्होंने घर पर एक पत्र लिखा— तुम्हारे घर में एक परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया हूँ। परंतु मैं अफसर बनूँगा या नहीं, यह मैं नहीं कह सकता। मुझे लगता है कि मैं अपने देश और ब्रिटिश साम्राज्य दोनों की सेवा एक साथ नहीं कर सकता। शीघ्र ही मुझे एक दोना में से एक का चुनाव होगा। और सभाय ने सुसमय विलम्ब के जीवन का टुकड़ा कर देना-जेवा का बटिन मांग अपनाया और त्यागपत्र ब्रिटेन स्थित भारत सचिव के देकर भारत लौट आये। बम्बई आते ही आपन उसी गायकवाड़ (१६ जुलाई, १९२१ ई०) मणिमवल में महात्मा गांधी से मिले और लगभग एक घंटे तक उनसे राजनीति-वाचनीत की। बातलाप के दौरान में ही कुरक्षेत्र के कृष्ण के पुत्रारी मुभाय ने बापू से कहा था— असहयोग का मरी ममज में जाना है, एरिन यह अहिंसा क्या है।

अहिंसा के अर्थ पर ही गांधी जी से उनका महा-मनमें रहा। यह राजनीति में अहिंसा का बार्दे स्थान मानने के लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने दगावधु चित्तोजी दास को अपना राजनीति-गुरु बनाया। मुभाय ने प्रभाव-विशालकर गायकवाड़ न उह 'नगनन बापू' आपस-वसतता का प्रिनिपल बना लिया। यह यत्न राज के आवरणता है कि यह बापू उन विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए तैयार गया था जिन्हें अमहपाग आ-पता में भाग लेने के कारण सरकारी शिक्षा-पदा में निवारित किया गया था।

सार्वजनिक जीवन में—सुभाष बाबू को सार्वजनिक आंदोलन में भाग लेने का पहला अवसर तब मिला जब २५ दिसम्बर, १९२१ ई० को प्रिन्स आफ वेल्स कलकत्ता आए। सार देश में एक स्वर से उनके स्वागत का विरोध किया गया था। कलकत्ते में इस विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व दाम बाबू और सुभाष बाबू ने किया। इस प्रदर्शन के अभियाग में सुभाष बाबू को छ महीने की कद की सजा मिली। यह आपकी प्रथम जेल-यात्रा थी।

३३ वर्ष की उम्र में सुभाष बाबू कलकत्ता के मेयर और सन १९३८ ई० में कांग्रेस के अध्यक्ष चुन गये। पुन १९३९ ई० में महात्मा गांधी के विरोध के बावजूद वे कांग्रेस के अध्यक्ष चुन गये। परंतु कुछ समय के बाद कांग्रेस के सिद्धांत में मतभेद हो जाने के कारण जापान कांग्रेस छोड़कर नया दल 'फारवर्ड ब्लाक' की स्थापना की।

आजाद हिंद फौज और सुभाषचंद्र बोस—भारतीय सुरक्षा अधिनियम के अनुसार जुलाई १९४० ई० में सुभाष बाबू को गिरफ्तार करके कारावास में बन्द कर दिया गया। परंतु वहाँ अस्वस्थ हो जाने के कारण बाद में उन्हें घर पर गजरबंद रखा गया। २६ जनवरी १९४१ ई० का नेताजी एक अनाखे डग से वहाँ से निकल पड़े और विभिन्न देशों में उत्तरी भारत अफगानिस्तान, रूस तथा जर्मनी का भ्रमण करते रहे। जुलाई १९४३ ई० में उन्होंने दक्षिण-पूर्वी एशिया में साठ हजार भारतीय सैनिकों से संगठित आजाद हिंद फौज के नेतृत्व का भार अपने हाथों में लिया जिसका संगठन भी रास बिहारी बोस ने मितम्बर, १९४१ में किया था। यह फौज रास बिहारी बोस का भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति के सहायताय में थी। इसमें वे सैनिक थे जिन्हें जापानियों ने अंग्रेजों को हराकर बंदी बना लिया था। सना मंचालन के अनुभवी न होने पर भी सुभाष बाबू ने अपने अपूर्व व्यक्तित्व संगठन-श्रमना तथा जोग पैदा करने वाले हृदय बेधी भाषणा के बल पर आजाद हिंद फौज को और भी प्रवीण बना डाला। इसका परिणाम यह हुआ कि आजाद हिंद फौज ने निणय तथा दृढ़ता के बलिदान-सन्धि युद्ध का भी सामना किया। बर्मा की लड़ाई में आजाद हिंद फौज ने सुभाष बाबू के नेतृत्व में अपनी वीरता का परिचय दिया और तत्पश्चात् कुछ समय के लिए यह सेना आगाम तक पहुँच गयी। इस फौज ने कुछ समय तक मणिपुर और ऐंगवपुर में कार्य किया। परंतु रमद अस्त्र-शस्त्र पराजित जापानियों की महायन्त्रा इत्यादि के अभाव के कारण आजाद हिंद फौज का मित्र राष्ट्रों के सामने अपनी हार कबूल करनी पड़ी।

कुछ लोगो वा कथा है कि जापान के आत्म-समर्पण (१४ अगस्त, १९४५ ई०) के कुछ समय उपरान्त ही हांगकांग के पास हवाई-दुर्घटना के कारण सुभाष बाबू की मृत्यु हो गयी ।

प्रश्न

- (१) सुभाष बाबू का जन्म कब और किस परिस्थिति में हुआ ?
- (२) सुभाष बाबू ने कहाँ तक शिक्षा पाई थी ?
- (३) उन्होंने योग्य जो सरकार को नौकरी क्यों न की ?
- (४) सुभाष बाबू सावजनिक जीवन में कब आए ?
- (५) गांधी जी से उनका मतभेद किस लिए हुआ ?
- (६) सुभाष बाबू ने देश की स्वतन्त्रता के लिए क्या किया ?
- (७) सुभाष बाबू के कार्यों से क्या शिक्षा मिलती है ?
- (८) नेताजी के जीवन पर संक्षिप्त प्रकारा शालिस ।



२६ जनवरी

भारत में ब्रिटिश राज्य की काली काली घटाए छा चुकी थी। स्वतंत्रता की मांग थी। सन्धियों की गुलामी का बंडिया जो वास्तव में १५ अगस्त, '४७ को टटी और भारत अंगरेजी शासन में मुक्त हुआ। लेकिन हम गणतंत्र दिवस २६ जनवरी को मनाते हैं। २६ जनवरी के पीछे वास्तव में भारतीय स्वतंत्रता का एक कर्ण इतिहास छिपा हुआ है। यह हमारा त्याग हमारे उत्सव, हमारी गहादत का सबेदनापूर्ण इतिहास है। उसका कारण जानने के लिए भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास पर एक दृष्टिपात करना होगा।

२६ जनवरी खुनी का दिन है। उस दिन बपों की तपस्या पूरी हुई। उस दिन करांडा की आशाएं पूरी हुईं। सन्धिया के बाद भारत की सारी जमीनें बंट गईं। जिस दिन के लिए हजारों भारतीय हसते-हसते फासी के तख्ते पर शूल गए, बंदा का मांग खाई परंतु उफ तक नहीं की, जिस दिन की प्रतीक्षा में लाखों जेल में सड़ गए, वही दिन है २६ जनवरी।

भारतीय स्वतंत्रता के संग्राम का श्रीगणेश या ता १८५७ ई० से ही हो गया, पर कांग्रेस की स्थापना से भारत में महात्मा गांधी के नेतृत्व में अहिंसात्मक संग्राम फिर शुरू हो गया। शन गन देग में जागरण आया। सुपुष्ट जनता न फिर से जगडाई ली।

१८८५ ई० में जब कांग्रेस की स्थापना हुई उस समय यह एक सामाजिक संस्था मात्र थी। जब बंडवत्ता के कांग्रेस का २२वाँ अधिवेशन दादा भाई नौराजी की अध्यक्षता में हुआ तो उस संस्था में सर्वप्रथम राष्ट्रीयता की भावना आई और विदगी वस्तुओं का बहिष्कार प्रारम्भ हुआ। इस प्रकार कांग्रेस में राजनीति का प्रवेश हुआ और यह राजनीतिक संस्था बन गई। धीरे धीरे इसने प्रगति की और औपनिवेशिक स्वराज्य की मांग की। यह मांग १९०० ई० तक चरनी रही।

१९२८ ई० में कांग्रेस का महत्वपूर्ण अधिवेशन एडिन बोतीलान नेहरू की अध्यक्षता में बंडवत्ता में हुआ। उस अधिवेशन में इस प्रश्न पर विचार किया गया कि मजदूरीय कांग्रेस द्वारा प्रस्तुत नेहरू रिपोर्ट के अनुसार औपनिवेशिक स्वराज्य का अथवा पूर्ण स्वाधीनता का ध्येय बनाया जाए।

श्री सुभाषचन्द्र बोस तथा पंडित जवाहरलाल नेहरू आदि नवयुवक नेता पूर्ण स्वाधीनता के पक्ष में थे। लेकिन कांग्रेस के वयोवृद्ध नेतागण औपनिवेशिक स्वराज्य तक ही अपनी मांग सीमित रखना चाहते थे। अन्त में महात्मा गांधी ने दोनों दलों में समझौता कराया और मवसम्मति से औपनिवेशिक स्वराज्य की मांग की अवधि ३१ दिसम्बर १९२९ तक रची गई।

इस घोषणा से भरडारर रिटिंग सरकार ने १ नवम्बर १९२९ को घोषणा की कि भारत का औपनिवेशिक स्वराज्य देना अग्रजी धामन का लक्ष्य है। और एमने लिए भारतीय नेताओं का एक गालमज कांफेस (Round table Conference) आगामी अप्रैल तथा मई माह में हागा, लेकिन इस घोषणा से किसी का सतोप नहीं हुआ और लाहौर-कांफेस में रावी के पुनीत नट पर प० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में यह घोषणा प्रस्तावित की—

‘यदि रिटिंग सरकार औपनिवेशिक स्वराज्य देना चाहे तो ३१ दिसम्बर, १९२९ के १२ बजे रात तक अर्थात् १ली जनवरी १९३० में लागू होने को प्रथम घोषणा कर अन्यथा १ला जनवरी १९३० से हमारी मांग पूर्ण स्वाधीनता होगी।

इसी पूर्ण स्वाधीनता की मांग में समर्थन में २६ जनवरी १९२० का रविवार के दिन सारे भारत में राष्ट्रीय झंडे के नीचे जुलूम निवाराण गथा-सभाएँ की गयीं और प्रस्ताव पास करके प्रतिपादों की गयीं कि जब तक हम पूर्ण स्वाधीन न होंगे तब हमारा स्वतंत्रता-संग्राम चलता रहेगा। नाटियां, टण्डा, तापा, पिम्तीया और बर्दास में मजा हुई फौजों और पुलिस से घिरे रहने पर हममें प्रतिबन्ध इस स्वतंत्रता निवस का अपनी पूर्ण स्वतंत्रता का स्वरूप का दुहराने हुए मनाया और इस निवस का मनाने में अनेक सपूना न स्वतंत्रता की बेदा पर ईस-हमकर रक्त-क्षपण किया। और १९२० में प्रति बप हम २६ जावरी का राष्ट्रीय पक्ष के रूप में मनाने जा रहे हैं।

१४ अगस्त, १९४७ का जब रिटिंग ने सत्ता भारतीयों का हस्तांतरित की तब दंग की औपनिवेशिक स्वराज्य मिला। रिटिंग का राजा भारत का मर्याद बना रहा। रिटिंग २६ जनवरी, १९४० का भारत में पूर्ण स्वतंत्रता का घोषणा कर दा और गणतंत्र राज्य बन गया। रिटिंग के राज्य का भारत के साथ पुराना सम्बन्ध टूट गया। भारत का सर्वोच्च शासक राष्ट्रपति के नाम में पुकारा जान लगा और यह जनता द्वारा नवाचित विधायिका-गभा के सम्बन्ध

हम कितन सुख सपने लेकर इसको फट्टोते हैं ।
 इस झडे पर मर मिटन की कसम सभी खाते हैं ।
 हिन्दू देग का यह थडा घर घर में लहरायगा ।
 ऊचा मदा रहेगा ॥

—रामदयाल पाण्डय

इसके बाद कुछ नारे लगान चाहिए । पुन किसान यकिन द्वारा हम झडे का इतिहास और इस २६ जनवरी का इतिहास दुहराना चाहिए । अन्त में राष्ट्र गान (जन-गण मन) के साथ सभा विघटित करनी चाहिए ।

राष्ट्र-गान

जन गण मन अधिनायक जय हे
 भारत भाग्य विधाता ।

कामरूप, पजाब मराठा द्राविड उत्कल बंग ।
 विन्ध्य, हिमाचल यमुना गंगा उच्छल जलधि तरंग ।

तव शुभ नाम जागे
 तव धुम आगिप मगि
 गाए तव जय गाया
 जन गण मंगलदायक जय हे
 भारत भाग्य विधाता ।

जय हे जय हे, जय हे
 जय, जय, जय, जय हे
 भारत भाग्य विधाता ।

इन सभी कायकूमा के उपरान्त किसी जगह छाये में बंठकर कम-से-कम २ घंटे तक सूत्र-यण चलना चाहिए । फिर सूत्र-यण समाप्त होने पर भारतीय स्वतन्त्रता मशाम के इतिहास का सत्रा के समझ रखना चाहिए और तब छुट्टी हो जानी चाहिए ।

शाम के समय सूर्यास्त के बाद अद्ध चन्द्रानार अवस्था में सावधानी के साथ झडे होकर झडे का नीचे उतारेंगे । झडा उतारने के पूव झडा नमस्कार गान गाना चाहिये । सभी का अपने-संर को ढके रहना चाहिये ।

अन्त में जन मन गन के साथ झडे को सम्मान पूजा लपट कर रख देना चाहिये ।

गिज्ञायें—उस दिन हमलोग अपनी पुरानी प्रतिभाओं को दुहराते हैं। स्वतंत्रता का मदा मगदा बनाने की प्रतिभा करने हैं। देश के लिए मभी चीजा का उत्तम करने के लिए तैयार रहते हैं। महापुरुषों के चरित्रों से प्रेरणा ग्रहण कर अपने का भी उसी तरह बनाने की चपटा करते हैं। इस अवसर पर हमारे देश के स्वतंत्रता-संग्राम का भी तुलनात्मक अध्ययन होना चाहिए। हिंसक और अहिंसक संग्राम का भी विवेचन होना चाहिए। अहिंसक ढंग के संग्राम की विशेषताओं पर भी प्रकाश डालना चाहिए।

प्रश्न

- १ २६ जनवरी का भारतीय इतिहास में क्या महत्व है ?
- २ २६ जनवरी का क्या इतिहास है ?
- ३ कंडू को किस प्रकार और कैसे पहराना चाहिए ?
- ४ इस दिवस को मनाने की पूव तैयारी कैसे करोगे ?
- ५ राष्ट्र-ध्वज पहराने का नियम क्या है ?



२८ जनवरी

लाला लाजपत राय जयन्ती

पूर्व तयारी —जयन्ती के दो दिन पूव ही इसकी सूचना सभी छात्रा एव शिक्षका को दे दी जायगी। जयन्ती के दिन मफाई होगी। छात्र एव शिक्षक निकट के गाव म जाकर सफाई करेंगे। आज सूत्र-यज्ञ या कोई उत्पादक काय कुछ विशेष तौर पर होगा। वर्गों के वर्गाध्यापक लालाजी के बारे म कुछ बात बानें बतलायेंगे। अन्त म सभी की एक सम्मिलित गाष्ठी हांगो। छात्र इसम निबन्ध पढेंगे प्रहमन प्रस्तुत करेंगे। उनके सस्मरण कह्य और कविताए पढेंगे। मिक्खा के इतिहास पर भी प्रकाश डाला जायगा। लालाजी के जीवन स सम्बद्ध उस समय देश की राजनीतिक घटनाओं पर भी यत्र तत्र प्रकाश डाला जायगा। अततोगत्वा प्रधानजी का भाषण होगा और बाद म गाष्ठी विघटित कर दी जायगी।

जन्म स्थान का परिचय —लालाजी का जन्म पंजाब म हुआ था। पंजाब देश क उत्तर पश्चिम के काण पर है। पंजाब पाच नदिया स बना है। ये नदियाँ रावी, झेलम गतलज व्यास जीर चनाव है। इही नदिया के पाँच पानी के कारण इनका नाम पंच + आब = पंजाब पडा। यहाँ वर्षा अत्यन्त कम हाती है। किन्तु इन नदियो क मदान म गहू बहुत पदा हाता है। पंजाब के लोग का मुख्य भोजन गहू हा है। यहाँ के लोग बड ही हृष्ट-मुष्ट और बलवान होने हैं। यहाँ के निवासिया के अधिकाधिका मिक्ख धर्मावलम्बी हैं। आजकल पंजाब के दा हिस्स हो गए हैं। पूर्वी पंजाब और पश्चिमी पंजाब। पूर्वी पंजाब भारत म है और पश्चिमी पंजाब पाकिस्तान म। पूर्वी पंजाब की राजधाना चडीगढ है। पंजाब में अमृतसर में सिक्खा का स्वर्ण मंदिर बहुत ही विख्यात है। पंजाब में ऊन और बसीन्गराड़ी का काम बहुत अधिब होता है।

देश की राजनीतिक हालत —देश परतन्त्रता के सिक्खा में जकडा था और स्वतन्त्रता सिर धुन धुन कर रा रहा थी। देश का जर्जा-जर्जा गुलामी की दुहाई दे रहा था। सबत्र स्वतन्त्रता की माँग थी। सारा देश अंग्रेजा के शासन में चसत रहा था। कोई उसे त्राण देने वाला न था। गोरे मनमाने

ढग स शासन कर रहे थे। चारी और अत्याचार का ही बोलबाला था।
 १ हिन्दुस्तानियों की कही पूछ न थी। लोग कहते भी ता सुनता कौन ? बड़े-
 बड़े लोग, राय बहादुर और सर की पदवी ले फूल रहे थे। एमी असहाय-
 वस्था में देश के ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता महसूस हुई जा इन दुष्टियों के
 दुवडा को सुने और उन्हें सुगति का समाग दिखलावे जिस पर चलने से
 देश परतप्रता को बढिया मन रह कर उमुक्त वातावरण स स्वतंत्र रूप से
 विचरण करे। ऐसे ही समय में लाला लाजपत राय का इस भूमि पर पना-
 पण हुआ।

जीवन वृत्त —लालाजी का जन्म २८ जनवरी, १८६५ ई० में ननिहाल
 में किरोजपुर जिले के ढोटिग्राम में हुआ था। उनके पिता का नाम राधा-
 कृष्ण था। उनके पिता एक सरकारी नौकर थे।

६ वय की अवस्था में लालाजी ने स्कूल का प्रथम दर्शन किया। १८८०
 ई० में उन्होंने इट्रेंस की परीक्षा पास की। बाद में उन्हें छात्र वृत्ति मिलने
 लगी और लाहौर में आकर गवर्नमेंट कालेज में एफ० ए० में अपना नाम
 लिखवाया। यही पर उन्होंने एफ० ए० की परीक्षा पास की। पिताजी की
 राय स उन्होंने मुस्तारी की परीक्षा भी दी। उसमें भी ब सफल हुए।

लालाजी में सामाजिक सेवा करने की बड़ी तीव्र प्रवृत्ति थी। इस साव-
 धनिक सेवा की ओर प्रवृत्त करने वाला में महर्षि दयानन्द का सबसे बडा
 हाथ था। इहा से प्रभावित हाकर उन्होंने आय समाज को ग्रहण किया और
 उसी स उनके हृदय में धाय हुए समाज-सेवा की बीज अनुरित, पल्लवित
 और पुष्पित हुए।

एफ० ए० की परीक्षा के बाद उन्होंने बकालत की परीक्षा दी किन्तु अथ
 पस हा गए। अत अपने गाँव जगराँव में मुस्तारी करने लगे। दूसरे वय
 भी पस कर गया अन्त में १८८५ ई० में बकालत की परीक्षा पास की। १८-
 ८६ ई० में उन्होंने हियार म बकालत शुरू कर दी। बकालत म इहें पूरा सफ-
 लता मिली। वे एक प्रसिद्ध वकील हो गए। य झूठ जालसाजी के मुकदमों
 को नहा लेत थ।

स्वामी दयानन्द की मृत्यु के बाद १८८६ ई० में लाहौर में इहोंने दया-
 नन्द एगो बैरिटर (डो० ए० भी०) कालेज की स्थापना की।

सन १८८८ ई० के काँग्रेस-अधिवेशन में, जो इनाहावाद-में हुआ था, लालाजी पहली बार सम्मिलित हुए थे। उसमें इन्होंने कौंसिला को बढ़ाये जाने के प्रस्ताव का समर्थन किया था और कहा था कि कौंसिला में लोग की आवाज हानी चाहिये। अब लालाजी लोकप्रिय नवयुवक नेता बन-गए। १९०५ ई० के बनारस में हुए काँग्रेस अधिवेशन में लालाजी एक प्रमुख वक्ता और राष्ट्रवादी के रूप में आए। १९०६ ई० में गोखले के साथ के शिष्ट मंडल में विलायत गए। वहा से लौटने पर लोग न कहा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए आत्म निर्भरता अत्यन्त आवश्यक है। १९०६ ७ ई० में उन्होंने किसानों की दंगा की कड़ी जालाचना पजाब सरकार से की। फलस्वरूप उन्हें देश निर्वासन का दण्ड मुगतना पडा।

इहा दिनों गांधी जी द्वारा चलाए गए अफीका के सत्याग्रह के लिए गोखले के साथ बहुत-सा धन इकट्ठा किया। अत १९१४ ई० तक अमरिका में उन्हें निर्वासित जीवन बिताना पडा। १९१७ ई० में 'तमण भारत' (Young India) नामक पुस्तक भी लिखी जिह भारत सरकार ने जब्त कर लिया परन्तु अमेरीका और इंग्लण्ड में इस पुस्तक की बड़ी प्रसिद्धि हुई। बाद में उन्होंने 'England's debt to India' नाम की पुस्तक लिखी। १९२० ई० में उन्हें काँग्रेस विधेय अधिवेशन का सभापति चुना गया। उसमें असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव रखा गया और पजाब में इसे कार्यान्वित करने का कार्यक्रम निर्धारित किया गया। इस अधिवेशन में लालाजी ने कहा था 'We desire to turn our faces away from Govt House and turn to the huts of the people' १९०१ ई० में बलकत्ता में हुए हिंदू महासभा व अधिवेशन का सभापति निर्वाचित हुए थे। ये पक्के राष्ट्रवादी थे। दश के काम में व कभी भी पीछे नहा रहे। सन् १९२८ ई० में माइमन कमीशन साहीर पहुँचा तो लालाजी ने विधेय प्रदर्शन का नेतृत्व किया। इसमें एक गोर सजेंट न इन पर लाठी प्रहार किया और इसी लाठी प्रहार से उनकी मृत्यु १७ नवम्बर, १९२८ ई० के ६॥ बजे सुबह में हो गई।

लालाजी को पजाब बेसरी कहा जाता था। व बहुत ही ओजस्वा और गर्विले भाषण दत थे। लालाजी पर जिस दिन लाठी प्रहार हुआ था उस दिन उन्होंने बड़ी जागीली बकृता दी थी और कहा था मर गरीर की लगी हुई एकता की घाट ब्रिटिश साम्राज्य के गवाघार के लिए एक एक कीन और कफन का एक एक घागा होगा।" साहीर से प्रकाशित "होन वाली दैनिक" पत्रिका

‘वन्दे मातरम्’ में उन्होंने अपने विषय इस प्रकार प्रकट किए ‘मेरा मजहब
हक परस्ती, मेरी मिल्लत वीम परस्ती, मेरी अदालत मेरा अन्त वरण
मेरी जायदाद, मेरी वतन’
लालाजी के सम्बन्ध में एक कवि ने अपने विषय इस प्रकार प्रकट
किए थे—

मरद महान मज्यवान म भो मानवान
रखना हमसा ही जा भाव महामानी का
पानीन्त्या अपार पर गुमान सवलन न था—
गान की निराली था नमूना जिन्दगानी का
लाजपत रखता था लाजपत वारा की
करता हमगा कानी' दसाभिमानी का—
हाय! हाय!। छुट गया दिनही दहाटे वह
लासा पाँच पानी का मरद एक पानी का ।

निशाएँ —नाहमी और त्रिजेर बनना चाहिये । बोलन की वता सोमनी
चाहिये । दण व लिल यन्नि प्राणा की वती देनी पडे ता पीछ मुन नही
माडना चाहिये । विगी भी काश में पीछे नही रहना चाहिये । सार कामा
की अच्छी तरह पूरा करना चाहिये । यदि विगी काम का सोप दना चाहिये
तो जग अपना समझ कर करना चाहिये । सांजनिव नेवा सण करनी
चाहिये ।

प्रश्न

१. लालाजी के समय में देश की राजनीतिक अवस्था का वर्णन करो ?
२. लालाजी का जीवन कृत प्रामुख करो ।
३. साहजन कमीशन के बारे में क्या जानते हो ?
४. दह दिवसतिर भारत में धारा या धौर क्या यह सफल हुआ ?
५. लालाजी के जीवन से कौन-कौन सी शिक्षाएँ प्राप्त कर सकते हैं ?

३० जनवरी—गाँधी पुण्य-तिथि

भौगोलिक अवस्था—महात्मा गाँधी का जन्म गुजरात के पोरबन्दर नामक स्थान में हुआ था। गुजरात के तीन तरफ समुद्र लहराता है और इसके एक ओर जमीन है। गाँधी जी के जन्म स्थान से कुछ ही दूरी पर समुद्र है। यहाँ कोई अधिक मात्रा में वर्षा नहीं होती। साथ ही किसी और चीज की भी अधिक पैदावार नहीं है। वहाँ की मुख्य पैदावार ज्वार और अरहर है।

राजनीतिक अवस्था—जिस समय गाँधी जी का जन्म हुआ था उस समय देश में आजादी की लहर फल चुकी थी। उस आजादी की लड़ाई में देश के बड़े-बड़े नेता सम्मिलित थे। देश में क्रांतियाँ हो रही थी लड़ाई हो रही थी। हिन्दू मुसलमान और काले गोरे, ऊच-नीच और बड़े छोटे का प्रश्न था। इस समय देश को एक ऐसे व्यक्ति की अत्यन्त आवश्यकता थी जो इन सभी भेदों को एक कर सत्य-अहिंसा का मार्ग अपना कर देश को इन झगड़ों से और गुलामी से मुक्ति दिलाए। सागा के मन में यह धारणा बन गई थी कि देश को एक ऐसे ही व्यक्ति की जरूरत है। महात्मा बुद्ध के मरे हुए २५०० वर्ष से अधिक हो गए थे। उनके सत्य और अहिंसा की शिक्षा जो उपनिषद् काल से प्रारम्भ हो पुनः बुद्ध के समय में अधिक हो गई थी, इस समय धीमी पड़ गई थी और भारत ही नहीं बल्कि विश्व के सारे देश पथ-भ्रष्ट हो, ईर्ष्या-द्वेष की अग्नि में जल रहे थे। ऐसे ही अवसर पर १९०५ ई० में दण्ड भंग हुआ और देश में हिंसा और घृणा की लहर फैल गई। शासक भी अधर्म और शोषण तथा विग्रह विभाजन तथा कुशासन की नीति का पालन कर रहे थे और शासित भी हिंसा, घृणा, अराजकता और अज्ञान के मार्ग पर चल करके विपश्य विपमोपधम् के सिद्धान्त की पूर्ति कर रहे थे। भगवान् श्री कृष्ण की ओजस्वी वाणी 'यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत' तिरोहित-सी हो रही थी। उसी समय महात्मा गाँधी का पदार्पण भारतीय रंगमंच पर हुआ। उन्होंने यह बतलाना प्रारम्भ किया कि धैर्य का नाश प्रेम से होता है और हिंसा का नाश अहिंसा से होता है।

जीवन घुत्त—विश्व के इस दय विभूति ने २ अक्टूबर, १८६९ ई० के गुजरात के काठियावाड़ के पोरबन्दर नामक स्थान में वैश्य परिवार के अंगन

में विश्व का प्रथम दर्शन किया। पोरबंदर का वह छोटा-सा घर चमक उठा। सारा परिवार कृष्य-कृत्य हाँ उठा। इनके पिताजी का नाम बर्मबंद गांधी और माता का नाम पुनली बाई था। इनके पिताजी राजकोट रियामत के दीवान थे। बचपन में ही साथ हरिद्वार नाटक देखने से इनपर हरिद्वार के गुणों का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा और वे उसी समय से परम सत्यवादी बन गए। १८८७ ई० में इन्होंने प्रवर्तिका परीक्षा पास की। इंग्लैंड में इन्होंने 'इंटरटुल से व रिस्टर्री पाम की और अपने देश में इसका अभ्यास शुरू किया। वे बड़े ही नजानु स्वभाव के थे। उन वैरिस्ट्री में वे सफल न हो सके। उन दिनों प्रवारेण से व रिस्टर्री बनते रहे। चन्दा देना व पचावान् उन्हें पोरबंदर की एक व्यापारी संस्था 'अदुल्हा एण्ड कम्पनी' के एक नये मुकदमें में अक्रिया जाना पड़ा। दण्डिणी अक्रिया में गोरा के अत्याचार में भारतीय पीड़ित थे। भारतीयों पर डाँ अत्याचारों को लेकर उनका दिल दहल उठा। उन्होंने वहाँ का बटु अनुभव प्राप्त किया। और वहाँ के भारतीयों को जगान का सुदृढ़ भक्त्प किया। वहाँ पर उन्होंने मचप्रथम अहिंसात्मक मत्याग्रह रूपी समोध सम्मेलन का दान किया और उसका प्रमाण राजनीतिक क्षेत्र में मायूहिक रूप से करना प्रारम्भ किया और वे इसका स्वर कूट पड़े राजनीति की भयंकर मयप-ज्याला में। १८९२ ई० व १९११ ई० तक वे प्रमासी भारतीयों के लिए युद्ध करते रहे। १९१४ ई० में वे भारत लौट आए और यहाँ के निवासियों का नये जायरण का सदन सुनाया। अहिंसावाद में इन्होंने एक मायुरमना आधम की स्थापना की। कम्पारण में निगाना की रक्षा के लिए निलहे गारा के अत्याचारों के विरुद्ध मत्वे हुजार विना। इसमें इन्हें जागतगत और अभूतपूर्व सफलता मिली। मन् १९०१, १९३०, १९४०, १९४२ के आन्दोलनों का नतून गांधी जी न किया। अनन्त बार इन्होंने जेल के गिरजों को साहा। उन में इन्हें अपार कष्टों का शलाका पड़ा। साठिया की मार पड़ी। विन्तु इन्होंने अपना मार्ग नहीं छोड़ा अपने क्षत पर अदल रहे।

रगतप्रका प्राति के बाद देश में सम्प्रदायिकता की प्रवृत्त ज्वाला मन्च उठी। इसका मत्तमा का के नित में बड़ा साट पहुँचा। उन्होंने देश के विभिन्न भागों में दर्शन कर उम भभवता ज्वाला का दान करने की चेष्टा की। विन्तु भारत के इस दग्गीष्ममान मन्त्र का, ३० जनवरी, १९६८ को सम्प्रा ममम ५ बन्दर ४७ मिनट पर विदना भवन के निरुद्ध प्राराला-मना में एक पय भट्ट नापूराम गारम ने सम्प्रदायिक उन्माद में आकर हृया कर

सदा के लिए बुझा दिया। समुज्ज्वलें चंद्र अस्त हो गया जिसकी, दुग्ध धवल, शीतल चाँदनी में सारा भारत विश्राम करने जा रहा था।' ठीक-ही कहा गया है—

'ले डूबता है एक पापी नाव को मँवधार में।'

उसने भारत के सार सुख सपना को जो सदिया के बाद साकार होने जा रह थ, मिट्टी में मिला दिया। गाँधी जी की इस नृपस हत्या पर सारा विश्व रा पडा और जाग जानेवाला युग ३० जनवरी को अथु मुक्ताआ के रम में अर्जल प्रान वर सदिया तक पाप प्राच्छालन करता रहेगा।

गाँधी जी के नष्ट हाने से केवल भारत को ही नही बरन सारे विश्व को गहरी क्षति हुई। य एक तपे-तपाय नता थे। मक्षधार में पडी भारत की डूबती उतराती नया के ये शेषया थे। य उन्नतमना थ। य अपने सिद्धान्त के बडे पक्के थे। इनके राम रोम से सादगी टपस्नी थी। जन सेवा करना ही इनके जीवन का सफल व्रत था। उनका आंदोलन सदा सत्य और अहिंसा पर आधारित था, जो भारत की अमहाय और निरीह जनता के लिए एक सफल और सबल रास्ता चलती हुई नाव की पाल की तरह था जो उह निर्दिष्ट दिगा की ओर ल चलता था। ये जनता-जनादन के स्वरूप थे। ये साधन और साध्य दोनों की पवित्रता पर ध्यान देते थे। य सत्य अहिंसा के प्रतीक थे। महात्मा गाँधी युग युग तक बन्दनीय, पूजनीय, अर्चनीय रहगे।

पूर्व तयारी —गाँधीजी की पुष्य तिथि के एक दिन पूर्ण ही छात्रा और शिक्षक की एक समिलित गोष्ठी होनी चाहिय। इसमें ३० तारीख के होने वाल कार्याक्रमा को बनावर सत्रा के बीच प्रचारित कर देना चाहिये।

प्रात काल प्रभात फेरी होनी चाहिये। पुनश्च सफाई का कायकम रपना चाहिय। पुन सुबह से शाम तक दारी-बारी स १० ध्यक्तिया की लगानार वताई चलनी चाहिय। शाम को एक गोष्ठी हा। उगमें छात्र, गिणक तथा समीपवर्ती ग्रामीण भी मिम्मिनित हा। उसमें गाँधीजी के वार में सभी अपन अपने विषय ररें। कुछ कविना पाठ हो, प्रहमन हो और निबध आदि भी पडे जाएँ। जितने निबंध प्रहमन आदि पडे जाए उन सबों को लखवद्ध की पुस्तक का रूप दना चाहिय और पुस्तकालय में रग देना चाहिये। ३० जनवरी के तीन दिन पूर्ण से ही अन्न, वस्तु का सग्रह करना चाहिय और ३० जनवरी को उन सबों को अमहाय जनता के बीच वितरित

कर देना चाहिये । उसके बाद विद्यालय के प्रधानजी का भाषण हो और उसका उपरान्त छट्टी हो जाए ।

शिक्षार्थे — अपने सिद्धान्त पर अटल रहकर अर्पण भोक्ति गरीबों के बलिदान करने की शक्ति । महात्मा गांधी द्वारा प्रयाग की गई सत्य अहिंसा के प्रयाग की शिक्षा इन शिक्षकों व अलावे हमने यह सीखा की घृणा से घृणा का नाश नहीं होता । घृणा का नाश प्रेम से होता है । बहुजन हिताय से सर्वाजन हिताय की बात हमने सीखी । इसका उपरान्त गांधीजी के जीवन के अर्थ पहचानने का भी दिया । उनका प्रयागो न गिना ग्रहण की ।

प्रश्न

- १ गांधीजी का जन्म के पूरा देश की राजनीतिक अवस्था क्या थी ?
- २ गांधीजी का जीवन कृत को संक्षेप में प्रस्तुत करो ।
- ३ गांधीजी साम्प्रदायिकता को क्यों मिटाना चाहते थे और इसके लिए उन्होंने क्या किया ?
- ४ गांधीजी की मृत्यु क्यों और कब हुई ? निम्न की ?
- ५ गांधीजी के दो रचनात्मक कार्यों पर प्रकाश डालो ।
- ६ उनके जीवन से क्या शिक्षाएँ मिलती हैं ?

२ फरवरी : मोतीलाल नेहरू पुण्य-तिथि

जन्म-स्थान की भौगोलिक अवस्था—प० मोतीलाल नेहरू का जन्म इलाहाबाद में हुआ था। यह उत्तर प्रदेश में है। इसके समीप ही गंगा नदी बहती है। यहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती (लुप्त) आदि नदियाँ मिलती हैं। इसीलिए यह एक तीर्थस्थान है और सभी तीर्थों से बड़ा है। इसे तीर्थराज कहते हैं। यहाँ का कुम्भ मेला बड़ा प्रसिद्ध है। यहाँ साधारण वर्षा भी होती है। यहाँ की मुख्य पदावार गन्ना गेहूँ और चावल है। यहाँ पर शीगा, बसीदाफारी इत्यादि का काम हाता है। यहाँ एक युनिवर्सिटी तथा उत्तर प्रदेश का हाईकोर्ट है। यहाँ गर्मी विशेष पड़ती है।

तत्कालीन राजनीतिक अवस्था—जिस समय पंडितजी का जन्म हुआ था भारत में अंगरेजी राज्य का पूरा विस्तार हुआ चुका था। भारत गुलामी के गिक्के में अच्छी तरह फस गया था। देश के बड़े-बड़े नेता स्वतंत्रता की सड़ाई में भाग ल रहे थे। किन्तु अंगरेजी का कूनीति के कारण उनमें कोई अच्छा संगठन न हुआ सका। जत कही भी कात्ति हो तो अंगरेजी द्वारा दबा दी जाती थी। इस अंगरेजी राज्य के काले बादल के घटाटोप अधकार में पंडितजी का उदय हुआ।

आधुनिक भारत के निर्माताओं में पंडित मोतीलाल नेहरू का नाम अग्रणी है। इन्होंने देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया। य हमारे देश के महान् पुराणों में से एक थे।

सक्षिप्त जीवन बृत्त—पंडित मोतीलाल नेहरू का जन्म ६ मद्र १८६१ में हुआ था। इनके पिता का नाम गंगाधर था। य तीन भाई थे। मोतीलाल जी सबसे छोटे थे। पिता के दो-तीन महीने मरने के उपरांत इनकी पत्नीइस हुई। य एक अनाथ बालक थे। जहाँ पहुँच जाते मवा का ध्यान उनका ओर आकर्षित हो जाता। उनका दख्खर लोग ऐसा पहा बरत थे कि बड़ा होने पर यह देश का जरूर कुछ-ने कुछ होगा। सबमुच के कुछ हुए और इस तरह कुछ हुए कि सारी दुनिया उन्हें दख्खर दातो तथे अंगुली दबा लेती थी। सबमुच में 'मोती' मोती थे। क्या नहीं, बहा भी ता गया है—

'होनहार विरवान के हान चिबन पान।

ये बचपन से ही बड़े साहसी, निरह और दिलेर थे। पंडितजी इलाहाबाद में बकालत करते थे। इनकी बकालत सब चली हुई थी। प्रारम्भ में ये अंगरेजों के समर्थक थे, किंतु जलियाँवाला बाग के दिल दहलानवाले हत्या-बाण्ड से अंगरेजों से इनका मन उचट गया और वे भारतीय स्वतंत्रता सश्रम की भक्तनी ज्वाला में बूढ़ पड़े। अब वे देश के और कांग्रेस के कणधार हो गये। ये कई बार जन गए और वहाँ की बठोर यातायात का सहन भी किया। देश-धु चितरजन दास के साथ मिलकर इन्होंने स्वराज्य पार्टी की स्थापना की। देश-धु दाम की मृत्यु के बाद स्वराज्य पार्टी की अध्यक्षता इनके हाथ में आई और वे उसे अच्छी तरह निभाय। साइमन कमीशन का बहिष्कार भी इन्हीं के नेतृत्व में हुआ। सबदल सम्मेलन के वे अध्यक्ष भी चुन गए थे। उनकी रिपाट पत्र करते हुए इन्होंने औपनिवेशिक स्वराज्य की माँग की थी और उनसे इन प्रस्ताव का सबन समर्थन भी किया था। १९२८ ई० में बलकला अधिवेशन में इन्होंने कांग्रेस का अध्यक्ष-पद सुभाषित किया था और औपनिवेशिक स्वराज्य का माँग की रिपाट ही नेहरू-रिपाट पुकारी जाने लगी।

आज पंडित माधोलाल जी का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। ये स्वराज्य की माँग के सबल समर्थक म म एक थे। पंडित माधोलाल जी एक अच्छे विद्वान् भी थे। यही कारण है कि देश के उन गिन दण मकना म थे।

पुत्र तयारी—पुत्र्य नियम के एक दिन पहले ही छात्रा और गिरावा की एक सम्मिलित बैठक हानी चाहिए। इसमें अलग-अलग विचारों का प्रकटन पर विचार विमर्श हाना चाहिए। पुत्र मवा का कार्यक्रम मुता दना चाहिए।

दूसरे दिन सुबह में मपाई का विचार कायकम हाना चाहिए। इस दिन कम-कम एक घण्टा मूत्र-यज्ञ हाना चाहिए। इसमें उपरांत मवा को बुना कर एक मवा हानी चाहिए। इसमें तब बिनक हा। सभी अपन-अपन विचार प्रकट करें। मवा और बयिताई पड़ा जायें। प्रहान किए जायें। उन सभी मवा, बयिताई और प्रहाना को लगावट कर पुत्रक का रूप द दना चाहिए और पुत्रकालमें मृगित रम दना चाहिए।

गिराई—मवा के लिए रसाग करना निर्भय और निरह बनना मिर बनना और बिसा भी काम का अच्छा तरह निमान की गिरा प्रहान करनी चाहिए।

- १ मोतीलाल के समय की राजनीतिक हालत क्या थी ?
- २ मोतीलाल के जीवनवृत्त की एक छोटी-सी भाकी प्रस्तुत करो ।
- ३ उनके जीवन से क्या सीखते हैं ?
- ४ नेहरू रिपोर्ट से क्या समझते हैं ?
- ५ स्वराज्य पार्टी से क्या समझते हैं ?
- ६ औपनिवेशिक स्वराज्य और पूरा स्वराज्य में क्या अन्तर है ?
- ७ १९२८-३० का कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन किन बातों के लिए प्रसिद्ध है ?
- यदि यह कहा जाय कि जवाहर नवाहर नहीं बनते यदि मोतीलाल इनके लिए
भाग न प्रस्तुत किया होता । तो कहा तक सच है इसे सिद्ध करो ।
- ८ गांधीजी के अमहयोग आन्दोलन में मोतीलाल की क्या भूमिका थी ?

११ फरवरी—श्री जमनालाल बजाज पुण्य-तिथि

जन्मस्थान का भौगोलिक परिचय—श्रीयुग सठ जमनालाल बजाज का जन्म जयपुर राज्य के कागीरावाक नामक स्थान में हुआ था। वह गाँव मरु-भूमि में है। यहाँ जल की निम्नलिखित कमी है। चारों ओर बसल बालू ही बालू नजर आते हैं। वर्षा नहीं ही होता। यहाँ का मुख्य जानवर ऊँट है। कोई साम चीज की पैदावार नहीं है।

सठ जमनालाल जी का भवाग्राम में स्थायी निवास था। यह पहाड़ी इलाका है। यहाँ साधारण वर्षा हा जाया करती है। यहाँ की मुख्य फसल ज्वार और बाजरा है।

जन्मकाल का ऐतिहासिक परिचय—जिस समय सठ जी का जन्म हुआ था देश में अंगरेजी राज्य था। देश के लोग स्वतंत्रता की लड़ाई में हाथ बँटा रहे थे। उस समय देश में बड़े-बड़े नेता थे। उन नेताओं के नेतृत्व में भारतीय स्वतंत्रता का कायम कराने की चेष्टा करते किन्तु अंगरेजों की ताकत के सामने उनकी एक न चलती। उस समय में जमनालाल जी का जन्म हुआ।

जोवन वृत्त—सठ जी का जन्म जयपुर राज्य के मीकर ठिकाना में कागी-बावाक नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम बनीराम बजाज और माता का नाम विरपीबाई था।

य बचपन में बड़े गरीब थे। कौन जानता था कि एक दिन यही जमनालाल देश का सबसे बड़ा स्वाधीन महापुरुष होगा। किन्तु गूढ़ही में भी लाल दिये हुए हैं। गाँव के सभी के मुँह से अनायास निकल पड़ता लड़का भाग्यवान् है। एक दिन जहर तरकीब करेगा।' सचमुच में मज्जी न एगी तरफता की कि उनका नाम सुनते ही सभी दाँत तल उँगली दबा लते हैं।

य वर्षा के श्यापारी था स्वच्छराज जी के दत्तक पुत्र थे। बात यह थी कि स्वच्छराज का एक ही लड़का था। किन्तु वह जवानों में ही मर गया। स्वच्छराज जी को मालूम हुआ कि बनाराम जी का लड़का पैदा हुआ है। उन्होंने लड़के का नाम लने का इरादा किया। यह सुनते ही बनाराम जी ने अपने एक भाई गजान को स्वच्छराज जी के हवाल कर दिया।

सेठजी ने महात्मा गांधी को अपना घम पिता बनाया था। इन्होंने महात्मा गांधी जी के जीवन भर का खर्च चलाया। इन्होंने वर्धा में गांधीजी के रहने का आश्रम बना दिया और एक विद्यालय बनवाया। वही विद्यालय आज सेवानाम के नाम से प्रसिद्ध है। इन्होंने देश के लिए अपनी सारी सम्पत्ति लगा दी। यही कारण है कि इनकी गिनती देश के बड़े-बड़े नताआ में की जाती है।

सेठजी की मृत्यु ११ फरवरी, १९४२ ई० में कलकत्ते में हुई। उनके निधन से जा स्थान खिलत हुआ है पुन उमकी पूति नही हुई। सेठजी का निधन राष्ट्र की एक महान क्षति है और देश की उम बुरी परिस्थितियों में उनका उठ जाना ठीक उसी प्रकार से था जिस प्रकार से किसी पुरान रोजी पर भयकर जाघान। महान व्यक्ति हिमालय के उच्च शिखरों की भानि होते हैं। सचमुच जमना लालजी हिमानय के ही तरह थे। जिस प्रकार हिमालय पर सहस्रों विपत्तियाँ आई और उसको उसन सहन किया उमी प्रकार सेठजी के जीवन में एसी भयकर भयकर भीषण यातनाएँ आई हैं कि जिहे सुनकर रोमाच हो जाते हैं। व जाग से खेलना जानत थे। और यही त्याग और तपस्या का फल था कि वे देश के एक बहुत बड़े नता हुए।

पूर्व तयारी —पुण्य तिथि के दिन पूर्ण ही छाना और शिष्यता की एक सम्मिलित सभा में अगले दिन के कार्यक्रम की सूचना प्रचारित कर दी चाहिये।

पुण्य तिथि व तिन विशेष ढग पर सफाई होनी चाहिये। इस दिन गरीबों की विनाय भलाई करनी चाहिये। सूत्र-यन का समय जय दिना से विनाय होना चाहिये। फिर नभी छात्रा और शिष्यता की एक सम्मिलित गाष्ठी हागी। इसमें निवाध और वनिताएँ आदि पढे जायेंगे, उनर सस्मरण पढे जा सजत हैं। गभी अपन अपने निपय प्रवट करें। तक वितक के द्वारा ज्ञानाजन करें और उन सभी निवाधा, वनिताजा आदि को लखवद्ध कर पुस्तक का रूप दे देना चाहिये। उसे पुस्तकानय में सुरभिन रख देना चाहिये जिसमे आगे तिन काम दे।

निशाएँ —देश के निग त्याग करने और उत्तमग हान की निशा लनी चाहिये। उनके जीवन से सवायुत की गिना प्राप्त हाती है। कठिनाईया का सामना करना और हमते हँसते खेलना। किसी भी काम का उत्तर-दायि-वपूर्ण ढग से निभाना। गरीबों की तन-मन धन से सेवा करना।

प्रश्न

- १ सठजी के जन्म-स्थान का भौगोलिक और जन्म समय का ऐतिहासिक परिचय दो।
 - २ सठजी के जीवन की एक छोटी-सी फिल-मिल काँकी प्रस्तुत करो।
 - ३ सठजी दत्तक पुत्र किसके थे और क्यों थे ?
 - ४ उनका मृत्यु क्यों कब और कैसे हुए ?
 - ५ उनके जीवन से तुम क्या-क्या सीखते हो ?
-

१२ फरवरी—सर्वोदय दिवस

पूर्व तयारी —सर्वोदय दिवस मनान की सूचना दो दिन पूर्व से ही घोषित कर दी जायगी। सर्वोदय दिवस के दिन प्रातः काल प्रभातफेरी करेंगे। फिर निकटस्थ गाँव में जाकर ग्रामीणों के साथ सफाई करेंगे और वहाँ से सौजन्य पर साफ सुथरा होकर विद्यालय आयेंगे। आज सूत्र यत्र विशेष रूप से दा घटा किया जायगा। इसके लिए सूतो स कपडा तयार कर गरीबों में वितरित कर लिया जायगा। फिर उस दिन लोग गाँबीजी के नाम पर एक गुडी सूत देकर उनके प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करेंगे। उन सूता से कपडा तयार कर गरीबों में वितरित कर दिया जायगा। फिर एक गोष्ठी हागो जिममें लाग सर्वोदय की इतिवनि एव उसकी रूप रखा प्रस्तुत करेंगे। भाषण देंगे और तब वितक भी करेंगे। अन्त में इन सभी भाषण आदि को संकलित कर देंगे और उस प्रधानाध्यापक के कम में रख देंगे।

सर्वोदय क्या है ? —जिम प्रकार विद्वत् में अधिनायकवाद साम्यवाद, जनतंत्रवाद और गांधीवाद इत्यादि अनेकानेकवाद हैं उसी प्रकार सर्वोदय भी एक वाद है। इन सभी वादों में सर्वोदय का स्थान मूलाधार है। साम्यवाद में हिंसात्मक भावना होता है। अतः साम्यवाद में पशुता का समावेश है। हिंसा से प्राप्त वस्तु ग्रहणीय नहीं। हिंसा में दानवता है मानवता नहीं। सर्वोदय की अट्टालिका सत्य, अहिंसा प्रेम, शान्ति और सदभावना, विश्व-बंधुत्व तथा वसुधैव कुटुम्बकम् की भाव पर आधारित होती है, निमित्त होती है। बापू भारत में सर्वोदय सामाजिक स्थापना करना चाहते थे। सर्वोदय का शाब्दिक अर्थ है सबका उदय। ता जिसमें सभी का विकास हो और सबका उदय हो वही है सर्वोदय समाज ऐसा समाज जिसमें एकांगी उन्नति नहीं हो परन्तु सार्वभौमिकी विकास हो सबकी उन्नति हो और सभी सुखी हो।

इंग्लैंड के एक प्रसिद्ध दार्शनिक केंथम का यह सिद्धान्त था कि सरकार का इस बात पर सदय ध्यान देना चाहिये कि किसी भी समाज में अधिक से अधिक व्यक्ति सुखी रहें। बापू ने सोचा कि जिन समाज में अधिक से अधिक लोग सुखी रहेंगे उस समाज में भले ही कम ही सही किन्तु कुछ लोग

अवश्य ही दुखी रहने। गांधीजी ने इस सिद्धान्त को अस्वीकार किया। किन्तु इसी सिद्धांत पर आधारित उन्होंने अपना सिद्धान्त बनाया और उसका नाम रखा सर्वोदय। समाज एक वन जिसमें न ता कोई दुखी रहे और न कोई अधिक सुखी वरन् न कोई दलित रह न कोई शापित, सभी समान रह।

सर्वोदय से सर्व मंगल की भावना है। इसमें एक-के उदय की बात नहा, वरन् सबके उदय की भावना सम्मिलित है। वस्तुतः समग्र मानव-जाति के अभ्युदय का नाम ही है सर्वोदय। अर्थात् उपनिषदा में एक उद्घाप है— 'सर्वे भवन्तु मुक्तिं। वम उसी का रूपान्तर है सर्वोदय'।

गांधीजी के विचारों पर महात्मा रस्किन के विचारों की विशेष छाप पड़ी। रस्किन की एक पुस्तक है 'अट्ट दि लास्ट (un to the last) इसी के आधार पर सर्वोदय की रूप रेखा गांधीजी ने तैयार की। उन्होंने समाज के हर एक पीड़ित, दलित और शोषित व्यक्तियों में उत्थान की मंगल कामना की। शकिवर पत न कहा है कि

जग पीडित है अनि दुःख स
जग पीडित है अनि सुख से,

अत —

"मानव जग में बँट जावें,
सुख-दुःख आ दुःख-सुख में।"

सर्वोदय समाज में विष-व-शुद्ध की भावना सम्मिलित है और है समुच्च कुटुम्बिकम् व उच्च विचार। समस्त विष व मभी प्राणिया व लिए सब दय का द्वार सदा खुला हुआ है। वदा में भी बहा गया है—

"सर्वे भवन्तु मुक्तिं सर्वे भवन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मां कश्चित् दुःखभाग् भवन्तु"।

अथ हम इस सिद्धान्त का व्यवहार में क्या सा करने हैं? बापू ने हमारा ध्या समाज में दलित, पीड़ित और शापित गरीबों की ओर आकर्षित किया। उन्होंने कहा कि उन्हीं व्यक्तियों को कटिनाईया को दूर करने व लिए हम 'पहल' कोणा करनी है।

एक सिद्धान्त को अच्छी तरह समझने व लिए हम एक परिवार को ही उदाहरण स्वरूप ले लें। परिवार में जो सबसे बड़ा होता है वही परिवार का 'मुक्तिदा' होता है। उन्हीं के विचार और हमारे पर हमारे परिवार का काय संचालन होना है। यदि मुक्तिदा परिवार के छोड़ों की फिर छोड़ दे अगर

उनकी कद्र करना छोड़ दे तो छोटे नष्ट हो जायेंगे । और परिवार संचालन का सिलसिला बिगड़ जायगा । अतः परिवार सुचारु रूपेण तभी चल सकता है जब कि मुखिया परिवार के सभी सदस्यों पर एक दृष्टि रखे । इसी विषय को लेकर वापू न हरिजना व उत्थान की आवाज उठाई ।

सर्वोदय सिद्धान्त यह मानता है कि दुनियाँ के सभी लोग एक हैं । धर्म, जाति पाति एवं धनी-गरीब के सारे भाव विचार कृत्रिम हैं । हम सभी एक दूसरे की सेवा करें हम सभी एक दूसरे का उद्धार करें यही है सर्वोदय का ज्ञान ।

हम अपने जीवन में एकांगी उन्नति कदापि नहीं कर सकते । यदि हम उन्नति करना है तो समाज के सभी व्यक्तियों को साथ ले चलना पड़ेगा । सुख दुःख, मिलन विच्छेदन हँसी-नाम सब एक दूसरे की सहायता करें तभी हमारी वास्तविक उन्नति होगी । यह तभी सम्भव हो सकता है जब हम सर्वोदय सिद्धान्त को ग्रहण करें, अपनावें ।

इसमें सवा की उन्नति की विराट कल्पना है । शासक और शासित, शोषक और शोषित के भेद भाव को दूर रख कर सवा का नतिक स्तर ऊँचा करना ही इसकी मात्र सिद्धि है । मानव को बधना से उमुक्त कर उस स्वतंत्र मनाना ही सर्वोदय का परम लक्ष्य है ।

इस प्रकार सर्वोदय में विश्व-कल्याण की भावना सन्निहित है । सर्वोदय समाज में हमारी कु ठित भावनाओं का निराकरण हो सकता है । सत्याचरण के द्वारा ही हम सर्वोदय समाज में सुख-समता का सौरभ फला सकते हैं । प्रेम-दया और सहृदयता की त्रिवेणी प्रवाहित कर सकते हैं । विश्व-बधुत्व से ही सर्वोदय समाज के कलेवर की वृद्धि हो सकती है ।

देवरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद के समापतित्व में इन्दौर के सर्वोदय सम्मेलन में सब प्रथम सर्वोदय की रूप रेखा प्रस्तुत की गई । समाज शोषण का उन्मूलन करना ही इसका अन्तिम और महान उद्देश्य है । इसी इन्दौर सम्मेलन में सभी को सर्वांगीण, सबतोमुखी प्रगति का स्वर्णवसर प्रदान किया गया । साम्प्रदायिकता, अस्पृश्यता निवारण, जातिभेद-उन्मूलन ग्रामोद्योग प्रसार, ग्राम-सफाई समाज गिराव, नारी-मुक्ति, मजदूर-संगठन इत्यादि बातों पर विशेष जोर दिया गया । सर्वोदय मेला लगाने का भी आयोजन किया गया । यह मेला गाँधीजी की निधन तिथि के दिन लगाने का निश्चित किया गया । सर्वोदय समाज के संचालन हेतु १२ सदस्यों की एक समिति भी है ।

इस सिद्धांत को अपनाने के लिए हमें अपने अन्तर का महान् बनाना होगा। अन्तर तभी महान् हो सकता है जब प्रेम, सहानुभूति, दया, क्षमा, सत्य, अहिंसा और सहृदयता का अपनावें। तब तक हमारा अन्तर महान् नहीं होता, जबतक हम गरीबी, दलितता, पांडिता का छापी से नहीं लगा सकते उनमें गल-भंगल नही मिल सकत। विश्व के द्वन्द का अन्त सर्वोन्म से ही हो सकता है। यह सब का परम पुनीत कनव्य है कि व सर्वोदय मिद्धान्त का अंगीकृत करें और एका मदभावना, प्रेम और शान्ति का सन्त प्रसारित करें।

निष्ठाएँ — गरीबी की मवा करनी चाहिये। परस्पर क ईर्ष्या, द्वेष बन्हादि भावनाया का विन्मृत करके गन्-गन् मिलना चाहिये। शोषण का निराकरण करना चाहिये। सभी का एउ दृष्टि से दखना चाहिये। किसी का छाटा-बडा, धनी या गरीब नहीं मभगना चाहिये। सत्य, अहिंसा, प्रेम, सहानुभूति, दया, क्षमा सोहाद्र, सन्भावना का ग्रहण कर सोन-बन्धाण करना चाहिये। समाज निष्ठा का प्रचार करना चाहिये।

प्रश्न

१. सर्वोदय स क्या समझत हो ?
२. सर्वादिन दिवस मनान का एक रूप क्या प्रस्तुत करो ?
३. सर्वोदय शब्द कहाँ से आया ? इसका क्या है ?
४. सर्वोदय की रूप रत्ना कहाँ प्रस्तुत का गर था ?
इसका उद्देश्य क्या है ? इसका क्या विचार माने होते है ?
इसमें किन किन बातों पर विग्न गर दिया गया है ?
५. सर्वोदय समाज का स्थापना का आवश्यकता क्या कर करु करु ?
६. क्या सर्वादिन की स्थापना स निम्न-समाज का कल्याण सम्भव हो सकता है ?

१३ फरवरी—श्रीमती सरोजिनी नायडू

जन्म-दिवस

जन्म स्थान का भौगोलिक परिचय—सरोजिनी नायडू का जन्म हैदराबाद राज्य में हुआ था। यह एक पहाड़ी देश है। यहाँ पर गर्मी काफी पत्ती है। पानी की कुछ कमी होती है। किन्तु ताड़े के मानसून से कुछ वर्षा हो जाया करती है। इस राज्य में विभिन्न प्रकार के खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। यहाँ अनेक प्राचीन विशाल ऐतिहासिक मन्दिर हैं। जब यह राज्य आंध्र प्रदेश में मिला गया और कुछ भाग महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में मिला गया।

जन्मकाल का ऐतिहासिक परिचय—जिस समय नायडू का जन्म हुआ, भारत में अंगरेजों का शासन चल रहा था। एक मुत्तामी की जमीन में रूँधा था। लोगों को सभा कामों में बंधन लग् थे। नारियाँ का तो समाज में स्थान नहीं था। स्वतंत्रता की मांग थी किन्तु स्वतंत्रता मित्र भी तब तो। एक के नेता आगामी के लिए कुर्बानि हाँ रहें व। उस समय एक ऐसी लड़की का अभाव खटक रहा था जो समाज और देश में नारियाँ का स्थान ऊँचा कर सके। ऐसे ही समय में सरोजिनी नायडू का जन्म हुआ।

जीवन वृत्त—श्री नायडू का जन्म १३ फरवरी १८७८ ई० में हैदराबाद राज्य में अफसरनाथ चट्टोपाध्याय के घर में हुआ था। उन्हें कोई सन्तान नहीं थी अतः पिता मात्रक संतुष्टि मनाई।

नायडू का शिक्षा-जीवन अंगरेजों के हाँ में हुई था। किन्तु इन्होंने भारतीय विषयों में अधिक प्रयत्न किया। बाल्यावस्था में ही नायडू अंगरेजों में बर्तनाएँ करती थी। यह बच्ची प्रतिभाशालिनी थी। इनकी स्मरण शक्ति इतनी अधिक हो गई थी कि इनके पिता इनका बुद्धि पर आश्चर्य करते थे। कवि का हृदय उन्हें माना पिता के सम्बन्धों में मिला था। काव्य परिशीलन और उत्तम चिंतन, मनन के विनाश-वृत्त और विगुद्ध शान्तिपूर्ण में ही उनका जीवन गुजर गया। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए विनाशित गयी। यहाँ पर उनकी काव्य प्रतिभा फूल पत्ती। १८९८ ई० में वे भारत छोड़ी। यह एक महारानी महिनी थी। ब्राह्मण होने पर भी एक ब्राह्मण यमिनी का नाम सरोजिनी नायडू से विनाश कर इन्होंने जानि शक्ति की विगमनाओं का मिश्रण का कोशिश

की। अपने माहिय प्रेम तथा वाक्य प्रतिभा और मधुर वाणी के कारण ही यह 'भारत-वाकित्ता' का नाम से विख्यात है। श्रीमती नामदू का दृढ़ भारत की परतंत्रता दायकर और शारों के अत्याचारों का दायकर इतिहास हुआ गया। सन् १९१५ में राजनैतिक आशाओं में एक सफल वक्ता के रूप में यह उदित हुई और उस समय से इन्होंने दंग-सत्ता का अटल द्रव लिया जिसे आमरण निभाया। अनेक बार जेल की असह्य माननाम्ना का सहा। १९२९ में अफिरा गद्द और १९३१ में तीसरी गालमज सभा में महिला प्रतिनिधि के रूप में उन्होंने भाग लिया। नामदू का शारा जोरल रूप में यथा य वीला। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद इनका उत्तर प्रदेश का गवर्नर नियुक्त किया गया। गवर्नर रहते हुए उन्होंने दंग की बहुत तरा की और जगम अश्रुतपूष सफलता प्राप्त की। सराजिनी नामदू भारत का उन लताम्ना में ग था जिहान भारतीय स्वातन्त्र्य-आन्दोलन में महिला हाथ बंटाकर दंग का नामिदा का स्थान समाज में ऊँचा उठाकर शाय घोरागनाम्ना के जादवा के शौरव का उन्नत कर शारे समार का चमत्कृत कर लिया। २ मार्च, १९८० ई० में 'भारत वाकित्ता सराजिनी नामदू का स्वर्ण-नाम हुआ। उनकी अत्यन्त गम्भीर अदम्य माहम तथा महात्मा का कहानी युग युग तक जीवा-जाता रानी। उनका धरित्र नारिया के बीच में पूरुषीय वान्शीय जननीय रणा।

पूर्व सपाठी—निश्चित त्रिभि के एक दिन पूरा सारा का मूचित कर रना चारिण। जग दिवस के दिन अनुक्त कयनगुमार हा काय करना चाहिए। इन दिन गहिनामा की भनाद का शार अक्षित करला चाहिए। एत गना हानी। नाम पूरवत् ही काय त्रिप जाणय। मना में जेय कर्त्तिका यात्रि पड़ा जायेगी। उक्त सारा ग मप्रहित करर पुम्डागार बनाकर मुर्गीत रत दना चाहिए।

निष्कर्ष—जग के नारिया के त्रिण भनाई के काय की निष्ठा ग्रहण करनी चाहिए। जगिनी की का भाव का मिगन का निष्ठा ग्रहण करनी चाहिए।

प्रश्न

१. यह भारत-वाकित्ता क्या कहला जाती है ?
२. नामिनी का कथन का अर्थ क्या होता है ?
३. भारत का नामदू, म दंग नामदू की काय पर प्रभाव शाय।
४. दंग नामदू का नाम म दंग के निष्ठा का प्रतिकारिण जगिनी।
५. नामिनी का कथन का अर्थ, - इद म दंग नामदू का कहानी निष्ठा।
६. नामिनी का कथन का अर्थ, - इद म दंग नामदू का कहानी निष्ठा।

१८ फरवरी—रामकृष्ण परमहंस-जयन्ती

जन्म स्थान का भौगोलिक परिचय—रामकृष्ण परमहंस का जन्म बंगाल के हुगली जिले में बमारपुकुर नामक गाँव में हुआ था। यहाँ पर वर्षा काफी होती है। यहाँ के लोग मानसिक कामों में अधिक तीव्र होते हैं। यहाँ के लोग साधारणतः धोती और कुरता पहनते हैं। यहाँ का मुख्य फसल धान है।

जन्म समय का ऐतिहासिक परिचय—जन्म समय रामकृष्ण परमहंस का जन्म हुआ था बंगाल में अंगरेजों का एकछत्र राज्य कायम हो चुका था। फ्रांसीसियों का भी राज्य था। दोनों में लड़ाई चल रही थी। उस समय कम्पनी का राज्य था। बंगाल में किसानों पर जमादारा का आधिपत्य था। जमींदारों के कट्टे व्यवहार और दुराचरण तथा अत्याचार से सभी किसान श्रम में थे। इसी समय रामकृष्ण परमहंस का जन्म हुआ था।

धार्मिक और सामाजिक अवस्था—हिंदू धर्म पर से लोगों का विश्वास जड़ रहा था। पाँचायत धर्म विचारों का प्रभाव उच्च कुलीन वर्गों पर पड़ रहा था। ब्राह्मणों के विधि विधान पाण्डित्यमय ममज्ञान ज्ञान लग और ईर्ष्या मन का प्रसार हो गया। इस्लाम तो यथास्थिति में था किन्तु हिंदू धर्म का हानि हो रहा था।

हिंदुओं में सामाजिक मनीषता फैल चुकी थी। ऊँच नीच का भाव बढ गया था। ब्राह्मण पातण्डी हो गये थे। अपने धर्म में च्युत हो रहे थे। सूद्र ईसाई तथा इस्लाम धर्म की ओर झुक रहे थे। वर्ण शक्तीयता का बालवाला था और समाज छिन्न भिन्न हो रहा था। इसी समय ब्रह्म धर्म का उपस्थापना प्रेम और अहिंसा के माध्यम से देने के लिए श्री रामकृष्ण परमहंस का जन्म बंगभूमि में हुआ।

जीवन-वृत्त—रामकृष्ण परमहंस का जन्म बंगाल राज्य के हुगली जिले में बमारपुकुर नामक गाँव में १८ फरवरी १८३६ ई० में हुआ था। घर-बाहर धारा और गंगानदी मूल उठा और गाँव में प्रसन्नता छा गया। इनके बचपन का नाम गंगाधर था। इनके पिता का नाम खुदारा राम तथा माता का नाम कल्याणी था। यह अपने माता पिता की तौमरी मनाता था। ऐसा कहा जाता है कि जब गंगाधर का जन्म हुआ था उनकी माता मूच्छा में थी तो वे पाप का भट्टी में जाकर चुपचाप राम सपना बने।

बालक गदाधर को पाँच वर्ष की अवस्था में विद्यालय में बैठाया गया। कुछ ही दिनों में अपने तर्ज और प्रताप से उन्होंने मवा को अपनी आरणा प्राप्त कर लिया। जो बाद में एक बार दस लेखा कार-कार दसत की इच्छा प्रकट करण। मन्त्र वष की अवस्था में ही उनका पिता का देहांत हो गया। अब उनके पालन पोषण का भार उनकी माँ पडा। किन्तु उनकी माँ का अधिष्ठान कष्ट रना पडा नहा करण थ। व अपना समय माँ का नियमित रूप में देन लग। पिता की मृत्यु का अभाव उन्हें लक्ष्मण लता और व मन्त्रीर हल गत।

वचन व पौराणिक कथाओं और चरित्रों का उनके जीवन पर बड़ा असर पडा। व वचन में बड़े तर्जवा थ। व चित्रों का भी करना जाना थ।

दादाजी वर कर्ण म ८ मीन र्णर की आर रता व विचार एव प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ काशीजी का एक मन्त्र और विचार मन्दिर है। दादा मन्त्र व इतिहास व माथ परमर्ण का ज्ञान भी गुरु हना है।

हस मन्त्र म व अन्त भाद रामकुमार व ताय रहा करण थ। यहाँ पर उनका परिचय माथूर बाबू, जो दादा मन्त्र का प्रसिद्धाधिकार करण बाबी रानी राममणि व जामना थे म हुआ। व उनकी आर अन्त र्णि म तिव गत। यहाँ पर उनका एक और व्यक्ति म परिचय हुआ विरान निरन्तर २४ वर्षों तक उनका मवा की थी। रिन्ता म वह व्यक्ति उनका भ्राता कहता था।

१९०५ तक उनका मन साधारण धीमा म हूँन तथा लोभ व कारी का आराधना और भक्त चिन्तन म तान र्णन ता। उनका आध्यात्मिक जीवन एक बाटि का था और उनका विचार बने ही उदार थ। एका वग जाता है कि उनका आध्यात्मिक मापना धर्मिक तथा निष्ठी म माँ परमेश्वरी व ज्ञान भी प्राप्त हुआ थ। व साधारण बालबाल का श्रमा म स्थिता हान अपने उपमा का दिया करने थे। अब उनका वान म विषय बुद्ध हा वान म हा गत। दादी विषयो म म था नरुद्रनाथ हत थ। १९०० १० म नरुद्रनाथ हत का रामरुद्र परमेश्वर म साक्षात्कार हुआ। व हा अग वनर स्वार्थ विषयानन्द के नाम म विरान विरान हए। १६ अगस्त १९०६ ई० के रामरुद्र परमेश्वर का साक्षात्कार हा गत।

इनके धार्मिक विचार बड़े ही पुष्ट और उदार थ। साक-वन्द्याय व भारतना उनका अन्तर्गत तात्र था। व जीवन म साक्षात् और वल्लभ मन्त्र पर विशेष आर दत थ। व धर्मिक कर्णकर थ। उनका मारा ज्ञान र्णि असाहिता, मरीचा प्रमा और निधनों की मवा म व्यक्त हुआ।

पूर्व तयारी—एक दिन पूरा ही छात्र एवं शिक्षक एकत्रित होंगे और उसमें अगले दिन का कार्यक्रम निर्दिष्ट किया जायगा। दूसरे दिन प्रातः काल उठकर विशेष रूप से सब चीजों की सफाई करेंगे। आज सूत्र-यज्ञ में विशेष समय देंगे। फिर एक सभा होगी। इसमें अगर जनता भी सम्मिलित हो सके तो सार्थक में सुगम है। इसमें सभी अपने-अपने विचारों को प्रकट करेंगे। तत्काल के द्वारा इसमें सहयोग करेंगे और उन विचारों को जनता के समक्ष प्रस्तुत करेंगे। कविताएँ पढ़ा जायेंगी। लम्बे पदों जायेंगे। पहलू और नाटक किए जा सकने हैं। इन सबों को लेखबद्ध कर पुस्तक रूप देकर पुस्तकालय में रख देंगे। अतः म. परमहंस के उपदेशों को जनता और छात्रों के मध्य रखेंगे जिससे वे अपना सुधार कर सकें। इस दिन लोक-शल्याण का काम अधिक होना चाहिए।

शिक्षाएँ—ब्रह्मचारी बनने की कागिरी करनी चाहिए। श्रिया का माना व दृष्टिकोण निरुद्ध से देखने का प्रयत्न करना चाहिए। समाज सेवा का व्रत लेना चाहिए। किसी भी चीज का पराधीन या अपना नहीं समझनी चाहिए। सुन्दर और सुगठित शरीर बनाने की कागिरी करनी चाहिए। नियम और समय में रहने की आदत बनानी चाहिए। अपने आराध्य देव की पूजा कर मन को शुद्ध तथा हृदय का बलुपरहित बनाना चाहिए।

प्रश्न

१. रामकृष्ण परमहंस के जन्मकाल की ऐतिहासिक तथा सामाजिक अवस्था क्या थी ?
२. इनका जन्म कब और कहा हुआ था ? इनके बचपन की क्या स्थिति थी ?
३. इनका जीवन-वृत्त का एक छोटा सा काकी प्रस्तुत करो। इनके परम प्रिय विद्वान्-विद्यार्थी शिष्य कौन थे ?
४. इनके जीवन से तुम कौन-कौन सी शिक्षाएँ ग्रहण करने हो ?

१६ फरवरी गोपाल कृष्ण गोखले

पुण्य-तिथि

जन्म स्थान का नौगाविस परिसर — गोखले का जन्म महाराष्ट्र का ताहापुर जिले के वानवण नामक गाँव में हुआ था। महाराष्ट्र एक प्रायः ही और जान स्वतंत्र भारत का एक राज्य है। यह पहाड़ी जगह है। अधिक नहीं होना। यह स्वभावनत राज्य यदि में हट्टु-बट्टे तथा मज्जा हात है। क्या उस हानी है। गर्मी कुछ विगप पढती है किन्तु समुद्र रहने से कुछ ठन्डक पढती है।

जन्म-पाल का ऐतिहासिक परिचय — जन्म समय महाराष्ट्र का जन्म था अंग्रेजों का शासन धीरे धीरे भारत में अपना पैर जमा रहा था। हिम्मा से प्रशासनियों का भी राज्य था। देश का स्वतंत्रता का वाक्य का चट्टा भर रहा था। जिनका गान्धू महता, दादा भाई नौराजी मह गारिण्ड सागाड सायाि जन्म व प्रमुन नता-गान साचनाविक क्षेत्र में हाय रहा था। उमी बात में गोपाल कृष्ण गोखले का जन्म हुआ था।

जन्म वक्त — गोखले का जन्म ८ मई १८६६ ई० का एक दिन ताहापुर के घर वानवण जिला के वानवण जिला के वानवण नामक गाँव में हुआ था। जिस समय के वानवण गाँव को एक टूटी-फूटी सापडा में अपने लडके की नटगिनियाँ दिया करते थे उस समय की जनता का कि एक दो साक्षर का वाक्य अपनी प्रतिभा से करके भारत का ही नहीं करके सविनय से आन्दोलन करने देता। जिस समय यह काव्यमय वाक्य पुनरुक्ति का गाँव का चौबिसा में पूजा करता था उस दिन की जनता कि यथा वाक्य करने के बाद में इस प्रतिभा के वाक्य प्रतिभा था। जन्म जलना था कि यथा वाक्य भारत का पुण्य का वदना का की जनता का कि साक्षर के बाद काटे का काट का मही कर भा वाक्य भारत का अशक्ती नेता का वाक्य। किन्तु अपने जन्म की घटना द्वारा गोखले ने महानिष्ठ के बाद भारत का साक्षरता प्रश्न को कि दो सतान को महानिष्ठ के ३ दिन करके है।

बाल्यावस्था में ही उनमें एक अजीब एवं असाधारण प्रतिभा थी। बचपन में ही वे ज्ञान से सज्जों को आश्चर्य चकित कर दिया था। यह गणित में भी काफी तज था। उनके अग्र प्रत्यग स तज की ज्याति विक्रीण हो रही थी। १४ वष की अवस्था में इन्होंने प्रबर्गिका परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त की। १८ वष की आयु में बी० ए० की डिग्री प्राप्त की। २० वष की अवस्था में प्राध्यापक के पद पर इनकी नियुक्ति हुई। यद्यपि गोवर्धने को इतिहास में एम० ए० की उपाधि नहीं प्रदान की गयी थी फिर भी एम० ए० के छात्रों का इतिहास पढाया करते थे। सन १८८४ ई० में गालल कांग्रेस के अध्यक्ष नियुक्त किए गये। उस समय उनकी अवस्था केवल २८ वष की थी। यह उनकी प्रतिभा का ज्वलंत उदाहरण है। इन्होंने उस अवस्था में अपनी प्रतिभा का अपूर्व परिचय दिया और इतने परिश्रम से काम किया कि सब ने मुक्त कंठ से उनकी प्रशंसा की।

सन १९०४ ई० में बनारस में इंडियन नेशनल कांग्रेस के अधिवेशन के सभापति बनाये गये।

गोवर्धने ने सन १९०५ ई० में एक संस्था भी कायम की थी। उसका नाम भारत-सेवक-समिति (the servants of Indian Society) है। यह आज भी एक जीतो-जागती संस्था है और इसका एक मान उद्देश्य है भारत का सेवा करना। गोवर्धने ने नमस्-कर की कटु आलोचना की। भारत के प्रतिनिधि के रूप में वे कई बार इंग्लैंड गये और वहाँ पर बड़ी जगह ने काम किया। अफ्रीका में महात्मा गांधी के साथ भी काम किया था। उसने वारे में कदाचित्त यह कहा गया है कि वे जनता का जाकाशाय काय सराय तक पहुँचाने थे और सरकार की कठिनाइयाँ बाँटने तक।

१९ फरवरी सन् १९१५ ई० का राष्ट्र-बला में गोवर्धने का जीवन प्रदीप भंदा के लिये बुझ गया। रात के दस बजे भारत की सारी आगाआ पर पानी फिर गया। सारी जाकाशाका का अंत हुआ गया। राजनतिक अखाड़े का एक सबश्रेष्ठ पहलवान इस संसार में चल गया। देश का सच्चा शुभ चिन्तक उठ गया। देश भर में शोक का समुद्र उमर पडा। सभी आठ-आठ आँसू रो रहे थे।

गोवर्धने एक महान आत्मवादी नेता थे। उनका सारा जीवन राष्ट्रमत्ता में ही बीता। शापित एवं दलित जनता का सेवा ही उनका एक मात्र उद्देश्य था, व एव उन्मत्त यत्ता था। स्पष्टवादिता साहित्यिकता विनम्रता

एवं निम्नाय भाव से सेवा की सेवा की। ये सब उनके चरित्र की विवेक-साधने थी। नाड कजन के गठना म "ईश्वर ने उह अमाधारण योग्यताआ से विभूषित किया था, जिसका प्रयाग उहाने देग और जनता के हिताय किया।"

स्वयंभवा के उपरांत नितक न कहा था—पीडित जनता को सन्देश देने हुये भारत बप का यह हीरा महाराष्ट्र का यह रत्न और देशभक्तों (Patriots) का यह राजा आज मंगल भूमि पर लेटा हुआ अन्त विधाम में रहा है। इनकी तरफ दक्षिण और इही क सत्ता काय करने का उद्योग बाजिये। 'शास्त्रों न एसा उचा और सम्मानपूर्ण स्थान देवल अपन चरित्र देल तथा बुद्धि की प्रतिभा से ही प्राप्त किया। किन्तु कुटिल बान के बाने कठ हाथों का कौन रात सताता है। एवं तिन वह मवा का समोद ही गता है।

पूर्व तयारा —गुण्य निधि क एक तिन पूव ही सभा छात्रा तथा गिनका की एवं सम्मिलित गांठी हा। उमन अगल दिन का कायक्रम प्रसारित किया जायगा। दूसरे तिन अगल सुबह म प्रभान धेरी हा ता और भी अच्छा हागा। उम तिन गाँव-गाँव म जाकर वहाँ का सफाई तथा जनता की भलाई क किए काय करना चाहिये। आज निश्चित समय म विधि समय सूत्र-धरा से किया जाय। अत म एक सभा हायो। उमन सभी भाग लेंगे। लाग शास्त्र क प्रति अपन विचारा का व्यक्त करेंगे। लेख पढ़ेंगे कविता पाठ करेंगे। प्रह-मान करेंगे और इन सेवा का एकत्रिय कर सुराल रात देंगे। अत म सभी सेवा का अन्त जपनावें।

शिष्याओं —अधिन-अ-अधिक विद्वान् यजन की वागिग करनी चाहिये। यत्ना बनने की वागिग करनी चाहिये। देश-भवा का अन्त लेता चाहिये। जनता की भलाई की बातें सीखनी चाहिये। काड भी एसा काय न करना चाहिये जिसमे विरो की दुःख का तरकीब न पडुवे।

प्रश्न

- १ गणतन्त्र के समय को ऐतिहासिक अवस्था क्या था ?
- २ गणतन्त्र का जन्म कर और कहाँ हुआ था।
- ३ बचपन में के किस प्रकार क प ?
- ४ म क'प्रेत क अध्याय कर सिनुड दुरे और कर सपासति बनाप क प ?
- ५ इन्वाम दिन म'प्या का कानन मिया पा कर कर दिया था ?
- ६ इन्क ज'वन-पुन का एक तिन-तिन म'हा प्रस्तुत करें। उनकी मृत्यु कर कुर थी ?
- ७ इनके जीवन म गुन कौन-कौन-सी शिष्याओं द्वारा करल हा ?

२२ फरवरी—कस्तूरवा पुण्य-तिथि

पूर्व तयारी—एक दिन पूर्व सभी छात्रों एवं शिक्षकों को सूचित कर दिया जायगा। दूसरे दिन सुबह म सफाई की जायगी। आज सूत्र-यन विरोध तौर पर किया जायगा—एक घंटा। सूत्र-यन-परात सभी छात्र एवं शिक्षक एक स्थान पर एकत्रित होंगे और वहाँ पर इनके बारे में चर्चाएँ चलेंगी। अंत में प्रधान जी अपना विचार प्रकट करेंगे। पुन गोष्ठी विघटित हो जायगी।

देश की सामाजिक हालत—देश में अंग्रेजी शासन की पूरी धाक जम चुकी थी और उसकी दृष्टि में चल रही थी। देश की जनता की दशा अत्यंत दयनीय थी। स्त्रियों की हालत एवम गिर गई थी और समाज में उनकी कोई पूछ नहीं थी। अंगरेजों का सुना अत्याचार होता था और शक्ति में प्रबल बग स दमन चक्र चलाया जाता था। किंतु इतना हीन पर भी स्त्रियाँ—‘न हान दूंगा अत्याचार चला मैं हाँ जाऊँ बलिदान मातृ मंदिर में हुई पुकार चढ़ा दो मुझको हे भगवान् !’ बहा करती थी। ऐसे समय में स्त्रियों की दशा का सुधारने के लिए और समाज में उनका भी कुछ स्थान हो उस दिलान के लिए एक वीरगना की आवश्यकता थी और उसे पूरा किया कस्तूरबा ने। इन्होंने न तो लक्ष्मीबाई के समान अस्त्रधारिणी बनकर शय-भ्रमण किया और न महारानी विक्टोरिया के समान किसानों के शासन ही किया। य किसी सभ्यता की पत्नी भी नहीं थी। किंतु इतना हीन पर भी आज उनका हम भारतीयों के हृदय में अपना एक उच्च स्थान है। इसका कारण है उनका त्याग उनकी तपस्या और उनका उच्च पान्द्रित धर्म का पालन।

जीवन-वृत्त—गुलामी के दारुण उदाम और नीरम वातावरण में गुजरात के पोरबंदर में १८६० ई० में कस्तूरबा का जन्म हुआ। कस्तूरबा के तीन महीने पूर्व उन्ही पोरबंदर में म० गांधी का जन्म हुआ था। जब इन दोनों की मंगल प्रतिभाएँ हमारे मानस पटल पर हृदय रंग के गमन आती हैं तो मन में एक अद्भुत और अलौकिक भाव उत्पन्न होता है। प्रकृति ने इन दोनों का एक ऐसा युगल जोड़ी उत्पन्न की जो एक ही दास का दो पितामहों में प्रकृतित हाकर अपने अलौकिक प्रकाश से समस्त विश्व को आलोकित कर दिया।

इनके पिता का नाम श्री गोकुलदास मावन् और माँ का नाम श्योमती विराजजुनवेष्ठा था। इनके पिताजी अनाज, रई, और बपड़े का व्यवसाय करत थे। इनका पाणिप्रहण संस्कार गांधाजी के साथ हुआ।

य महात्मा जी के साथ मिलकर हाथ म हाथ लेकर और कंधे म कंधे मिलाकर चली और युगल दम्पति की छाना म चार बच्चा का भरण पोषण हुआ। बम्बूरवा गौधी जी के गाय अफिका भी गयी और उहानि वहाँ अनका महत्वपूर्ण वाय लिये।

चम्पारण के प्रसिद्ध एतिहासिक सत्याग्रह म बम्बूरवा न एक चिरम्बरणीम और सक्रिय भाग लिया। व वहाँ की पोषित जाता का स्वास्थ्य, सफाई और अनुशासन की निगा दन लगी। स्त्री हान से व बंधक पापटिया म जानी और भारतीयों का दरिद्रता-मूचक रामाचर कहानियाँ लया के समस्त प्रस्तुत करना था। उगो प्रारंभ धीरे धीरे वहाँ की जनता गिगित हान लगी और लंगरवा तथा अत्याचारी नोलहा की कूटनीति का उमगन लगी। निगा चलना रहा, चलनी रही और फूस की पापटिया के स्थान पर अग्निराधर (Fire-proof) निगा म भारत लड़ी कर दी। चम्पारण की विजय म बम्बूरवा का एक बहुत बड़ा हाथ है।

गुजरात के माररमनी आश्रम म उहाने अपना नूतन वाय करना प्रारम्भ किया। इम ममय रौलट एक्ट जारी कर लिया गया। इनमे लया के हृदय म प्रचण जाला प्रलभ धग से प्रज्ज्वलित हो उठा। जनता न सरकार का बदलन का निश्चय किया। जानाग का एत तूफान उठा और उग निहारी और वगुनाह जनता पर गुरू पर दा गै गारिया की बोद्धार। सबन टापर के अत्याचारा का दानवी जना अपना विरट रूप लिया रही थी।

उधे-उधे दमन चक वग आदानन न नी मका पीछा उगी तरट न किया। गन्ताय और धय का बांध टट चुका था।

इम ममय यन-नेन प्रचारण सरकार न गौधी जा का बैद कर दिया। गौधी जी की निरन्तरागे मे बम्बूरवा न प्रलभ प्राण प्रेरक और मानिक एत उमाहबड के पोषण का सनकर दग थी जनता का आग दान के निगा सकारा।

गुजरात भारत माँ का बरिया का वागन के निगा वा न प्राणन ग वगन का और अनकी वार उग नगरता के गौ मन्ताया के अन्तर वग का स्त्री सान्सार ली और अन्तःश्रमण बन मे ही दान कर हम न विगा हा गयी।

समय की गति गन-दान बढ़ती गई। दूसरा विश्व युद्ध गुरू हो गया। भारत स भी सैनिक भेजे जाने लगे। सन् १९४२ आया और आया ९ जगस्त का वह चिरम्मरणीय दिन। गांधीजी ने 'भारत छोडा' (Quit India) का नारा लगाया। दश की जनता जाग उठी। दंग के सभी नेता कद कर लिए गए। गांधीजी को पूना के आगालाँ महल म कंद कर भेज दिया गया।

कुछ दिना के बाद वा को कदकर उसी महल म भेज लिया गया, जहाँ गांधीजी थे। गांधीजी ने अनशन प्रारम्भ किया। २१ दिना के बाद उहाने अनशन तोडा। इसी बीच कस्तूरवा का स्वास्थ्य विगडने लगा। १९४३ इ० म वा की बीमारा ने भयकर रूप धारण कर लिया और उहें युमोनिया हो गया।

अब उनका अन्तिम समय समीप आ गया। अन्ततोगत्वा २० फरवरी १९४४ को सायकाल ७ बजकर ३४ मिनट पर मगस्र पहरदारा से निकलकर और सारे देश की जनता से विछड कर इस दुनिया से सदव क लिए चल बसा।

वा ने अपने जीवन म अच्छे-मे अच्छे दिन और धुरे-म धुरे दिन भी रिताय थ।

जाज वा हमारे बीच नहीं हैं। फिर भी उनकी जीती जागती तस्वीर हमारे सामने प्रस्तुत है। उनकी जित्गी की एक चनती फिरता कहानी है। वा की स्मृति अमर है और रहेगी। हम जाज की पुण्य स्मृति के आँसू और श्रद्धाजलि क दो फूल समर्पित करत हैं और उनके नाम पर नमस्नव हो जात हैं।

निशोर्ण—पातिव्रतधम किने कहत हैं और निर्वाह जीवन म कस करना चाहिए इन यति सित्रया की सीखना है ता वा के चरित्र का अध्ययन और मनन करें तथा अपने जीवन म उतारने की कोगिग करें।

कप्टा स हार मानकर अपने वा कप्टा क अनुकून कसे बनाया जा सवता है इमे कोई वा क जीवन से सीख।

प्रश्न

- १ वा ने गांधीजी को गांधी बनन म किस प्रकार सहयोग किया ?
- २ चम्पारण और गुजरात म वा ने महिला-आगरण का काय किस प्रकार सम्पन किया ?

१२ मार्च—डाएडी-कूच-दिवस

पूर्व-तयारी—स्कूल बन्द हान के पूव सभी को अगले दिन के कार्यक्रम की सूचना दी जायगी। दूसरे दिन मूत्र-यनोपरान्त छात्र एक शिक्षक सभी एक स्थान पर एकत्रित होंगे और वहाँ पर इसका इतिहास प्रस्तुत किया जायेगा। इस इतिहास का लिखकर सजिद कर प्रधानाध्यापक के वक्ष में रख दिया जायगा।

इतिहास—मन १९२९ में ५० जनाहर ताल नेहरू की अध्यक्षता में लाहौर में कांग्रेस का एक अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में कांग्रेस ने भारत का पूरा स्वराज्य निर्धारित किया। अपने सदस्यों का यह आदेश दिया कि केवल पूरा स्वराज्य के ध्येय से काम करें। २६ जनवरी १९३० को प्रथम बार पूरा स्वाधीनता दिवस बड़े उत्साह से मनाया गया।

इस अवसर पर देश में जो उठाह प्रकट किया उसमें तो यहाँ जान हाता या कि देश राजनतिक आन्दोलन करने के लिए तैयार है। अतिस भारतय का कांग्रेस कमिटी ने गांधी जी का आन्दोलन प्रारम्भ करने का अधिकार भी दे दिया। गांधी जी आन्दोलन प्रारम्भ करने में पूरा मरवार का अन्तिम चलायनी देन हुए बापयराय लाह इरविन का २ मार्च का सावरमता आश्रम में एक पत्र म लिगा था— भारत एक मिल्लुन कारावाग है—सविनय अवस्था आन्दोलन में भारत की अराजकता और मुल अवस्था में बचा सकता है। कर्नाति का म एक एगी हिगाभव मध्या भी है जो ध्याग्याना प्रस्तावा या सम्मन्तना में विवाग नहा रगनी करनु गुण विद्राह में विवाग करता है। —यदि इन मुगम्या का दूर करने का आप प्रयाग नहा कर सकेंगे और मर पत्र का आपक हृदय पर का प्रभाव नहा पढगा तो डा माग की ११ तारीख का मैं आश्रम में उतगम्य साधिया का लकर नमक-जानून तोहन के लिए चल पढूंगा। निधना का दजि में भ रग कर का मरगजिह जन्वायपूरा समझना हू। स्वाधा- नता आन्दोलन मूरत निधना के हिताय है। गांधी जी का नमक के मकष में गदा बडा दात पढ गगा। नि बहा एक एगी छात्र है जो अमीरा या मरगा सबा के लिए एक समान महकपूज चीज है। इस पत्र का उत्तर लाह इरविन

१३ अप्रैल

जालियाँवाला बाग हत्याकांड दिवस

पूर्व तयारी — एक दिन पूव सवा का इमके विषय म सूचित कर देना चाहिये । दूसरे दिन सूत्र यनोपरान्त सभी शिक्षक एव छात्र एक स्थान म एकत्रित होंगे और इसक विषय म चर्चायें चलेंगी । छात्रों द्वारा विरचित निबंधों का सङ्कलित कर प्रधान जी के वक्ष म रख देंगे ।

चर्चा के समय इस बात का ध्यान रहे कि अग्र जी राज्य का इतिहास गुरू म ही बतलाया जाय । १८५७ ई० के प्रथम स्वातन्त्र्य युद्ध पर भी प्रकाश डाला जाय । रौलट एक्ट तथा १९२१ क असहयोग आन्दोलन पर भी प्रकाश डाला जाय तथा साथ ही प्रथम विश्व युद्ध और उन्हें डगलड भारत तथा गांधीजी क महायागा का भी स्पष्ट किया जाय । तब जालियाँवाला बाग के हत्याकांड का विशद वर्णन किया जाय तथा इस कांड का भारत पर क्या प्रभाव पडा इसका भी चर्चा की जाय ।

सन १९१४ म प्रथम महायुद्ध का अंत हुआ था । लागा म पहलू से ही असतोष की आग सुलग रही थी । युद्धापरान्त भारतीयों पर कर बढा दिया गया या जीर वस्तुओं के मूल्य म वृद्धि हो गयी थी । इन आर्थिक कारणों से भारतीयों म अत्यधिक असतोष के कारण स्पष्ट चलव रू थ । बिहार के चम्पारण जिले क किसानों म अंग्रेज निलहा क गिनाफ म एक जबदस्त आंदोलन खडा किया । गुजरात के खरा जिले के किसानों का आन्दोलन भी इसी समय हुआ । इस प्रकार लागा पर दान शन जयाचारा का दमन चर्र बाफो तजी से बढ रहा था । और इसी समय एक नई घटना घट गई । भारत म चन्नेवाल आन्दोलन का बुचलन क लिए तत्कालीन सरकार न तत्कालीन कानूनों का अममथ पाया जीर इसीलिए एक एक्ट बनाया गया जिन्का नाम रौलट एक्ट पडा । इसक निमाना सर सिडनी रौलट क और उहा क नाम पर इस कानून का नाम रौलट एक्ट पडा । इस नये कानून के अनुसार सरकार क हाथा म इतनी शक्ति आ गई कि छांट म छांट आन्दोलन का भी जिम्मा किसी भी प्रकार की जनहित की धानि नहीं हो सकती था राव नगा सकते थी । सार दंग म इसका निरोध किया गया । महामा गांधी न

हो इस जन-ध्यापी विद्रोह का नरुत्व बिया और इसी विरोध का प्रकट करने के लिये ही १३ अप्रैल १९१० का नाम का जातिवादी वाला बाग में एक बन्दूक बर्तनी सावजनित सभा हा रहा थी। यह बाग अमृतसर के बीच एक स्थान पर था जो चारों ओर दाबारा और मजाना से घिरा हुआ था। हममें आने-जाने के लिये एक सक्की गली थी। इस बाग में लगभग २०००० व्यक्ति एकत्रित हुए थे जिनमें बच्चों तथा बाल पुष्प भी शामिल थे। इसी बीच जनरल टायर नामक एक अफसर ने एक सा नारनाय एक पचास ब्रिटिस सैनिका के साथ उस स्थान पर पहुँचा। सभा में इतना जनता का उमन तिनर कितर हा का जाना ही जोर तीन मिनट था ही उन पर गान्धी बरनाई जान गयी। इस प्रकार उमन गान एक निरुधी जनता पर गान्धी चना। गोलिया का चयना तब तब चारा रहा जबकि कुछ गान्धीवादी समाप्त न हो गई। बन्दूक मिला कर १६०० फायर किया गया। सरकारी जाँच का अनुसार मृतका की संख्या १०० एक घायला का चना करीब-करीब दो हजार के लगभग था। मृत हुए एक घायला का रात भर वहीं पर छाट दिया गया। घायला के लिए पानी पीने का भी प्रबंध नहीं किया गया डाक्टरों की सेवा शुध्दूषण की बात भी अज्ञात रहा। घायला में जिनमें तत्पश्चात् के मर गए। यहाँ जातिवादी सात बाग का नृगम हुआ-जा का जो मार गजाय में आठक पचान के लिए जान डूब कर दिया गया। अत्याचार का यही अन्त नहीं हुआ। १४ अप्रैल में २४ अप्रैल तक गान (फौजा बानून) जारी कर दिया गया। सागा का सम्पत्ति अन्त का चारा रहा था। बाँडा की मार पड रही थी और मटका पर सागा का पत्र में बल चयन के लिए मन्तूर किया जा रहा था। बाँध में का जार में एक कमिटी की नियुक्ति हुई जिसमें महात्मा गांधी सा० आर० गान और ५० मानोमान जी थे। सरकार की ओर में एक हटर कमिटी की नियुक्ति इट जिनकी रिपोर्ट के मन्तव्य में स्वयं भारत मंत्री का कहना पना बन्द-म अज्ञात पर अज्ञाय किया गया और औचित्य तथा मान-यता का मयागजा का उन्त धन दिया गया।

इस प्रकार मार पत्र का तय किया गया। सागा की नृगम हुआयें की मार।

निष्कर्ष — मर्गों का निरन्तर अत्याचार का विरोध करना चाहिए। सरकार का नाति का ममाना चाहिए। मन्त्र कायम रगना चाहिए। इस में हम लोगों का कुरी धार का रण मका है। मन्त्र नहीं रण म

शासक गण हम पर अत्याचार कर सकते हैं। दूसरा की भलाई पर ख्याल रखना चाहिये। घायला, बेकसों एव निबला की सेवा करनी चाहिये।

प्रश्न

- १ लागा में असन्तोष के बढ़ने के कौन-कौन-से कारण थे ?
- २ जालिया वाला बाग कहाँ और किसलिए प्रसिद्ध है ?
- ३ जालिया वाला बाग का हत्याकाण्ड कब हुआ और उसमें कितने व्यक्ति उपस्थित थे ?
- ४ इसमें मृतकों और घायलों की संख्या को बतलायें।
- ५ हन्टर कमिटी का रिपोर्ट पर प्रकाश डालें। कांग्रेस के द्वारा नियुक्त कमिटी की रिपोर्ट पर प्रकाश डालें। असहयोग आन्दोलन रौलेट एक्ट एव जालिया वाला बाग से क्या सम्बन्ध है ?
- ६ मार्शल ला क्या है ? इससे पंजाब में क्या हुआ ?
- ७ जालिया वाला बाग के हत्याकाण्ड से लागा पर एव भारतवर्ष पर क्या प्रभाव पड़ा,
- ८ जालिया वाला बाग के हत्याकाण्ड के बारे में कांग्रेस तथा महामना प० मदन मोहन मालवीय ने क्या किया — इस पर प्रकाश डालें।

२३ अप्रैल वावू कुंअर सिंह

पृष्ठ सुमि—१८५६ ई० म लाड उलहीजी इगल्ट लौट गया और लाड अनिग गवर्नर जेनरल हारर भारत आया । इनन गसनकाल की मन्से यही महत्वपूर्ण घटना १८५० ई० की गान्ति थी । ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना हुए करीब सान वष ही चुके थे । साम्राज्य विस्तार त्वरित गति स हो रहा था । इसव विपरीत इन अंग्रेजा के विरुद्ध अतक दुमन भी उठ सड हुए थ । बटुतर भारतीय नरेगा एउ सरदारा व मन्तिप म अंग्रेज विराधी नाव नायें वाम कर रही थी । इहा विराधी भावनाआ व फलस्वरूप बहुतअ राजाआ ने पहचन एव मुद्ध करक अंग्रेजा का मार मगान का प्रयत्न किया, किन्तु व अगफल हुए । समय-मसय पर छाट-छाट दानर होने रहे किन्तु गवा यडा भयनर एव गगलिन विशाह १८५७ ई० म हुआ । इसम पानी की राना लम्बा वार्ड लाया टाप तथा नाना माह्व का प्रमुख हाथ था । इही म न गिरर व वावू कुंअर सिंह भी थ जा बिहार एव सयुक्त प्रांत (उत्तर प्रदेश) व कुछ जिली म अंग्रेजा व दानर छुडा लिया ।

जावन दस्त—अंग्रेजा व अंगुन म देग को मुक्त करन व हनु १८५७ ई० की गगलियापी गानि म गानासाद न प्यामी धरतो का अपन रक्त म गिधिन किया । बिहार का गानि व अंग्रदूत वावू माह्व ही थ । शीगा एव नागपुर, मगारा म गेधमावार्द और महाराष्ट्र म नाना माह्व पगमा तथा लाजा टाप ने उग मयानक गानि का वारना एव मचार्द व माथ मचानन किया ।

वावू कुंअर गिग का जन्म सन १७७७ ई० म जगलगापुर (महाराष्ट्र) म हुआ था । इनन पूवज उग्रन म रहा करन थ । ने सान आज ना चनन का उग्रनी बरन है । जन् अनाउदान गिजनी न १-१० ई० म मारवा पर आता अधिवार कर लिया तब यही व वनमान राजा गान्नुन गान् मगलर नागपुर का आन । इस भाजपुर का उहारे अपना राजधानी बनाई । राजा गान्नुन गान् व कुन म बरन व प्रतापा एव मगलरा राजा जयन्त हुए । इही राजाआ म ला नाद ना पग हुए जा का म कुंअर गिग और अमर गिग के नाम म प्रसिद्ध हुए । जन् ना गिग आन नागपुर म पान व गगल का मर करन और सिप्य पननमाता व वाराणास का वार निरने ता उन राजा माह्व

की अमर गाथायें गीता की ध्वनि में भूँजती सुनाई पड़ेगी। स्वतंत्र भारत के इतिहास में उनकी ये गाथायें स्वर्णशिरो में अंकित हैं। शाहानाद का चम्पा-चम्पा उनके जमर प्रताप से प्रदीप्त है और बिहार का कण्ठ उनका चिर श्रवण है।

इनकी शिक्षा घर पर ही हुई। हिन्दी फारसी एवं संस्कृत के वे बहुत बड़े पंडित थे। युद्ध क्रिया की शिक्षा में भी बहुत निपुण थे। मुख्यतः इन्हें गिनार करन एवं घोड़े की सवारी करन से विशेष स्नेह था। चतुर सेनापति थे तथा इनके रोम रोम में बूट-बूट कर भरा हुआ था एवं सेना का कुशल संचालन करन की विलक्षण चतुराई थी। उदभट वत्ता हाने के साथ ही इनमें वचपन से ही अय्याय के विरुद्ध विद्रोह करन की भावना विद्यमान थी। ये बहुत ही उत्तम एवं धर्मात्मा व्यक्ति थे। दानी हाने के साथ ही यामी भी थे। अपने कर्मठ साधिया का भरपूर दान देने में उनमें भी नहीं हिचकत थी।

सन १०१७ का जमाना था। लंग में शक्ति के बगूले उड़ रहे थे। लंग विद्रोह की भावना से पागल हो रहे थे। सारे देश में शक्तिशालियों ने शक्ति करन का एक ही याजना बना रखी थी। सभी जगह यह घोषणा कर ली गई कि शक्ति ३१ मई को हागी। चित्तु उमान के बरकपुर की छावनी में मंगल पाण्ड नामक सिपाही ने उनावरण में कुछ विद्रोहात्मक कार्य कर लिया जिसे कारण शक्ति १० मई को ही प्रारम्भ हो गई। शक्ति की धधकती हुई लपट मगध में गई। बानपुर की अग्रजा सेना ने २५ जून को आत्म-समर्पण कर लिया। इधर एक माह के पश्चात् दानापुर के सिपाहियों ने काम करने से इन्कार कर दिया। अब बाबू साहब ने भास्करदेवता मगध की धधकती ज्वाला में बूट पड़े और दानापुर के सिपाहियों का सैन्य माघ से भरपूर महायना दा।

शक्ति की अग्रजा सेना के अन्तर्गत ७ जुलाई को उन्होंने चण्डी की ओर वहाँ की बचहरी गजाना जन शक्ति पर अपना स्वयं स्थापित कर लिया। दानापुर के अन्तर्गत बल्ला डेनवर एवं बगल बली मना उत्तर आरा में चले आया। चित्तु बगल भाग रहा और युद्ध में मारा गया। युद्ध हो गया कि बाद मार ईर एवं दूमरी बडा मना तथा म लंग शक्ति आ पट्टा चित्तु में भी मुँह की जाती पण्डे। दूमरी बीच दूमरा मना था पट्टाची जिसे कारण कुल मगध की हार हो गई और ईर का आरा पर अधिकार हो गया।

इसके बाद कुछ वर। सह अपनी राजधानी जगदीशपुर आये। मजर ईरे ने जगदीशपुर में चलाई की। बीबी गज और दुलहर के बीच घमासान युद्ध हुआ। इस लड़ाई में बहुत-सी अग्रज सना मारी गई ईर की हार होना जा रही थी किन्तु विधान सना हान की बन्धू स वह आग की ओर बढ़ता गया। अब बाबू साह्य अपनी राजधानी जगदीशपुर को छोड़कर जगन में आकर रहना पुरु कर दिया और यहाँ में द्यापामार युद्ध का तरीका अपनाया।

जब तलनऊ व त्रानिजारिया ने आजमगढ़ जान की याजना बनाई तब डघर बाबू साह्य न भी अपनी सना लखर आजमगढ़ पर धावा किया। यह ममाचार पाठ ही कप्तान सीलमन न एक गारा सना व साथ तापा स लग होकर आजमगढ़ से २५ मील को दूरी पर तीलिया नामन स्थान में कुछ वर सिंह पर आक्रमण किया। १८ माच, १८५८ ई० का सीलमन व छान छट गय और उसकी सना समर भूमि में भाग उठी। तब कनल डनग २८ माच का अपनी सना लखर आजमगढ़ आ धमका। किन्तु बट भी युद्ध में गत रहा और आजमगढ़ पर बाबू साह्य का स्वतः कायम हा गया। गजनर जनरल लाड कनिंग जो उम समय प्रयाग में था बाबू साह्य व भय स धरों उठा। उनसे माकर का बाबू साह्य में विरोध करने व निग नेत्रा कि तु बट भी हारकर उठ ही पाय लाट आया। ६ अप्रीन का बाबू साह्य ने अपना विजय घोषणा की।

अब व अपना १०० सना व साथ बनारस में जगदीशपुर लौटकर कायम आ रह थे। बीच में कप्तान मुगई न बाबू साह्य में मुनावला की किन्तु बाबू साह्य न उा चामा लखर अपना मारी सना को गाजापुर व निरग जाहू नवा पार करा दा। सारी सना पार करने व परचात बाबू साह्य एन नाम पर गया पारकर रह थ। मुगई की सना न मारी छोड़ना प्रारम्भ कर दी। एक माली बाबू साह्य की कलाई में भा लग गई। बाबू साह्य उगी समय बायें हाथ में अपना तलवार उठा करके बहूनी व नाच का हाथ पाटकर माँ भागीरथी व चरणा में यह कहा हूण अविन किया माँ, दुष्ट विरगी का गोत्री ने इसे अपवित्र कर दिया। अब घट मरे काम का न रहा, अतएव यह मुहें समर्पित है।'

बाबू साह्य व पारासा पहुँचा हा गाजापुर निवासिना व विभिन्न बाजा-जाजा व साथ उासा गाजापुर स्वाम्त किया और उनका जारती उत्तारा।

बाबू साहब ने हाथ के बट जान पर भी जस्सी बप की जवस्था मे २३ अप्रैल, का अपनी जमभूमि और राजधानी जगदीगपुर का अंग्रेजा से मुक्त कर ही लिया । लेकिन घाव की पीडा अमह्यहानी जा रही थी और घाव भी बन्ना चला जा रहा था । अत म उमा बण के कारण २६ अप्रैल १८५८ क उनका स्वयंवास हा गया ।

इम प्रकार —

चना गया या कु वर अमरपुर साहम से सब जरिदलनीत ।
 उसका चित्र दखकर जब भी दुःखन जाने है भयभीत ।
 वीर प्रदिखनी भूमि धन्य वह धन्य वीर वह धय जनीत ।
 गात थ और गायेगे हम हरदम उमका जय के गीत ।
 स्वनशना का सैनिक था, आजादी का दीवाना था ।
 सब कहते हैं कु वर सिंह भी बटा वार मरदाना था ।

(मनोरजन प्रसाद सिंह)

बाबू कु वर सिंह बडे ही सच्च सच्चरित्र व्यक्ति थ । चरित्रवल क कारण ही अपनी ढलती अवस्था म भी इतनी बडी लडाई छडी । वे इतन बडे सूरमा थ कि अंग्रेज भी उनम डरत थे और नामी अंग्रेजा को भी समर भूमि म नेन दिया । आज यद्यपि बाबू साहब हमारे मध्य नहीं हैं तथापि उनकी स्मृति अब भी और सदा-भवदा के लिये हमारे मानम-पटल और हृदय पटल पर जगित रहगी । धय था वह वीर और धय थी वह भूमि जिसन इतना बडा सूर-वीर रत्न उत्पन्न किया ।

जगदीगपुर म आज भी उनका महल यागार स्वरूप कायम हैं जो उनकी याद दिलाता रहें । दगाव आत है देवन है और उनके प्रति अपनी श्रद्धा-जलियाँ जपित कर दो चार अश्रुक्षण बिगर कर चले जात हैं । आज दगा का आवश्यकता है एग ही पुत्र रत्ना की जा दगा का नव निर्माण और नभारधान करे जा जन-जन म गानि जपन करे जिम देगवर बिबव की आसिं पका-चौध हा जाय ।

ध्यान देना चा
 चाहि

म गूब
 स्वनशना
 मग

भाग की आदर रहना चाहिये । कोई काम निष्काम भाव से करना चाहिये ।
काम करने के पहले फल की आशा नही करनी चाहिये ।

प्रश्न

- १ मनु १८१७ की कृन्ति क हान का क्या कारण था ?
- २ दुवर सिंह का कृन्ति म क्या हाथ रहा ?
- ३ दुवर सिंह क विषय में क्या जानन दा ?
- ४ क इतन साकामिय क्या हुए ?
- ५ उनक जीवन स तुम्हें कौन-कौन सा शिक्षार्थ प्राप्त होता है ?
- ६ १८१७ की कृन्ति क्या महान् है ?



७ मई—रवीन्द्रनाथ टैगोर

पृष्ठ भूमि—भारत सदिया, सहस्राब्दियों से ऋषिया और मनीषिया की जन्मभूमि रहा है। कृष्ण के कमयोग का स्थल भारत ही रहा। बुद्ध की तपोभूमि यही थी। टैगोर का जन्म दे भारत न युगों से जीती हुई परम्परा को यथावत कायम रखने की चप्टा की है।

भारत की पुण्य भूमि में रवि बाबू का प्रादुर्भाव उम समय हुआ जब कि देश पराधीनता की बड़ियों में जकड़ा था। भारत माना सन्या में लौह प्राचीर में घट मिसकियाँ भर रही थी। उम समय देश में कान्ति के बगुलें उठ रहे थे। आन्दोलन की चिनगायियाँ प्रचलित हो रही थी।

भारत में अंग्रेजों का एकछत्र राज्यस्थापित हो चुका था। देश की दशा आयत्ति प्रायः बुरी से भी बदतर जाती जा रही थी। अंग्रेजों का मात्र काम था लूटना। भारत का धन विदेशों में जा रहा था। भारतीयों के लिये यह असह्य था। स्वतन्त्रता के लिये लाग लड़ रहे थे। इनके जन्म के कुछ ही दिन पून १८५७ ई० की महान् शान्ति हुई थी। उसमें भारतीयों की सफलता तो हाथ नहीं आ सकी किन्तु अंग्रेजों को यह पात हो गया कि भारतीय भी अपनी स्वतन्त्रता के लिये मर मिटने वाले हैं। इस भाँति १८५७ ई० की शान्ति का ताप और बहूका के नीचे कुचल दिया गया फिर भी भारतीयों ने हिम्मत नहीं हारी। अभी भी उसकी घमनियाँ में उष्ण रक्त खिल रहा था। लाग स्वतन्त्रता का मूय दखन के लिये तटप रह रहे थे। अपने को गुलामी की जजोरा से मुक्त हान के लिये यथाशक्ति चप्टा कर रहे थे। कुछ ऐसी ही शान्ति काल की बला थी जबकि भजपति बीणा पाणि के वरपुत्र रवि बाबू का उदय हुआ।

जीवन घत्त —रवि बाबू का जन्म ७ मई १८६१ को बलकते के ऐसे मध्य भवन में हुआ जहाँ मुन की सभी सामग्रियाँ उपलब्ध थी। उनके पिता महर्षि देवद्वनाथ अपनी विद्वत्ता तथा साहित्यिकता के लिये बंगाल में विख्यात थे। उस ही पिता की देखरेख में बालक रवि दूज की चाँद मा विवसित हो जाता। उस के भी किसी बन्तु की कभी नहीं सटकी।

बगान में उस समय बहुसंख्यक गिण्ट एम थे, जो पड़ाने के बजाय पीटने में ही अपना बतव्य समझते थे। गिण्टों की ऐसी क्रूरता से स्कूला में पड़ाने में उनका स्तिन उचट गया। उस स्कूला में पढ़ना उन्हें कल्पि स्वानार नहीं था जहाँ पर मार पड़ती है। उनका पिताजी ने इस भाव का ताड़ लिया। महर्षि दशरुनाय ने अपनी संपूर्ण सहानुभूति उन्हें पर समर्पित कर रखी थी। अत्र बालक रवि की पढ़ाई की उत्तम व्यवस्था घर पर ही कर दी गई। घर पर प्रारम्भिक गिण्ट अभिन करके उपरांत वे ब्रिटन गये। वहाँ पर उद्दान दा बर्षों तक गिण्ट प्राप्त की।

छात्र-जीवन में ही रवि बाबू सुले नील ग्राम और उसमें इतम्नत्र विचरण करने हुए उज्जल-काये ध्यान और उनके मध्य चमकता हुई चपला की चमक का वसुध हार्य देखा करता थे। प्रकृत प्रसून का वायु व धीमा म सुमनस्य कर हृदय भी क्षम उठता। मर्गिता का चयन रहस्य का स्था कर उन एवं जपूव आत्म का अनुभूति उनका वाच्यगति का स्थान थी। उन्हें एक विचित्र प्रेरणा प्राप्त हुई। वाच्य गति तो प्राय ३२ १३ वष की अवस्था में ही उत्पन्न हुई। वसु मात उच्य होने भर की दर थी विरमिण होने में कुछ भी समय नहीं लगा।

जब रवि बाबू ने इस विषय के रमनच पर प्रवण किया तो दुनिया ने गवप्रसन्न हुई साहित्य के रूप में लगी। साहित्य के जिन विषय पर उच्चत नृत्तिका में विचर बताया वह चमक उच्य। साहित्य के जिन भेद में उर्गेने अपने चरण बढ़ाये, वह सुगरित है उच्य। उनका रानी में साहित्य का बाइ अग अद्यता नहीं रहा। कृतता, पंचाल, प्रकृत प्रबंध आलाचना गोविरा मव कुछ विगा और सूत्र मत्रधर पर विगा। बगना और अग्ने जी प्रथम दाता भाषाभा में विगा। साहित्यिक रवि बाबू ने प्रकृति का भी लगी अग्ने जी रवि बहवकष के ममान साहित्यिकों का आरंभ टि गौदाई समाजशास्त्री आंगा में और राजनीति का विगारा मान्यता का जीगा न। उनका हृदय में एक स्वनिम आभा प्रकृति है रानी थी और उगा आभा का आर्गो लगी दागा काल्पक पद्मा पर अविन कर विगा। उद्दान का कुछ का विगा पर मरा के विषय मनी सुगा के विषय विगा। मन् १८७८ में इन्की पुस्तकें प्रकाशित होने लगी और तत्पश्चात् मृत्तु प्पन्त उनका बाइ न बाइ रचना अच्य है प्रकाशित हुता रही। बगान में विगा हुए रचनाओं का पृष्ठ संख्या १०००० तक पहुँच गई है। दाइ मतिरित टर्टेने अवेजा में विगा

गीताजलि जा उनकी उद्भूत लक्ष्मी की अमर देन हैं। इस नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ और मिली बगोडों के तिल की सच्ची सहानुभूति। रवि बाबू भारत के ही नहीं बरन एगिया के सबप्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता थे।

उनकी पुस्तका का अनुवाद विश्व की सभी प्रमुख भाषाओं में उनके जीवन-काल में ही प्रारम्भ हो गया। ऐसा सीमाव्य दायण ही कितना का प्राप्त होना है। प्रायः यह दया जाता है कि किसी को श्यानि मिलती है ता मृत्यु के बाद ही। किन्तु रवि बाबू उसके अपवाद थे। धन्य रवि बाबू जिसने अपने जीवन-काल में ही इतना श्यानि अर्जित की जिस न ता काल का सक्ता है और न काद चुरा सक्ता है।

दशभक्त रवीन्द्र का व्यक्तित्व लक्ष्मी और वक्त्रता में यत्र-तत्र सबत्र विपरा है। आवश्यकता है उम साधन और समझने की और संग्रहित करने की। उहाँ बग भग का सदैव विरोध किया। जालियाँवाला बाग के हत्याकांड की कटु आलोचना की। यदा-कदा अपनी आजस्विनी वक्त्रता में उन्होंने भारतीयों का महा पुनीत पथ पर अग्रसर होने के लिये और उनके कर्तव्य की याद दिलाते रहे।

विश्व भारती तथा गान्धि निकेतन कवि की अमर स्मृति और स्मारक है। विश्व भारती ता अन्तराष्ट्रीयता की एका मजिल पर स्थित है, जहाँ पर हिंदू बौद्ध सिख ईसाई सभी एक मन से चिन्तन मनन कर शान्ति का शोध करते हैं। प्रशान्त वातावरण, जहाँ पर न ता जानासना है और न साम्प्रदायिकता।

गान्धि निकेतन ता बन्धुन गान्धि का घर है। यह एक तपोभूमि है। इसकी स्थापना रवि बाबू के पिता श्री महर्षि देवेन्द्र नाथ टागोर ने की थी और पूर्ण इन्होंने की। यहाँ है कवि की सतत साधना अथवा परिश्रम और उद्योग का फल और प्रतीक। इसको अग्रसर करने में कवि ने तन मन धन से महामत्त की। यहाँ तन नि इसकी पूर्णता के लिये इन्होंने अपना पना के अभ्युत्थान तक का भाग्य डाला।

जिन तरह उनका रचना बजाट था उगी तरह उनका आवाज भी विन-शान और मधुर था। जब कभी वे अपना स्वरचित कविता सुनान लगते ता जनता मन्मथुष हो जाता। एक अद्भूत आकर्षण था उन्हीं का नाम में एक विचित्र सम्माहन था जो किमी का भी अपनी ओर आकर्षित कर लाता

या । उनके हाथों में चित्रकारी करने की भी योग्यता भी छिपी थी, जो बुढ़ापे में प्रकट हुई । उनकी ऐसी चित्रकारी होनी थी, जिससे देखकर चित्रकला-ममता भी विस्मय विमुग्ध हो जाते । यदि गभीरतापूर्वक विचार किया जाय तो प्रतीत होगा कि रवि बाबू एक महान् कवि ही नहीं बरन सफल कहानी-कार और उप-यामकार, गभीर दार्शनिक चिंतक और मनीषि, मधुर संगीतज्ञ, इच्छुक कलाकार और मानवता मन्दिर के सच्चे पुजारा थे । इनकी प्रतिभा सजती-मुरती थी ।

ऐसे रघात्र का, जिमने गरीबों के गम और दोन दुनिया का दद का अनुभव किया थीर मरे अन्तर्राष्ट्रीय हा कर । रवि बाबू क नामाञ्चारण से ही राम राम पुत्रकित हो जाता है । इसका प्रगल्भ भाव, शिष्य और ममस्पर्शी भाव, लम्बे बाल और लम्बी दाढ़ी एक नया चित्र आँका क समग्र स्पष्ट हो जाता है । ममत्व नत हा जाता है इनक आग । पर रवि ७ अगस्त १९४१ को एम दुनिया का द्वाडकर सगा क निय चल गय । उमने निधन पर प्राय सभी प्रमुख राष्ट्रा न आँसू बहाये और प्रतिबन्ध उनकी निधन तिथि पर सङ्ग्रहा आँसू बहात है । आज रवि नहा हैं पर उमने आलोच का अस्त नहो हुआ है ।

वह आज भी हमारा जीवन क प्रत्येक क्षेत्र के प्रगल्भ पथ का प्रेरणागत कर रहा है और गन्तियों तह हमारी पथ प्रगल्भ करवा रहेगा । उमने इस अमान की प्रति हम मात्र आँसू बहाकर नहीं कर मान । उनकी शिष्य-गत आत्मा की छात्रि क निय उनक विचार उनक दान का समग्रता हागा और उमका अपन जीवन क समक्षे म उनारने और अपनाने की चेष्टा करनी होगी ।

निष्ठावें — विभी भी विदय का अध्ययन करा ता गूब डूबर अध्ययन करा । मणि बुद्ध निगा ता भला भाति साध-नामता कर निगा । विचार ऊँच हान धार्मिक साथ हो तनगाधारण का समग्रता साथ । जय तर पुष्टि परगा नहीं जाय बहार का धीमें न निगा करा । काई एगा काय नहीं करना धार्मिक दिग्गज विज्ञा का चाण पर्वी, काई भी काम निर-नास्ता और सोर मदन क निय करना धार्मिक । स्वर्ग म प्र म करना धार्मिके तथा सभा सोगा का अपनी ही तरह समग्रता धार्मिक ।

- १ रवि बाबू के जन्म काल की अवस्था क्या थी ?
- २ रवि बाबू पलित हुए भारतीय हो कर और मरे अन्तर्राष्ट्रीय हो कर, 'मे' ?
- ३ रवि बाबू का जीवन चरण सन्धि में प्रस्तुत करो ?
- ४ उन्हें विश्व-विद्या क्या कहा जाता है ?
- ५ विश्व को इनकी प्रमुख देन क्या है ?
- ६ उनके जीवन से तुम्हें कौन-सी शिक्षायें प्राप्त होती हैं ?

१० मई—प्रथम स्वाधीनता संग्राम दिवस

पूर्व तयारी—प्रथम स्वाधीनता-संग्राम दिवस मनाते की सूचना सभा का तीन दिन पूर्व ही दी जायगी। गिरक एवं लडक इमकी अच्छी तरह से तैयारी करेगे। लडके निरभिय विषया पर निरभय लिखेंगे। कवितायें पढ़ी जायेंगी। इस अवसर में लडके अभिनयानि करें। १० मई के सुबह में प्रभात परी की जायगी। आन पाम के गाँवा में जाकर सफाई की जायगी। विद्यालय की भी सफाई उस दिन विशेष प्रकार से की जायगी। बन्दनकार सजाय जायेंगे। आज विशेष रूप में एकाध घण्टा तक नृत्य या हागा। इनके बाद सभा छात्रा का जपन-जपने वर्गों में उन-वर्गाध्यापर इन संग्राम पर कुछ बतलायेंगे। फिर अंत में छात्रा एक शिक्षा की एक सम्मिलित गोष्ठी होगी, इसमें लडके भाषण देंगे निबंध पढ़ेंगे और प्रश्ननादि प्रश्नपुन करेगे। अन्तना गाँवा सभापति के भाषण के बाद सांख्यी विपटित ही जायगी।

देश की राजाधिकार हानत — १० मई १८५७ का प्रभुत्व बंद चला था। कम्पनी का शासन गिर पकड़ रहा था। सारा देश मुद्रायाँ तो ही रखा था। १० मई तक राजकीय स्थिति जहाँ थी; एकाका का तो नाम निगान तक फिट गया था। १० मई का दिन प्रथमता के बयान में जनता रा रहा था। पणराजा और नवाबों का राज्य छोटा जा रहा था। जमादारों के जमान लो जा रहा था। अधीनता का सम्पत्ति पर अधिकार जमाया जा रहा था। सारा का गुणस हाना के जा रहा थी। नागिया और जगमा का दिन दृष्ट बंद चला दिया जा रहा था। अन्त में सार जमावारा की एक बन्दनानि प्राप्ति जीत गया था। एकी जनता में १० मई पर भीषण प्राप्ति का हाना अति धारण्य था। इस दिन के अननानक कारण है। उन कारणों का गीतनाय यहाँ पर प्रस्तुत किया जा रहा है—

१. मुगल साम्राज्य के साथ दुश्मनीकार — अंग्रेजों ने मुगल साम्राज्य का साथ ही दुश्मनीकार किया इससे देश में परतानों की अल्प भन्ती। कम्पनी के शासन साम्राज्य की अन्तर्गत में एक अल्प प्रकार के शासन प्रस्तुत कर देना बन्द कर दिया था। १० मई का दिन प्राप्ति के स्थान पर बकर १४ हजार रुपय ही मानित रुपय दिया जाता था। अंग्रेजों का इस कृत्यानि ग माना में बहुत असंगत पता।

२ अवध के नवाब के साथ दुर्व्यवहार —अंग्रेजों ने बलपूर्वक लखनऊ पर अधिकार करके वहाँ के नवाब वाजिद अलीशाह को निष्कासित कर दिया । उसके महला को निलज्जतापूर्वक लूटा था । इतना ही नहीं वहाँ के बेगमों के साथ अत्यंत घणित दुर्व्यवहार किया था । इससे बड़े वर्गों में निराशा एवं असंतोष की लहर फैली । फिर वहाँ की शासन व्यवस्था नई हो जाने से जनता और भी क्रुद्ध हो चली ।

३ अपदस्य सैनिकों में असंतोष —दुर्गी राज्या के घबस्त हा जान में उनकी मेना समाप्त कर दी गई । इस तरह करीब सौ हजार लोग बेकार हो गए । विद्रोह के समय ये भी प्रातिकारी हो गए ।

४ जमींदारों के साथ दुर्व्यवहार —अंग्रेजों ने जमींदारों से भी जमीन छीनकर उन्हें गोद लन के अधिकार से वंचित कर दिया । बहुत लोगों की पूरी-पूरी जमीन छीन ली गयी । मणिपुर के राजा के १५८ गावा में ११६ छीन लिए गए । इस प्रकार इनकी आर्थिक दशा इतनी रूढ़ी हो गई कि भूमि के दाम पर ३०% या ४०% पर भी ऋण मिलना कठिन हो गया । इन प्रकार जमींदार भी उनके शत्रु बने ।

५ रूसी आक्रमण की आशंका —उसी समय यह अपवाह उभर गयी कि विनियुक्त के युद्ध में हारने के कारण हम भारत पर चढ़ाई करेगा ।

६ ब्रिटिश शासन की समाप्ति की भविष्यवाणी —सन् १७५८ में पलामी युद्ध जीतकर क्लाइव ने अंग्रेजी राज्य कायम किया ता यह भविष्यवाणी हुई कि सो मान बात यह राज्य नाट हो जायगा । १८ ७ ६० की प्राप्ति अंग्रेजों भी प्रभावित हुई ।

७ धन का विद्रोह रमन —अंग्रेजों ने भारत का स्थायी निवास नहा बनाया था । अब धन कमाकर वे अपने देश ल जाते थे ता भारतीयों का असह्य हो गया ।

८ भारतीय व्यापार तथा उद्योग का घबग—औद्योगिक प्राप्ति के कारण अंग्रेज भी प्रभावित हुए । अब जहाँ वे गए वहाँ पर उन्होंने उद्योग पर एकाधिकार कर लिया । इस तरह भारत के उद्योग तथा व्यापार की हानि हुई ।

९ बेकारी की समस्या —दुर्गी राज्या के अपहरण से काफी सैनिक बेकार हो गए , जिसमें काफी असंतोष फैला ।

१० अंग्रेजों का प्रचार —अंग्रेजों ने भारतीयों को शिक्षित करके अंग्रेजों का प्रचार किया । सभा धर्मों तथा जातियों के लोग एक जगह आना प्राप्त करते

रुदावनलाल वर्मा आदि अधिक विख्यात हैं। इन्होंने अपने तर्कों के आधार पर यह प्रमाणित करने की चेष्टा की है कि यह एक राष्ट्रीय जनशक्ति एवं स्वतंत्रता प्राप्ति का पहला किन्तु भीषण विद्रोह था। अंग्रेज विद्वानों के विचारों में भी कुछ मतभेद अवश्य पाये जाते हैं। सर जान लारेंस के मतानुसार यह केवल एक सैनिक विद्रोह था। जिसका तत्कालीन कारण कारतूस वाली घटना थी। इसका कारण भी मन्मथ किंगी पूर्वगामी पदचरित्र नहीं था यद्यपि बाद में कुछ असंतुष्ट व्यक्तियों ने अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए लाभ अवश्य उठाया। (The mutiny has its origin in the army and that is proximate cause was the cartridge affair and nothing else It was not attributable to any antecedent conspiracy whatever, all the it was after words taken advantage of by disaffected persons to compass their own ends) सरजान सील के विचारानुसार, सैनिक विद्रोह पूणतया अंतरराष्ट्रीय सैनिक विद्रोह था। जिसका न बाद दशम नता था और न जिसका जनता का समर्थन प्राप्त था।

(The mutiny wholly unpatriotic selfish Sepoy-mutiny with no native leadership and no popular support)

इस विचारधारा के विस्तृत विपरीत सरनेल्स आउटरम की घोषणा है कि 'यह अंग्रेजों के विरुद्ध मुगलमानों का पन्थ था जो हिन्दुओं की निन्दा के बल पर लाभ उठाना चाहते थे। कारतूसवादी घटना न विद्रोह से समय के पूर्व ही उन्हें भड़का दिया तबसे वह भलीभाँति मगठित भी नहीं हुआ था और उसका प्रिय राज विद्रोह का रूप देने के लिए पर्याप्त प्रबंध भी नहीं किये गए थे। (It was the results of Muhammadans conspiracy making capital Hindu grievances The cartridge antecedent merely precipitated the mutiny before adequate arrangements had been made for making the mutiny a first step to a popular insurrection)

जायसिंह भारतीय इतिहासकार श्री भावकर एवं जगज्ज महता इत्यादि ने हम भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम की मना प्रशंसा की है। हम सैनिकों के साधन-साधन-संग्राम न जा अंग्रेजों से, असंतुष्ट के भाग लिया था।

अधिकतर दार्शनिकताया वा 'डेथ वा अथेजा वा मार भगाना । कर्गि
 १८१३ ई० क प्रारम्भ म लिखा म विपत्ताय मन सर्वो म स्पष्ट धारणा था
 नि— 'Drive out the foreigners o all Hindustanis'
 मुगल साम्राज्य बहादुरशाह द्वितीय द्वारा स्थापित राजाज्या क बाद म निर्मित पना
 राज स्व धान वा पुष्टि करता ह । उमन निता धा—मरी इतिहास इच्छा
 कि विपत्ती भारत म निवारित जाय । यदि आप ममा मी राजा
 दुःखन वा स्व म बाहर निवारन व निरुद्धा नै का म अपना मारा गर्ती
 गति जाय अधिपति राजा राजा क मेष क हाथ मुपुत्र कर इन वा
 नकार ह । (I am willing to resign my impartial autho-
 rity in the hands of confederacy of native princes
 who are chosen to exercise it but expel the English
 from India) यद्यपि स्व विद्रोह का मूलपान मन्त्रिक विद्रोह क रूप म
 हुआ किन्तु स्वयं पाश्च एव मा यपों क असाक्षर और असाध वा काला
 द्विती हई थी । यहि महत्त्व न (Discovery of India) म निता
 'यह उक्त मन्त्रिक विद्रोह हा नहा था । यह गीष ही पत्र गया जाय
 'मन उन विद्रोह नवा भारतीय स्वाधीनता मद्रास वा रूप धारण कर दिया ।
 (It was such more than military mutiny, and it
 spread rapidly and assumed the character of a
 popular rebellion and a war of Indian indepen-
 dence) था जाय म० मद्रास म राजा भी उद्विग्न कारण पाय
 पना ह । 'नरा कता ह—

It is true to say that the outbreak was pri-
 marily the mutiny of the Sepoys. There is enough
 evidence to support the views of Norton and Douff
 that it is same as the commotion became which
 spread and soon developed the character of a great
 revolt. स्वयं इतिहास एक अथवा आदिपत्र का कता कि यह एक
 मद्रास भारतीय का व नि मन्त्रिक विद्रोह । 'मना कता ह नि— The
 crises came. At first apparently a near military
 mutiny it speedily changed its character and became
 a national insurrection. पना क कश्चित्क विपत्त कर न ल

पर म लिखा था कि— We are isolated from the heart of the people, there is utter absence of the tie between the governed and governors. The minds of the people are in a very disaffected state' मिस्टर जर्मिग मराठी न 'History of our times' म लिखा है कि—'It was the rebellion of native races against English powers' नर चातम बल्म न 'Indian Mutiny' म लिखा है कि—Meerut Sepoys in a movement found a leader, a flag and a cause and the mutiny was transformed into a revolutionary war. इस प्रकार उक्त तर्कों पर आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि यह एक राष्ट्रीय जन आन्दोलन था। यह यद्यपि कहा जा सकता कि इसमें राष्ट्रीयता का निदान जभाव था। हा उस समय राष्ट्रीयता का विशेष विकास नहीं हो पाया था। यह शान्ति कवकता म पञ्जाब तम पर गई थी। जेज विद्वान टैवेनिसन कानपुर नरटिम (Kanpur Narratives) म लिखता है कि from Calcutta to Punjab they exhibited dangerous tamashas and puppet shows in festivals their method of propaganda का नरह व गता म— इसमें कुछ राष्ट्रवादी तत्व भी विद्यमान र। (There were some nationalistic elements in it)।

सन ५७ का शान्ति का राष्ट्रीय आन्दोलन हान का यह प्रमाण है कि हिंदू और मुसलमानों में पूर्णरूपण शान्ति रही और नाना न मिलकर अपना स्वतंत्रता की लड़कियाँ का बाटन की चपटा का। शिष्टा न भी मुसलमानों का पूर्ण महायता ली। छत्रने मुसलमानों का नरुव जमीवार लिया। नाना माह्व न अध्भता स्वाशर की। विवधा न भी इस विषय म यथा गमि सत्पता की। शान्ति का राष्ट्रीय आन्दोलन कहा जाय ता बाप जयुक्ति न हागा। वस्तुन यह एक भारतीय स्वतंत्रता गद्यम था न कि कन्द-गिपावी विद्रोह।

शान्ति का गगटन पर एक दृष्टि — १७ व विप्लव का गगटन कत्ताता म नाना माह्व तथा उनका बरीत अश्रीमुन्ना ली का नाम शान्ति का शक्तिम में अमर है। अश्रीमुन्ना का अत्यंत प्रतिभावान व्यक्तित्व था। उमन म, मिरा दली एव तर्की तथा अजय दगा म मूम मूमकर अद्यता का गगटन का पता

लगाया। मन्मथ ब्रह्मदुरगाह जीव मन्मथा का वगम जानत मन्मथ प्राणि जी
 याजनाभा से पुत्र महिमन थी। मन्मथ जबध क नकाव राजिअ अना गाह जा
 उमरी रानी बगम हजगत महन एव उमना प्रतिभावान बकीर विद्रोहाहया म
 मिल गया। अजामुन्ना री का पुकार पर हिन्दुआन गगाजव ता जात मुमन
 माना न कुरान की गपय ग्रहण की रि अर्थजा का इस दग अतिरामित दगन
 म अपना गव कुछ हामि कर लगे। मान हो पतावाद क मोनरी अहमद गान
 अना का भा नाम त्रिगघ रूप म उमनाय ह। अन्तनागत्वा नाना साहय एव
 अजामुन्ना री न ताथयात्रा क बहाना दग का भ्रमण कर मगदल कायम किया।
 वमत का फूल और चपानी प्राणि क चिह्न न निश्चित किया गया। वमत न
 फूल मनिवा में और चपानी गीरा म घुमाई गई। इन चिह्नों का सार्वत्रिक
 तापय क्या था म अत्यन्त रहस्यात्मक हा ह। सम्पूर्ण रूप म ३१ म री
 प्राणि प्रारम्भ करने की थी। यह बात भा कम आश्चर्य की न था कि इना बट
 व्यापार जा-आगेवन का नतिर भी एता अक्ष जा का नग लग गया।

प्राणि का प्रभाव — मन्मथम प्राणि का प्रारम्भ दमन्मथ म बरहपुर म
 छान्दसी म प्रारम्भ आ। इन मनिवा म नय धारतृगों का प्रयाग करने क तिय
 कहा गया था। किन्तु इन मया न करान कर दिया। इन अफगरी न
 मनिवा म अन्त मन्मथ उगा इन रा कहा। कुछ उगा न गीरा दिया किन्तु
 अधिकांश उगा न विद्रोह करने का निश्चय किया। एतन्मन्मथ २० माच का
 मन्मथन मन्मथ (परत प्राउर) म ही मगन पाण्डव नामक एव शाहान न
 अरत मनिवा का विद्रोह करने क तिय बगवा दिया। इस पर मन्मथ ह न-
 मन न उग क्या बना दिया। मान पाण्डे न सर्वेष्ट हूयुमत पर जी गीरी
 नान न। सर्वेष्ट = यूमन कुर हा गया। मन्मथ ही नही उग बार न अर
 एव दूमर अर्धेज का भी उगी दम हुआ कर न एव वह भी पाण्डव हा युवा
 ता। मन्मथ अरुभा म उग मारावाड म अर दिया गया। आठ अरुव का
 मन्मथ बनान का फीमा एव मन्मथ दिया गया।

बरहपुर एगरी का फला क उर प्राणि का मन्मथ मन्मथ म ना धार
 मन्मथ) मन्मथी नो बरहपुर बाह मन्मथ। किन्तु कौ नो मनिवा न उगा प्रयाग
 करी क करान कर दिया। मन्मथ मन्मथ का मन्मथ मनिवा का आठ न
 मन्मथ मन्मथ कतिर मन्मथ बागवान की मन्मथ मुन्मथ कागान म मन्मथ
 दिया गया। मन्मथ विद्रोहमन्मथ मन्मथ म मन्मथ पर मन्मथ म विद्रोह
 और अगताव का उगाता घबहन मन्मथ। अब उरत रिग ११ मन्मथ मन्मथ
 दूमर प्राण हाव मन्मथ। दूमर रिग १० मन्मथ का मन्मथ का मन्मथ मन्मथ क

साथ मरुत म विप्लव की उवाता धमर उठी। तग कारावास का तापनर
मनिरा का मुक्त करत तग और अग्रजेन जफमरा ना मानन तग।

उमी लिन दा हजार अचाराही लिनो क तिन खाना हुए और ११ मई
का लिला पटुव गय। यहा भा वपुत म चमात्मन वाय किये गये। दान्द
र धरा म जाग तगाए गए और जनक अ य ज अफसर मार गय।

इम प्रकार धीर गारे नानि समस्त दग भर म ध्याप्त हा गई। डामी,
तपनऊ अवध बनारस प्लाहावाए वानपर जीर बिहार म नानि न भीषण
रूप गरण किया।

कूति का दमन — वम भयानक नानि वा दगसर अग्रज ता पहल
घरन ये कितु वाए मे बड ही साहम म काम किया। निममता तथा नगमता
पुत्रक नानि का दमन किया गया।

दिल्ली म विषय प्राप्त कर बहादुर ग्राह का रगून भज दिया गया। वहां
पर उमकी मृत्यु ८७ वष की अवस्था म १८६२ इ० म हा गई।

बनारस म अग्रजेन म्मिया और वच्चा पर काफा जयाचार निय और
उमकी गगत हत्याय की गई। किमाना का फमए नष्ट करन वग भा विद्राह
की जमि गान्त कर ली गई।

वांगा म नामा की राना नमाजाए जाठ लिनो तक जम्य साह म लिन
सत तगानार तगाए करता रहा। तकिन कुछ दग द्राहिया न अग्रजा म मिन
कर लिन का फाएव सात लिया। जय स्थाना की भाति यग भा म्मिया
बच्चा और पुम्पा पर अग्रजा त गगसतापुत्रक जयाचार टुण। हयायें भा
की गई। जन म राना भा का चारगा टुइ महन म निकल गया और गी मान
का याथा करन रावपा पए चा। यग पर जय फानिवारी भा व। लिलु
अग्रजा न यग पर भी घाना वान लिया। राना यग पर भी अपुन घाना
त तगा। १७ जन १८७८ का अग्रजा न नानिसागिया ना धर लिया।
नयानत तगाए टा। राना उडन-नरन गदुजा म धिर गइ धो। मारा
पाएर वन निरन गया। पर गदुजा न भी पाछा नहा छोटा। फरन उगा
घाना एव नाल म गिरकर मर गया जिमग राना आहत ना गया। लिलु म
अरुम्पा म भी मम अलक्षित गदुजा का मारन किया और अरुकर १८ जून
का नाम का तगाए क म्मानि म हा म्मन मिधारा। उमका भूम रामचंद्र राव
न घाम का पिता बनारस उमकी ताग ना म्म कर लिया। इन प्रकार गाना
अग्रजेनो मे हाथ म चना गया।

बिहार में नी प्राप्ति का ज्ञाना न प्रचण रूप धारण किया। जारा व
 नियम्न जगतापपुर व जमातर बाव कुँजर मिह जा अम्मा वष व वृत् ३
 नरी नगा म भी बाजाता का लहर लोहन लगी। य द्य प्राप्ति की प्रचण
 ज्ञाना म दूद पत्ते। उन्हात जाजमगत् व नर जारा तक म प्राप्ति की आय
 मुतागयी। उनकी जीत हानी रहा और य उद्द हात दृष्ट भा लहन रह। ८
 अत्रल १८/८ ६० का लन-नदत ही प्राप्ति वीरगति प्राप्त की। नना
 तनग भाई अमर मि भाग गया। उमन अपना गप जीवन कहीं और तम
 यात किया नारा राता नना विहाग भी स्पष्ट तरत म जाय है।

प्रकार बिहार म भी प्राप्ति की प्रचण प्राप्ति का गमन किया गया।
 प्राप्तिगिया व प्रमण नना अय गमाप्त हा धर थ। अय वनत नाया
 गप, गन गाहर और विराज गा वच गय व। नाया टाप ग्यातिपर म
 १० जून व गायन हा गया। फिर अतीपुर २० जून का अग्रजा व हाथ म
 गितन गया। अय जात पीर गना लौन लगी। नायाटप रक्षिता भारत
 १० विहाट भठगाता रहा। २१ सितम्बर १८५८ का वह बागसा के गगत
 म वाटर निवता। नना प्राच लय प्राप्तिगारा मरदार मानमिह व अग्रजा म
 जा मिता व तारण व भिन्न व वाट नाया १२ जनवरा ता इट्टा
 पत्ता।

१० जनवरा ता नाया गन गाहर और विराज गाट का गुण गभा ता
 रही थी। नना हा म हता ता तान व वारण नाया का कहीं ग नाग
 जाता पत्ता।

फिर नाया रात गाहर और विराज गाट अय माधिया व पाथ २१
 जनवरा का अरर व गमाग गितार म प्रसट २०। अग्रजा न नना
 फिर पाट्टा किया किन्तु फिर हार माना पदा।

लनागाया गतिपर अय मित्र गजा मान मि का गरण म गन।
 तितु उनरा निश ही उमन का उनक गाथ विनामपात किया। एत-
 दम्प व ३ अत्रत १८५९ २० का ता अरपा म आता रात ता ६२ कर
 दिग लय और जारत माट का लपता म गय गय।

फिर उन लर लपता पनाया गया। १८ अत्रत का ज्ञान का लप
 गमात हना और नाया २ व व पीता का गजा हा ग जार मन् १८/१९
 नना-अमर का गायन। नना दम्प दना का अलिना मुतागिता है।
 नय प्रकार म लर लर करत मि ह का अग्र व। दुातर गता कर दिया।

क्रान्ति की विफलता के कारण

१. क्रान्ति का समय से पहले आरम्भ हो जाना — विप्लव का एसी धारणा है कि क्रान्ति व विफल होना का सबसे जवदस्त कारण था समय व पहल ही आरम्भ हो जाना । यदि क्रान्ति निश्चित समय पर शुरू हुई होती तो भारत में ब्रिटिश सत्ता का उन्मूलन हो गया होता ।

२. क्रान्ति का स्थानीय होना—इसका कारण यह भी हो सकता है कि यह क्रान्ति सार्वजनिक नहीं बन सकी । यह जहाँ-तहाँ छिपछुप रूप से ही फैली जिस दबा दिया गया ।

३. सफल नेता का अभाव —जहाँ-तहाँ भी क्रान्ति हुई वहाँ क्रान्ति कार्यवाही का नेतृत्व करने वाला कोई नहीं था । सभी मनमाना करते । यह भी क्रान्ति की विफलता का एक कारण है ।

४. राजाओं की स्वामिभक्ति —कुछ भारतीय नरेश एम. व. जा. अंग्रेजों का अपना 'सुभचिन्तक' मानते थे और उन्हीं का स्वामिभक्त बन तथा क्रान्ति का दमन करने में अंग्रेजों का साथ दिया । जिससे क्रान्ति असफल रही ।

५. आर्थिक अभाव—क्रान्तिकारियों का 'सुख' में ही काफी समय तक वे गुलामगाराने न किया किन्तु बाद में उन्होंने दाना-पत्त कर दिया जिससे उन्हें आर्थिक विप्लवों का सामना करना पड़ा ।

६. कृषकों का असहयोग —इस क्रान्ति में क्रान्तिकारियों का कृषकों का सहयोग नहीं प्राप्त था । यद्यपि वे जहाँ-तहाँ विद्रोह नई क्रान्ति का प्रयास किया ।

७. अंग्रेजों के लिए समय की अनुकूलता —१८५७ ई. का क्रांति अंग्रेजों के लिए अनुकूल रहा । क्योंकि उस समय तक चीन और प्रिमिया के युद्ध समाप्त हो चुके थे और अंग्रेजों की सत्ता विप्लवों की दमन करने के लिए काफी थी । अधर पारस की भी पराजय हो चुकी थी जिनसे उन्हीं का न तो कोई खतरा था ।

एक प्रकार क्रान्ति की असफलता व जनता का कारण है ।

क्रान्ति का महत्त्व —भारतीय इतिहास में १८५७ ई. का क्रान्ति का बहुत बड़ा महत्त्व है । समाज व बंधन में जनता को मुक्त करने का यह अन्तिम और उत्तम प्रयास है । अतिसमय क्रान्ति न होकर समाज को विप्लवों का स्वतंत्र बनना पड़ता है ।

१ जून—दादा भाई नौरोजी पुण्य तिथि

पूय तयारी — एक दिन पूय मंत्र का दादाभाई नौरोजी पुण्यतिथि की गृह्यता दे श्री जायगा । इस पुण्यतिथि का सफाई विशेष रूप से करेंगे और पूय यज्ञ भी पूर एक घण्टे तक चलाया । । इसके उपरान्त सभी छात्र एवं शिक्षकमण्डल एवं स्थान पर एकत्रित होकर विचारा का जादान प्रदान करेंगे । तब पत्र-त्रिपथ में भाषण देगे निम्न पत्रों से और कविता पाठ करेंगे । भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम तथा बांग्लादेश का इतिहास बतलाया जायगा और यह भाषणात्मक जायगा कि कहाँ किस प्रकार स्वातन्त्र्य संग्राम में भाग लिया तथा यह कहाँ नहीं लगे पाना मिली । दादाभाई किस प्रकार स्वतन्त्रता संग्राम में प्रवेश स्वयंभू रहे कि प्रवेश १८५७ ई० की क्रांति विफल रही और समय क्या क्या गाँव और कानियाँ हुए ।

दश की राजनतिक अवस्था — देश मुगलाना का अजीब में जकड़ा हुआ था । ताग जातदी के त्रिपे पाँच बला रहे व । त्रिपु अश्रेया के समान एन ने चत रहने थी । तम समय का वायमराय ताग रिपन था । दादाभाई नौरोजी जम राष्ट्र मंत्रका और दशभक्ता न जाता में जाजाता की तन्त्र दादाभाई त्रिपु जायगा फट और जाति पाति के भयवर भद के कारण लहर गात हो गए । मन्त्रा तागा न अपनी जान की बाजी लगा था और भारत माँ के चरणों पर अपने का उत्सव कर दिया । त्रिपुण्यत में यथा स्वर मुनाए पठन का—

गहीला का चिताया पर लगेंगे हर प्रग मंत्र

यवन प मरने वाला का मना रायम तिगा हागा ।

जान हम मधुमुष तनका नाम औरगजय के साध तन है त्रिपुण्यत मी मूर गहीला हाकर हम आजाता त्रिपुण्यत । दादाभाई नौरोजी के अमर गहीला में त एन थे ।

कार्गेश का इतिहास — ताग में एतना नहा रहे म सत्र ताग एन अश्विन भारतवाय मण्डल का जासन्धनता मन्मूग करत तग । तन्त्र त्रिपुण्यत का अश्विन ताग विशय करत त म अश्विन म मन्त्रा त है मुनन पर भारतवाय एन अश्विन मण्डल का जास प्ररित हुए । तमी समय एतन एकत्र त्रिपुण्यत ड्यूम (A D Hume) नामक एन अश्विन मन्त्रकारी कर्मचारा न त्रिपुण्यत मन्त्रिण ग

अभूतपूर्व काय किया और राष्ट्रीय स्वतंत्रता-आन्दोलन का जागे की जा प्रयास ।

दादाजी जगाव के समान यह उदार और चायप्रिय तथा गान्धि के प्रबल समर्थक थे । वे कहे करते थे कि हम भारतीय सिमी एक बात में यत्न करते हैं जो कहते हैं कि यद्यपि किमान तनिक मद बुद्धि है किन्तु यदि एक बार उन्हें वास्तविक मानसता पा जाय कि वह अच्छी और उचित है तो अपने आप उस काय रूप में परिणत किये जाते हैं प्रति विद्वन्मते हा सकते हैं । उनका कभी सिमी सफलता में अत्यधिक प्रसन्न होना था और न सिमी विफलता में अत्यधिक दुःखी होना था ।

काग्रम में मधु में प्रथम बार स्वतंत्रता का माग करने का प्रयत्न भी दादाजी का ही है जिन्होंने १९००-०१ में महापति के भाषण में कहा था— हम बाइसियायत नहीं चाहते हम तो चाय चाहते हैं । हम स्वशासन अथवा गवर्नट और अन्य समितियों का माग करते हैं । जब काग्रम में गरम और गरम दान के नताजा के बीच खुला विरोध चल रहा था तो इस मजबूतपुण्ड्रिग में पितामह दादाजी ने अपनी चातुरी एवं व्यक्तित्व से एक मधु के कारण जो कलकत्ता अधिवेशन में सर्वप्रथम घोषणा का 'स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है जो उम प्राप्त करना ही काग्रम का एकमात्र उद्देश्य है । दंगल उपरान्त उन्होंने सावजनिक जावन में विश्राम ग्रहण कर लिया और १९१३ ई. के १ जून को उनका देहावसान हो गया ।

उस्तुत दादाजी जन्मा के उच्च मरक के और वे स्वतंत्रता के परम पुजारी एवं जनस्य उपायक भी । समाजिकी भावना उनमें बड़े बड़े रूप में थी और समस्त जावन ही समाजिकी में पूर्णरूपेण प्रभावित थी । उन्होंने अपने जीवनिक में समाजिकी के सिवा में उम स्थान का पाया था जिगक सिवा उनका ही उद्देश्य नर मरने के । काग्रम में उनका सिषय में सिषा है— यदि सिमा मनुष्य में दवायग होना है तो वह उनमें सिषमा है । दादाजी का नाम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के स्वच्छ नीतायन में उग्र धरत गान्धिका में समस्त काय उद्देश्य के समस्त निरन्तर और निरन्तर रूपेण ।

निष्कर्ष — काग्रम का नाम कि सिष तन मन उन अर्पित करेना चाणिक और जनसा प्रवमा कभणा में उमका मवा ररना चाणिक । दंगल समाजिकी का

नामम रमन वा मन्व चण्ण रमना चान्णिय । तागा म एवता आर मगटन
 लाने का वाणिग करना चान्णिय । एण एण आर पायप्रिय ढाना चाहिण ।

प्रश्न

- १ दादा साहू नाराज, क समय का देश की स्थिति कैसा था ? कांग्रेस के
 स्थापना किस किमन कब और कहा का ?
- २ कांग्रेस न क्या-क्या किया है ?
- ३ दादा साहू नाराज का जीवन सारोप म प्रस्तुत कर ।
- ४ उनक जीवन म आपको कौन-कौन सी शिक्षा मिल हाता है ?
- ५ भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम की प्रथम लड़ाइ कब हुई थी और उसके बारे म आप
 क्या जानत हैं ?



चिनरजनदाम घर म ता च ५ जाइ० मा० १० का परीक्षा पास करन रिनु अनुतीण हान व प्राद व वहाँ म बैरिस्टर हावर लौट । १८९८ ई० म विजनी स्टेट व लीवान वरदा प्रमाद की कया वासतात्वी व साथ इनरा पाणिग्रहण सम्कार टुजा ।

इ गलण्ड म लौटन व उपरान उन्हानि कलकत्ता हाक्काट म अपना जम्हाम शुरू किया । य प्रारम्भ म ही स्वतन्त्र विचार व ५ । हाइनाट म गीध ही इनकी बहुमुखी प्रतिभा फूट पड़ी । इनकी प्रसिद्धि बढ चली । इनका प्रसिद्धि का एक और कारण है । वह यह कि जिम समय साइ कजन महादय रायमराय ५ उम समय बगाल का एा भागा म विभक्त करन की बात चला । एा म हलचल मच गइ तथा बगानिया व हृदया म एव आग ही भटक उठा । श्री मुन्नाद्रनाथ बनर्जी के नतृत्व म जारो का आदानन प्रारम्भ हुआ । उगा ममय २ मई १९०८ ई० म बम बनान का कुछ सामान एव कारतूमें भा मिली और कई पत्र भी मिले । इन पत्र व जावार पर ३८ व्यक्तिया पर राजद्रोह का मुकदमा चला । ब्रिटिश सरकार ना जार म कलकत्ते व मुप्रसिद्ध बैरिस्टर मि० नाटा ३ ।

आमामिया की आर मे बाण नहीं था । एम समय निम्पूह जीर निपण शार काम करनवाले की चम्बर थी । इसी समय एावधुदान जी का जावि नाव हुआ । जाठ महान तर मुकामा चरना रहा । अत म इनका जान हुइ । जीत हान ही इनका म्यानि दूर दूर तक फन गई । ममम्त एा म इनकी चचाण एान लगा ।

एाका व एत्यगा म इहान अपन त्याग का परिचय लिया । एतम उनका एधनि का द्वार खुल गया । इसी मुकाम ३ कारण व एावधु व नाम म पुरार जान लग ।

एानि बैरिस्ट्री म वएन एाय अजित विय रिनु दग-मना एनु आर गरीबा म सितरिल कर लिया ।

१९०१ ई० म उन्हानि राजनीतिक क्षत्र म पलापण किया । पाय हा इनकी गणना काग्र म व महारथिया म हान लगी । १९०६ ई० म सादाभा गौराजा व मभापनिव म राष्ट्रेत व अधिवान म य बवन प्रतिनिधि व रूप म प्रम्नुत हुए । १९१७ ई० म भवानीपुर का राजनीतिक सम्मनन एन नतृत्व म बाफी गफल रहा । १९१० ई० म रीनट बिन पास टुजा । एम बिन का गभी भारतीया न विरोध किया । इम सत्याग्रह के कारण सरकार

चाहिए। विमा भी व्यक्ति का उचित सम्मान करना चाहिए। अपना पराया का भेद भाव नहीं रखना चाहिए। सवां का समान देखिए व लड़ना चाहिए। सवां और महायज्ञा में कभी भेद नहीं मानना चाहिए। गणतंत्र व्यवस्था का सकार करना चाहिए।

प्रश्न

देशवर्ष का क समय में का राजनैतिक प्रवस्था रमा था ?

उनका जीवनकाल काल में प्रस्तुत कर।

- २ राजनीतिक जीवन में उनका कब पदापण हुआ ?
- ४ इनका कान-कान से "मुख काय किये ?
- ५ गणेश्वरधु के नाम में क्या पुकारे गाने ?
- ६ कानों किस पार्टी का स्थापना का था ?
- ७ इनके जीवन में आपका कान-कान में शिक्षण मिलती है ?

१८ जून—महारानी लक्ष्मी बाई

पृष्ठ नूमि — १८२६ ई० में इनहोजी इगलड लौट गया और नाइचिंग गवर्नर जनरल हाकर भारत आया। इसवे गायन-यात्र की मदद महत्वपूर्ण घटना १८२७ ई० की प्राति थी। ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना हुए सपभग गठाली पूर्ण हो चुकी थी। साम्राज्य विस्तार त्यरिल गति में हो रहा था। भव इन अ प्रजा के विरुद्ध बहून में दुःख उठ खड़े हो गए। उनका भारतीय नरुण और सरदारों के मस्तित्व में अ प्रोजे विरोधी भावनाओं का विकास कर रही थी। इहा विरोधी नावनाजा के फलस्वरूप बहून-न राजाओं ने घट्यत्र एक मुठ करन अ सरका के पार भगान का प्रयत्न किया किन्तु वे असफल रहे। समय-समय पर छात्र-छात्र चलक हात रहे। किन्तु सबसे बड़ा भयकर और सगठित विद्रोह १८५७ ई० में हुआ। इसमें नाया टाण शहा साहब और कुवर गिट के प्रमुख हाथ रहा। इही में यामी की रानी लक्ष्मी बाई भी थी। बिहाल सामा एक आस पास इनारा में अ प्रजा के दूर छटा किया।

जोखन घत — फ्रान्सिया के गिबजा में देग का स्वतंत्र बरन के नियम १८५३ ई० का दंग-यात्री के नि में सामा एक आम-याम के लक्ष्मी ने अपनी मानवृद्धि का अपने लून से सीया। सामा में प्रान्ति का नेतृत्व यमा बाई कर रही थी। बिहार एक सपुन शान (उत्तर प्रान्त) के कुछ जिन में कुवर गिट तथा महाराष्ट्र में नाया साहब एक नागपुर एक मनारा में ताया टाण में उग भयानक प्राति का मधानन कर अपना चतुराई और प्रविजा का परिचय किया।

लक्ष्मी बाई का जन्म यनाया में काठिन यनी १८ मकर ८९९ विजयान, नारायण १९ नवम्बर, मर् १८३५ ई० में हुआ था। इनका पिता का नाम मोग इन जी और माता का नाम भागारजी बाई था। बचपन में इनका नाम मन्तु बाई था और शायद इही नाम से ही कुछाया में जन्म था। जब मन्तु बाई ६ वर्ष की थी तब ही इन्होंने माता का स्वर्गगत होना देखा। किन्तु माता पिता का जन्म का न मन्तु बाई के कभी भी माता का जन्म का या स्वर्गगत नहीं। नारायण यनाया के जन्म हुए माता का जन्म और माता

माहव के साथ म मनु बाई की गिभा का प्रारम्भ हाता है। इनकी बुद्धि बडी ही कुशाग्र थी। खेल खेल म ही इन्हाने थोडी-बहुत शिक्षा पाया।

सन् १८४२, ई० म झाँसी क राजा श्री-गंगाधर राव के साथ मनु-बाई के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। ममुराल म आने पर मनु बाई महारानी लक्ष्मी बाई क नाम से पुकारी जाने लगा।

लक्ष्मी बाई को एक पुत्र भी उत्पन्न हुआ था किन्तु दुभाग्यवश तीन महोने के पश्चात ही मृत्युनाक से उठ गया। इस पुत्र शोक से राजा गंगाधर राव का बडी गहरी चाट पहुँची और वे उमा दुख से बीमार पड गये। इस पुत्र गोक को दूर करने के ६ साल से किसी बालक का गोद लन की बात साची गई। अतः समीपस्थ कुटुम्ब म ही ये एक पचवर्षीय पुत्र का दामोदर राव नामकरण कर गाद लिया गया। इससे महाराज गंगाधर राव की अवस्था म कुछ तो सुधार आवश्य हुआ। किन्तु पुन वे बीमार पड गये और अततागत्वा व २१ नवम्बर सन १८५३ ई० का उनकी मृत्यु हा गई।

महाराजा गंगाधर राव की मृत्यु क उपरात महारानी लक्ष्मी बाई न झासा राज्य का प्रबन्ध स्वय अपन हाथा म लिया। वे स्वय मन्तना वग म दरवार किया करती थी। उस समय भारत का लॉड डलहौसी था। उसन दग क भीतर के दक्षी राज्या को हडपन का नीति अपनाया। डलहौसी की नीति क गिकार नागपुर सतारा, जबध इत्यादि राज्य हा चक थ। उसकी गद्धर्षिट नामी पर भी पडी। और झाँसी का उसन ७ माघ १८५४ का त्रिटिंग राज्य म मिला लिया। इससे झाँसी के लाग बड ही नुड हुए। लक्ष्मी बाई न उमगाचन्द्र बकील जीर एफ यूरापीयन को वाट जाफ डाईर-कर लडन म भी भेजा किन्तु उमगा बाई भी परिणाम न निवला।

अनहौसी न राज्य ता लिया ही। उसन धम गाम्त्र की आर भी उंगनी उठाई और दत्त पुत्र की नीति का उल्थन किया। हिंदू धम गाम्त्रा नुमार दत्त पुत्र भी जीरन क अपन पुत्र का भाँति उमगा मारी सम्पति का अधिकारी माना जाता है। धम का आधान हाने म हिंदूआ के हृदय म द्वेषाग्नि प्रवृत्त हा उठी। उमी जग्नि न गन गने १८७३ ई० का विद्रोह का रूप धारण किया। लक्ष्मी बाई जसी अमराजा पर विन्वाग रगन वाली महिला का भी विद्रोहिया म सामिन कर लिया गया।

गामी की रानी अग जा की उग दूरनाति म जल्पन नुड हुई। कुछ समय तक तो उन्हाने शान्ति म भाग नही लिया। किन्तु बाप म उहनि

सना का संगठन कर अग्रजा का जुटकर मुकाबला किया। उमका दमन करने के लिये सर ह्यूराज, झाँसी की आर आमा। उसने २३ मार्च, १८५७ का युद्ध की घोषणा की। रानी ने स्वयं सना का नेतृत्व कर अग्रजों के दौड़ लड़ कर दिये। पर कुछ स्वार्थी व्यक्तियों ने अग्रजा की कूटनीति में आकर हाहर के पश्चिमी दरवाजे का भेद बता दिया। जिसमें अग्रजा सना हाहर में प्रवेश पा गई। झाँसी की सेना ने उसका सामना किया। इसी समय दूनरा द्वार भी टूट गया, जिसमें गोरी सना अधिक सना में आ गई। २५ मार्च, म २९ मार्च तक धनपोर युद्ध होता रहा पर जान किसी का नष्टा हा सकी। रानी ने अपनी महारथ के लिये नाना साहब के पास पत्र भजा। नाना साहब अपने प्रधान मन्त्रिण तारिया टोप का २०००० फौजा के साथ झाँसी भेज दिया। किन्तु ताया जेठरी और चरखारी के युद्ध में जीत हात में राग-रग में मस्त था। जब वह झाँसी पहुँचा तो उसकी सेना पर तीर्थ चलन लगी। कुछ देर तक तो युद्ध जमकर हुआ। किन्तु बाद में तारिया का सना पराजित हाकर कालपी लौट आई।

जब रानी का दगा विनाशना हुआ गई। अग्रजा के धाव बार-बार हा रहें थे। पर झाँसी की सेना भी उमका मुकाबला अदभ्य उमाह छव माहस में कर रही थी, किन्तु जीत का सम्भावना न दग महाराजा न किले में निकल चलन का राय थी। भी कट्टर बारा के साथ महाराजा की बाहर की बाहर निकल पड़ा। दनक पुत्र दामास्तर राव का धानी ने पीछे पर बांध दिया और जानरा के लिये खाना हा गई। शर्मा अग्रज का झाँसी पर अग्रजा का अधिकार हा गया। म्पर राना ने ४ घट में १०२ मान का रास्ता लय करने कायना पहुँची। जब ह्यूराज की मालूम हुआ कि पुत्र संगठित हाकर झाँसी पर चढ़ाई करने की योजना बन रहा है तो वह कायपी के लिये प्रस्थान किया। कायपी में ६ मील दूर गतावना गीव में ही युद्ध शुरू हा गया। संगठित दूनरा के अधीन ग्वात्रियर का सेना ने भी अग्रजों के विरुद्ध चढ़ाई की, जाल का विद्रोहिया का अवश्य हुई किन्तु उम विजयमानाग में घुर्वाना राम ग्वात्रियर मगा।

दूम कि मजूर बाट का सेना दगापुर में पहुँच गई। अब यही पर जमकर युद्ध हुआ। इसमें अग्रजों की जीत हुई और कायपी पर उनका अधिकार हा गया।

अब यही में सगरी बाई और ग्वात्रियर टाप भागने लगे। २० मई, १८५८ का १७ जे ग्वात्रियर पर बरका कर यही पर डेरा खाना। इस जाल में राज

साहब और वात्पा टोपे ने ग्वालियर के धन-को राम रंग म पानी की तरह बहाना गुरू कर दिया । इसी बीच ५ जून को सेनापति नेपीयर की अधीनता में अंग्रेजी सेना न मुरार की छावनी पर अधिकार कर लिया । १७ जून, १८५८ को ब्रिगडियर स्मीथ ने युद्ध का डका बजा दिया । सर ह्यूराज ने ग्वालियर पर आक्रमण कर दिया । पर वह परास्त हो गया । दूसरे दिन पुन दुग पर आक्रमण किया गया । इस बार ग्वालियर की सेना पीछे हट गई और रानी की सेना अंग्रेजों के बीच घिर गई । अब रानी ने भागना हिनकर समझकर शत्रुओं को नष्ट करते हुए बाहर आई । पहले दिन ही युद्ध में रानी का घोड़ा घायल होकर गिर पड़ा । जिससे मृत्यु हो गई । आज वे एक नये घोड़े पर सवार थीं, पर रानी का पीछा अंग्रेजी सेना कर रही थी । पर दुर्दैव से नामने एक नाला आ गया । नया घोड़ा होने के कारण वह उस नहीं फाद सका और वहीं अड गया । तब तक अंग्रेजी सेना भी आ पहुँची । जब रानी जवेली और अंग्रेजी सेना अधिक । फिर भी हिम्मत न हारी और मरते दम तक उन्होंने शत्रुओं से पूरा बदना लिया । घायल रानी को पास ही बाबा गंगादास की कुटिया में ले गये । यही पर ज्येष्ठ शुक्ल ७ सवत १९१४ का इनका स्वर्गवास हो गया । रामचंद्र राव नामक भृत्य ने उनकी लाश का घाम की चिता पर रखकर जला दिया । मृत्यु के समय उनकी अवस्था २५ वर्षों की थी ।

इसी तरह —

रिखा गई पय, मिखा गई, हमको जो सीख सिखानी थी ।

खूब लड़ी मरानी वह ता झाँसी वाली रानी थी ।

आज रानी लक्ष्मीबाई हमारे मध्य नहीं है । पर उनकी स्मृति हमारे मानस पटल और हृदयपटल पर मदव अंकित रहेगी । आज भी क्षामी आवाज है । जा भी जाते हैं, उन्हें अरस्मात राना की याद आ जाता है और श्रद्धाञ्जलि स्वरूप दो चार अश्रु मुमन बिबर कर चले आते हैं । घायल थी वह वीर रमणी और घायल थी वह भूमि जिसने ऐसी महिमा का जन्म रिया । आज आवश्यकता है देश को ऐसी रमणी का जो देश के नव निर्माण में और समाज के नवोद्धार में मन्त्रिय हाथ बढ़ाये । जन-जन में जागृति पैदा करे, जिस दंगलर विषय की ओर चकाचौंध हो पाय ।

निष्कर्ष — पढ़ने लिखने में खूब मन लगाना चाहिये । वरपन में ही निरंतर होना चाहिये । कभी भी लगातार मन्त्र नहीं होना चाहिये । प्रत्याप

योग अधम व विग्रह लटन व निये मग तत्पर रहना चाहिये । अपनी मातृ भूमि का स्वतंत्रता कायम रखन व निये मन्त प्रयत्नशील रहना चाहिये । एक साथ सगठित हथकर दुस्मना स सटना चाहिये । दुस्मना स पीछ व भी भी नहीं हटना चाहिये । किसी तरह की विकट परिस्थिति आ जान पर भी विकन नहीं हानी चाहिये और धय स वाम रना चाहिये । सब प्रकार के कष्ट का मुम्कुरान हूण करना चाहिये । कार्द भी वाम निष्काम भाव स सवा व निये हाना चाहिये और काय करन व पूव उगव फल की आगा नहीं करनी चाहिये ।

प्रश्न

- १ सन् १८१७ की क्रांति क हान के कौन-स कारण थ ?
- २ क्रांति का पृष्ठभूमि को किन किन लोगों न तैयार किया और उनमें उन्हाने कौन सा काय किया ?
- ३ हम क्रांति में रानी लक्ष्मी बाई का कौन-सा हाथ रहा ?
- ४ रानी लक्ष्मी बाई का जीवन में किन में प्रयुक्त करें ?
- ५ रानी लक्ष्मी बाई की प्रसिद्धि क कौन-स कारण हैं ?
- ६ १८१७ ई० की क्रांति के कौन-स परिणाम हुए ?
- ७ क्या हम हमें जो को नीति स महमत हैं ?
- ८ उन्हाने भारतीयों की रक्षा के लिये कौन सा काम किया ?
- ९ ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के लिये इन्हीमी न कौन सी नीति बनाने और उसके क्या परिणाम हुए ?
- १० किन किन कारणों स १८१७ ई० की क्रांति महान् हैं ?
- ११ क्या यह मात्र सैनिक विद्रोह था या जन आन्दोलन ?
- १२ लक्ष्मी बाई के जीवन स भारतको कौन सी शिक्षाएँ प्राप्त होती हैं ?

२३ जुलाई—तिलक जयन्ती

पूव तयारी—दा दिन पूव सरो को तिलक जयन्ती की सूचना दे दी जायगी । जयन्ती के दिन विनाप रूप स मफाई और सूत्र-यन करेगे । सूत्र-यन में रामायण का पाठ हागा । सूत्र-यापरात गीता आर गीता रहस्य का पाठ किया जायगा । इमके बाद काग्रेस का मशियत इतिहास प्रस्तुत किया जायगा । स्वतन्त्रता का इतिहास भी स्पष्ट किया जायगा तथा यह बतलाया जायगा कि श्री तिलक को स्वतन्त्रता का जाग भडवान में किस प्रकार और कितना सहयोग देना पना । फिर उनक महान जीवन पर भी दक्षिपान करत हुए यह स्पष्ट किया जायगा कि इहान अपन जीवन स कौन कौन से मत्वपूण काय किया । गान्धे एव अय नताआ क साथ तिलक की तुलनामक विचचना भी की जायगी और साथ ही तिलक की महानता पर भी दक्षिपान किया जायगा । इमी प्रकार जनक चर्चा चलेगा । जन स इन सभी कवा एव भाषणा को सजलित कर पुस्तका वार रूप दे देंगे और पुस्तकानय में सुरक्षापूर्वक रखा देंगे ।

जमन्मान का भौगोलिक परिचय — तिलक का जम महाराष्ट्र र रना गिरि स हुआ था । महाराष्ट्र एक प्रायद्वीप है । यह भागल महाराष्ट्र राज्य स पडता है । महाराष्ट्र एक पहाडी जगत है । पथरीली जमीन रहन क कारण उपन कम हाती है । अतः क लाग स्वभावन तटन भिडन स हठे-बन्ध एव मजबूत हात है । यहाँ पर वर्षा कम हाती है । गर्मी विनाप पडती स विन्तु समुद्र निकट रहने क कारण कुछ ठंडक रहती है ।

जमन्मान का ऐतिहासिक परिचय — जन गान्धे का जम हुआ था उम समय अंग्र जा क पर भारत स अच्छी तरह जम चुक थ । कुछ सिमा स प्रच भी राज्य कर रहे थ । स्वतन्त्रता क लिए हाड मची हुई थी । तन क बड जने जना लाग राजनीतिक जवाड स कमर कम कर उतर रहे थ । फिरजाह महता दाग भाई नोराजी एव महान्व गावित्त राणा हे न्यायि प्रमुग नताआ स स थ । य लाग तन का जनता का जागृत कर रहे थ— उअरेतिन कर रहे थ । उनम प्राति क अगुर का प्रम्फुटिन कर रहे थ । जन १८५७ ई० को प्राति समाप्त हा चुकी थी तितु प्राति का चिनगारिया अभी भी लाग स बत मान थी । लाग तन चिनगारिया का गुनगान का अयत प्रयाग

१९ ई० के बीच म उहाने पत्रा म छपे लखा द्वारा सावजनिक जीवन म सक्रिय हाथ बटाकर अपनी निभयता और विद्वता का परिचय लिया । धीरे धीरे उनकी लोकप्रियता बहुत बढ गइ । वे जनता म दशभक्ति एव राष्ट्रीयता की भावना का उत्तेजित करना चाहत थे । शिवाजी के उत्सवो से उहाने जनता को राष्ट्रीयता की गिना दी । इससे वे जनता क बीच बहुत लोकप्रिय हो गय । अन व लोकमाय बहलान लग । वे कहा करते थे कि गीता के उपदेशानुसार ता हम गुर्भा जीर सप्रधिया का भी सहार कर सकन हैं और हम किसी बुराई क पात्र नही हगि यदि हमने यह काय स्वाय हित की भावना से नही किया है । इस प्रकार उन उत्सवो क द्वारा उहाने केवल जनता को जाग्रत ही नही किया प्रत्युन राजनतिक आदोलन म लडने योग्य बना दिया । अकाल पीडित जनता की सेवा करने के लिये उहाने एक स्वय सेवक दल का मुसगठन भी किया ।

पूना म प्लेग का बग जोर था । ऐस समय म दा नवयुवको ने प्लेग कमिशनर मिस्टर हैण्ड ओर एक अन्य अग्रज को गोली से मार दिया । सरकार की ओर स उन पर राजद्रोह का मुकदमा चला जीर डेढ वष तक क रावास दण्ड दिया गया ।

महाराष्ट्र म राष्ट्रीय आदोलन को मुसगठित करने तथा शिवाजी की स्मृति का पुन जाग्रत करने का श्रेय तिलक जी को ही है । १८८९ ई० म काँग्रेस म प्रवेश किया । इनका विचार उग्र थ और काँग्रेस के गरम दल के नेता थे । इनका आदर्श था—स्वावलम्बन, सेवा और कष्ट सहन ।

१९०६ ई० म उनकी लोकप्रियता पराकाष्ठा पर पहुँच गयी थी । उनका प्रभाव लोगो क हृदय पर खूब पड चुका था । १९०८ ई० मे तिलक को राजद्रोह के जुम म ६ वर्षों का सजा हो गयी । उन्हें निर्वासित कर छ वर्षों के लिए जेल भेज लिया गया । तिलक के साथ इस धोर अत्याय से भारतीय क्षुध हो उठे । जन म ही उहाने तीन अमूल्य प्रया की रचना की । जिनका नाम 'दो आर्किटिग 'हीम ऑफ़ दी वेराज' और गीता रहस्य है । इनम 'गीता रहस्य का विचार बडा ही व्यापक सुदृढ़ तथा परिपक्व है जो तिलक जी की जाज्वलत प्रतिभा का ज्वलत प्रतीक है । तिलक आपात्मस्तक राष्ट्रवादी नेता थ । क सत्ता कहा करत थ कि काँग्रेस को नर्मी और राजभक्ति स्वतंत्रता प्राप्ति के योग्य नही है । क प्रथम भारतीय थ जिहाने कहा था—'स्वराज्य मरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इस लवर रहूँगा । (Swaraj is my birth right.

and I will have it) उनका मह दुःख विरवाम था कि विदगी नामक
 किताब भी अच्छा क्या न हो स्वशामल म कदापि अच्छा नहा हा सकता ।

१९०० ई० म कांग्रेस म अलग हा गय, और एनीबसष्ट व साथ कथ-
 कथ मिलाकर हामरुत आशानन म काम करने लग ।

आपिरकार १ जगत् १०२० ई० म जिम दिन अमहाय्य आन्तान आरम
 होनवाला था म० विनय इम ससार म चल बसे । मद्यपि आज इनका भौतिक
 शरार इम ससार म नहीं है फिर भी उनका व्यक्तित्व प्रतिभा एव दद विचार
 भारतीयों के हृदय पर आच्छादित है । उनके य विचार और प्रतिभा भारतीयों
 का ही नहीं बरन समस्त मानव और सारे विश्व का युग-युग तक पथ प्रदान
 करता रहगा ।

निश्चय — दूदा व लिए उद्योग हान के लिए सग तत्पर रहना चाहिए ।
 दग की सेवा बरनी चाहिए । दग की आज्ञा की कायम रखना चाहिए ।
 अपने व्यक्तित्व एवं प्रतिभा व द्वारा दूसरों व मन पर विजय प्राप्त करना
 चाहिए ।

प्रश्न

- (१) तिलक क समय देश की क्या अवस्था थी ? संसद में तिलक की ज'बनी सम्मूल
 करें ?
- (२) कांग्रेस के बारे में क्या जानते हैं ?
- (३) नये दल और गरम दल क्या है ?
- (४) तिलक किस दल के नेता थे ?
- (५) इनकी सभन प्रसिद्ध पुस्तक कौन है और क्या लिखी गयी ?

६ अगस्त-भारत छोड़ो-आन्दोलन

पूर्व तयारी—इसकी सूचना एक दिन पूर्व सभी छात्रा एवं शिक्षिका को दी जायगी। दूसरे दिन प्रभात फ़ेरी हागी। निवटवर्ती ग्रामा म ग्रामाणा वं साथ ग्राम-मफ़ाई भी हागा। सज धजकर स्कूल जायेंग। स्कूल म पना तानन हागा। आज विाप रूप म सूत्र-यन हागा। पुन सास्कृतिक मभा का प्रदान हागा। इसम राग भाषण देंग निबध पढ़ेंग और सशेष म १९४० की शान्ति पर प्रकाश चला जायगा। यह भा बतलाया जायगा कि बम्बई म ८ अगस्त को किस प्रकार भारत छोड़ा प्रस्ताव पाम किया गया और इसका क्या परिणाम हुआ। साथ ही १८/७ की महासभ शान्ति वं साथ एग शान्ति का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे।

'४२ की शान्ति का सचित्र इतिहास

दूसरे युद्ध वं प्रारम्भ हान पर ब्रिटिश सरकार ने भारत का जबरदस्ती अपना जार स मनायद्ध म सम्मिलित हान की घोषणा कर ली। इसम भारताया म पूछ-नाछ तक नहा किया गया। जब कांग्रेस न ब्रिटिश सरकार म भारतीय स्वतंत्रता वं ध्यय का स्वीकार करन वं लिए बहा तो वाई भी सतापप्रद उत्तर नहा मिला। कुछ ही दिना के उपरांत शोधोजा वं सकन नवृत्त म पात्रन की आर स व्यक्तिगत जवना जादान (Individual civil Disobedience movement) चनाया गया। इसम एग वं जनमानव नर नारिया न सहप सत्रिय भाग लिया।

१९४१ के डिसेम्बर माम म—जापान ब्रिटेन और अमरिका वं विरुद्ध महासमर की प्रचण जवाना म बंद पडा। जापानी सनायें दक्षिण पूर्वी एशिया पर अपना आधिपत्य जमाना हुई बर्मा म घस गई। एमी हानन म भारत की पूर्वी सीमा पर खतरा पना हुआ। गांधीजी को धीरे धीरे यह विश्वास हो गया कि भारतीय समस्याआ वं जटिल हान वं कारण अंग्रेजा का एम एग म रहना था। वे बहा करन थ—भारत और ब्रिटेन की एगा उगा म है कि अद्य ज ठीर समय म भारत म अनुमानित डग म हट जाय और उहान -भारत छोड़ो का प्रस्ताव चागा वं ममण रला।

we fall' एक दूसरे की सहायता करते रहनी चाहिए । सभा-मुसाइटियों में भाग लेना चाहिए और इसमें अपने विचारों को भी लोगों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए । जननायक में हाथ बटाना चाहिए और उसमें महयोग देना चाहिए । स्वतंत्रता का पीछा सदा रक्त से सींचा जाता है इसे सदा याद रखना चाहिए ।

प्रश्न

- १ ४२ का क्रांति के पूर्व भारत की वैसी अवस्था थी ?
- २ ४२ की क्रांति क्या हुई ?
- ३ इसका प्रभाव कहाँ और किसने प्राप्त किया ?
- ४ इस क्रांति का सन्तान में विवरण दें और बतायें कि इस क्रांति का परिणाम क्या हुआ ।



१५ अगस्त :—स्वतंत्रता-दिवस

पूर्व तमारी —एव महात्माजी का विधान २६ जनवरी में होना है ।

इतिहास —मच पृष्ठे ता १५ अगस्त क पीछे भारतीय स्वतंत्रता का एक बरखाजनक तथा वारतापूण इतिहास लिखा हुआ है । यह हमारे, उमर्गों, उमाहा का मार्मिक विन्तु गौरवपूण इतिहास है । या ता स्वतंत्रता का थी मणै १७५७ की पलासी का लडाई म ही प्रारम्भ हा गया था धार धीर यह जाड पकड़ता गया और १८५७ ई० म यह विद्रोह का भीषण रूप उतर पूट पण विन्तु आजादी नहा मिल सकी । १८८५ ई० म ब्रिटेन की स्वायत्ता हुई । निलक आये गानक आये । निलक न घापणा की स्वायत्त मरा जम गिद्ध अधिकार है मी का स्वर रूँगा । (Swaraj is my birth right and I will have it) पुन गांधी जी का प्राणुभाव हुआ और उमा ननुव म अहिंसात्मक प्राति फिर म गुरु हा गई । मुमुक्षु जनता ने अंगरेजों से । जनता न अपनी नीत का फे कुने की नीति उमार पँचा और प्राति म हाथ बँटान लगी । जवाहर, फल और राजद्र बाबू राष्ट्रीय प्राति क रगमच पर उतर । विजय का प्रतीक मच और अहिंसा के परम पुनीत अन्ना ने बापु न ताप और तनवारा का मुबारता किया । १९३० ई० का २६ जनवरी का थी ब्रवाहरमान न पूरा स्वायत्तता की घोषणा की । अघ जा न भारत पर दमनचक्र गजी ने चनाया । १ अगस्त १९४७ ई० म 'भारत छोडो' आन्दोलन जारी किया गया । अघ जा न दूट दाना और 'गायन करा' (Divide and rule) का नाति अपनायो । भारत की लक्षणा म विभेन लयल कर दिया और हम विच्छिन्न कर दिया । स्वतंत्रता का वरी पर मन्त्रा न अपन का उलग कर दिया । नताजा न आजादी न तिम स्वल्प का परिष्कार कर दिया । ब्रिटिश मन्त्रा न प्राति का इवान के तिम प्रयोग्य मन्त्र की विन्तु गांधीजी क मफल ननुव म मवधी जमहरमान मन्त्र राजद्र प्रमाण जय प्रसाद नारायण उरुपर मन्त्रमन्त्राई पण्य प्रवृत्ति नताथा न सक्रिय हाथ बनाया था । इन नताजा के प्रयोग ननुव म भाग उरुपारा जनता क अहिंसात्मक मन्त्रा क आग अघेता की पर न चन गयी । हमारा कुतना हमारा वरिषत, हमारा उमा स्वतंत्रता । । पापु का गताग मन्त्रा हुआ । अन्तापना मी का । नी वरिषत उरुपारा क का

१५ अगस्त, १९४७ ई० का येनकेन प्रकारेण हम स्वतंत्र हुए—हमारा देश स्वतंत्र हुआ। भारत माँ का बेटीयाँ टटी। हम नव प्रभात के दशन हुए। हमारे चिर-सचित्र सपने साकार हुए। इस खुशी में सोना-हम गा उठें—

'हम सबका' आँखों का तारा,

सब देशों से अनुपम न्यारा

जगत पिता का परम दुलारा

बच्चा का यह प्यारा है।

भारत देश हमारा है।

१५ अगस्त हपो ल्ताम का दिन है। उस दिन सदिया की तपस्या पूर्ण हुई। उस दिन काटि-काटि जनना की आशायेँ पूरी हुई। युगा के उपरान्त भारत के भाग्य न करवट बदला। अपना राज्य हुआ। इसी दिन के लिए महत्त्वा भारतीय फाँसा के तम्ब पर हसत हँसते झुल गये। बहुता न अपनी मूक गहादत के अपनी कुबानी की, जीवन के मार सुखा का ठुकरा दिया। इसी दिन के शुभागमन के लिए लाखा भारतीयों का जल यातना सहनी पड़ी और कितने तो कारावाग में ही घुल घुल कर मर गये। यही वह दिन है— १५ अगस्त स्वतंत्रता दिवस। पर इस दिन भी हम पूण स्वराज्य प्राप्त नहा है मरना—औपनिवर्गिक स्वराज्य ही मिल सका।

दापक तले अ गरा हाना ही है। उम अघेरे के तरफ काई ध्यान नहा न्ता। इस १५ अगस्त के दिन बहुजनो न खुशी मनाई होगी हपो ल्ताम में दीपक जलाये हाग और मनायी हागी अरमाना की हाली भी। किन्तु कुछक सागा न नही। उनम कुछ लाग एस भा धे जिनकी दुनियाँ में अब भी अधकार ही अधकार था। उनक स्वान रहन तब का भी ठिकाना नही था। दान गन का तन्म रहे थ। दर दर भन्क कर संजक का पून फाँक रह थ। पश्चिमा पजाब और पूर्वी बंगाल में आय हुए गरणार्थी थे। जिनकी बड़ी बुरा दगा हा रहा था। उनका भी मजान था, जह जमीन था फिर भा गरणार्थी थ। मगर उनने इन मारी वेम्नुजा का त्याग कर लिया—यस हमी १५ अगस्त के दिन। उन दिन महत्त्वा विषयायेँ आठ-आठ आँगू राई हागो, अपने पति का दुख मृत्यु पर महत्त्वा अनाय व-के विलस विनम कर सिमक-मिमकर राय हाग अपन पिता का अमामयिक मृत्यु पर किन्तु जिमा न अपनी एक दृष्टि गनी हागी इन अजनाआ और अनाया पर? क्तापि चिरी न नहा।

जनकानक कठिनादसा और त्रुटिया के उपरान्त भी १५ अगस्त भारताय स्वतंत्रता के इतिहास में एक देदाप्यमान नवा-कन प्रकाश है आता है जिनकी

राजता में हम आज तक की कमजारीयों को आद्यापान पद सक्ते हैं। दश जग है, हम जग हैं। अब हम मनुष्यता समय, अहिंसा के माग पर चल रहे हैं। पन्द्रह अगस्त का निधा प है, सवेग है—एकता ही बन है और बूट विना-गव है। इस प्रकार पन्द्रह अगस्त आया। विदेशी मत्ता को समाप्त हुई। हम इनका अधिकार मित्त कि अपने देश का बनाये या विगाडे। इस प्रकार यह मिठ हुआ कि १५ अगस्त १९४७ ई० में हम उत्तरदायी नागरिक हो गये हमारे ऊपर भारत वष का धरान या विगाडन का भार आया। इन्हा उत्तरदायित्व की प्राप्ति में हम खिणियों मनाते हैं। हम सारे बच्चा का भूल जान है, भारत का नव निमाण में मन्द हान है और विभाजन एवं विखिणिया द्वारा उत्राह हुए भारत को पुन हरा भरा करने का बीडा उठाते हैं। इसी उत्तरदायित्व का भावना के साथ हम स्वाधीनता दिवस का बड़ी धूमधाम तथा हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं।

निष्कर्ष — हम अपनी आजादी का किमी भा मूल्य पर कायम रखना चाहिये। इस दिन राष्ट्रीय झण्ड का सम्मान में घर-घर विधिपूर्वक पहराना चाहिये और देश की मदद समृद्ध समुन्नत एवं शांतिशासी बरान का सपथ ग्रहण करना चाहिये। धाननाभा सुमीवता आचना, क्षमा और नृपाना में भा अपने देश के झण्ड का मग ऊंचा रखना चाहिये। अपने बल ध्य-मानन का दन रना चाहिये हम त्याग और उमग का सपथ रना चाहिये और अपनाता चाहिये साथ अहिंसा गानि गहृयना प्रम और एकता को। हम बुद्ध मन्दायार और गौधी के अनुयायी हैं। अब हम साथ अहिंसा का अपनाय रखना चाहिये। हम इस प्रकार का प्रयास करना चाहिये कि भारत हिमालय के सिगर ग मन्त विषय के प्राणिया का मिप्रता गान्ति प्रम मन् भावना एकता आर वि ब-ब-धुव का मन् गान्तर उन्हें अनुप्रमाणित कर सके।

प्रश्न

- १ पन्द्रह अगस्त क्यों मनाया जाता है ? इसका इतिहास संक्षेप में प्रस्तुत करें
- २ पन्द्रह अगस्त का क्या महत्व है और इसमें भारतीय कौन-कौन सी शिक्षाएँ मिलती हैं ?
- ३ क्या आप इन शिक्षाओं में अपने जीवन में स्वयंसेवा का महत्व है ? अगर हाँ तो क्यों ?
- ४ इस शिक्षाओं के अतिरिक्त प्रत्येक कौन-कौन से प्रस्तावों का होना है ?

११ सितम्बर—विनोबा-जयन्ती

पूर्व तयारी —विनोबा जयन्ती की सूचना सभी छात्रों एवं शिक्षकों को दो-तीन दिन पूर्व देनी चाहिये। लोग इसके लिये खूब धूम धाम में तयारी करेंगे। जयन्ती के दिन प्रभात फेरी की जायगी। आज सफाई की भी उचित योजना रहेगी। छात्र निकटस्थ गाँवों में आकर ग्रामीणों के साथ वहाँ सफाई करेंगे। फिर सभी सजघन कर स्कूल आयेंगे। यहाँ पर विविध रूप में दो घण्टा तक सूत्र-यज्ञ करेंगे और उस सूत्र से कपड़े तैयार कर गरीबों में वितरण कर देंगे। इस दिन सूत्र यज्ञ में गीता का पाठ होगा। साथ ही 'गीता प्रवचन' का भी पठन पाठन होगा। सूत्र-यज्ञोपरांत सभी छात्रों एवं शिक्षकों की एक सम्मिलित गांठी होगी। इसमें विनोबा जी पर चर्चा चलेंगी। लोग भाषण देंगे लेख पढ़ेंगे प्रहसन करेंगे और कविता पाठ करेंगे। अंत में प्रधान जी का प्रवचन होगा। उस दिन लोग गाँवों में जाकर सभी में कुछ रुपय पैसे दान में लेकर गरीबों में वितरण करेंगे।

देश की राजनैतिक अवस्था —विनोबा के जन्म के पूर्व देश में अंग्रेजों का एकछत्र राज्य कायम था और उसका दुर्दमनीय शासन चल रहा था। लोग आजादी की माँग कर रहे थे। पर उनकी माँग का सुनने वाला कोई नहीं था। ताल बाल पान शक्कर आदि प्रमुख वस्तु राष्ट्रीय आन्दोलनों में सक्रिय भाग ले रहे थे। गाँवों का भी राष्ट्रीय क्षत्र में अन्तर्गण हो चुका था। अंग्रेज जनता पर काफी अत्याचार कर रहे थे। सभी लोग उनके पाण्डित्य तथा पैसा चिक अत्याचार में उब गये थे। उससे छत्रवारा पान का द्वार खोज रहे थे। स्वाम कर गरीबों की दृष्टि में अवसा और अनायास एवं अछूतों की तबाही थी। मानवता छत्रपतनी रही थी। अत्याय असह्य हो चला था। मजदूर मजदूर सभी एसी अवस्था को एसे व्यक्ति की कमी का महसूस कर रहे थे जो इन्हें कष्टों में उतार कर सजता। भगवान् के द्वारा प्रार्थना सुन ली और विनोबा के रूप में भगवान् कावन रूप धर कर उनका कष्टों में निवारणार्थ अवतरित हुए।

जन्म स्थान का भौगोलिक स्तर—विनोबा का जन्म महाराष्ट्र राज्य के शालाया जिले के गंगाल नामक ग्राम में हुआ था। वाराणा पहाड़ों के पार है। यहाँ के लोग काफी हठ-कठ और मजदूर जात हैं। यहाँ का मुख्य पेशावर

आय थे। वही पर वे गांधीजी से मिले। यहाँ पर उन्होंने बड़े ही ओजस्वी भाषण दिया। इससे विनावा बड़े ही प्रभावित हुए।

दुःख दिना के बाद म. गांधीजी से मिलने के लिए अहमदाबाद सावरमती जायम म. ग. यहाँ क. वातावरण से वे अत्यन्त जाकृष्ट हुए और वे वही पर रहने ग.।

एकवार बीच म. १९१७ ई० म. उन्होंने एक व. क. लिये बापू से छुट्टी माँगा और उसम. उन्होंने महाराष्ट्र का भ्रमण किया और ठीक समय पर बापू क. सामन. दाखिल हा. ग.।

सन १९०१ मे क. वर्षा म. सठ जमुनालाल बजाज के आगह. म. रहने लग. वहाँ पर पूरे आश्रम का भार. उन्हीं पर आ. पडा. किंतु उसको उन्होंने बड़ी कुशलता म. निवाहा.। उन्होंने नियमा. को बनाया और आश्रमवासियों क. अपना. के लिये कहा.।

अहिंसा सत्य अस्तय ब्रह्मचर्य असंग्रह
शरीर श्रमअस्वाद सवन्न भय वजनम् ।
सवधम समानत्व स्वल्पी स्वाथ भावना ही
एवादाग सेवा वी नम्रत्व व्रतनिश्चय ।

इसके बाद वे कई साल तक महिा-आश्रम म. भी रहे। वरीव-वरीव ३० वर्षा तक विनोबाजी बधा के समीप म. ही रहे।

सन १९२३ म. राष्ट्रीय झंडे क. जुलूम म. सत्याग्रह करन पर क. पहली बार रुद. किए गए। घाड. लिनो के बापू काँग्रेस से समझौता हुआ और सत्याग्रहा. छा. लिये गए।

म. १९३० क. नमक सत्याग्रह म. उन्होंने सक्रिय भाग लिया। इसम. भी क. किए गए किंतु कुछ ही दिना. के बाद रिहा. कर लिए गए। १९३१ ३० ई० क. आन्दोलना. म. भी जल गए। जल. म. भी क. अपना अध्ययन सम्यक रूप म. करता थ.। विा.प रूप म. गीता का पाठ करता थ.। १०३० ई० म. धुनिया जन. म. गीता पर उन्होंने अपना विचार प्रकट किया। सागा. न. उने निपि-वद. कर पुस्तक का रूप लिया और बड़ी गीता प्रवचन क. नाम म. प्रख्यात हुआ।

म. १९३८ म. पीनार म. परमधाम अर्थात् स्वग. नामक एक आश्रम क. स्थापना भी की।

सन १९३९ में व्यक्तिगत आन्दोलन में भाग लेने पर प्रथम-महापट्टी बन और
उनका नाम देना भर में रखा गया। वह तुरंत कर कर लिए गए और तीन
महीने के बाद छोड़ दिए गए।

९ अगस्त, १९४० के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में भाग लेने पर कर दिए गए
और तीन वर्षों तक मद्रास एवं मध्यप्रान्त की सिपनी जिला में रखे गये।

१०८९ ई० में जनसमुक्त कर दिए गए।
जन-आन भारत का भाष्यान्वय हुआ और १५ अगस्त १९४७ का स्व
आजादी का प्राप्ति हुई। तागा का तमघ्राणें पूरी हुई और विनावा की
तपस्या गपन हुई।

इस प्रकार आ गया सन १९५१। सर्वोच्च का वार्षिक अधिवेशन
२० अगस्त का हैराबाद के गिरारामपन्ना में होनेवाला था। इसमें विनावा
का भाग्यशापा गया था। व आश्रम में तीन महीने पन्न चलकर ७ अगस्त
का गिरारामपन्ना पहुँचे गए। मम्मलन मनापन हुआ। अति तपस्याना
और नातगात्र जि० में कम्युनिष्ठा का भयकर उत्पात मचा हुआ था। व
पन्न हा १५ अगस्त का तपस्याना के लिए प्रस्थान किया। १८ अगस्त का
पाचमपन्ना नामक ग्राम में इन्होंने पत्थापण किया। यहाँ पर व गरीबा की
रक्षा करवाया गया। मवान विनावा में कहा कि यदि २० एकड़ जमीन मिल
जाय तो हमारा काम चल जा सकता है। यहाँ पर श्री रामचन्द्र रठो प्रथम
भूतना बन जीव उहाने १०० एकड़ जमीन भूतन मगा।

इस प्रकार धीरे धीरे भूतन का बाप बड़ा और आज हमका काम बड़े
जोर-शोर से चल रहा है। माधु-ही-माधु बुद्धिमान सम्पत्ति-मान मन-मान,
माधु-मान-मान इत्यादि भाँ चल रहा है। जय तन भूतन में तागा एकड़ जमान
मिन्न बका है। गवि-न-गावि भाँ मिन्न चुक है। हमारा कामना है कि भगवान
भारत के एक परम मन का दासानु बन।

विनावा के नया में एक चर है जहाँ है बाणा में आजन्वित है
परिव्रता है जन्म में कामलता है और धामा में अन्वित्र विप्र-विप्र गति
है। व जल और माधु का प्रस्थान है कमला और कमनीयता के अवनार
है। व प्रस्थान मुग के महानि है मध्यमुग के परमसत है और अवादान मुग
के मन महानि है।

विनावा निमद है जिन्द है। व जिना जिन्-बापा का अवनर नहा
परम-परम। व न जिना में राम रम है न जिना में ईश्वर-देव। व न ठा
जिना के इन्दि हा बरत है और न पूरा प्रथम हा। यदि व जिना का स्ति

चरते हैं तो केवल एक राम की। वे किसी की निन्दा भी नहीं करत। वे सबजन सुखाय, सबजन हिताय की सोचते हैं। वे सर्वे भवन्तु सुखिन की वामना करत है।

शिक्षाएँ—दण की पुकार पर योद्धावर हाने की वामना रखनी चाहिए। बंधा की आजा का पालन एव उनका भादर सत्कार करना चाहिए। समय का पूरा ख्याल रखना चाहिए। अपनी प्रशुक्ति एव आचरण की सुधारना चाहिए और बुरी चीजों की ओर न ल जाना चाहिए। पत्र पर ध्यान देना चाहिए। साथ ही साथ स्वास्थ्य का अच्छा रखना चाहिए। शरीर को बरिष्ठ बनाना चाहिए। पसे को भलाभाति रख करत के लिए सीखना चाहिए। दीन-दुखिया की सदा सेवा और जनता जनादन की सर्वैय महायता करनी चाहिए। जहाँ तत्र हा सब स्वदेशी वस्तुओं को ही अपनाता चाहिए। कभी किसी में माया मोह या ईर्ष्या द्वेष नही रखना चाहिए। स्वावलम्बी बनना चाहिए।

प्रश्न

- १ विनोबा के जन्म के पूर्व की राजनैतिक दशा कैसा था ? विनोबा के जन्मस्थान का भौगोलिक परिचय उपस्थित करें।
- २ विनोबा के बारे में क्या जानते हैं ? उनका जीवन संक्षेप में प्रस्तुत करें।
- ३ विनोबा की प्रथम जेल-यात्रा का वर्णन करें।
- ४ विनोबा के दक्षिण के विषय में क्या जानते हैं ?
- ५ सापू से इन्हें कब मेट हुआ और उनका क्या प्रभावित हुआ।
- ६ विनोबा ने अपना आश्रम कहाँ बनवाया और उसका क्या नाम रखा ?
- ७ भूदान का आवश्यकता क्यों पड़ी, सर्वप्रथम कब कहाँ से शुरू किया गया और कौन पहला भूदानी बना।
- ८ शुरू से अन्त तक भूदान का दिशा में जो प्रगति रहा है उसका वर्णन करें।
- ९ अब तक भूदान में कितनी जमीन मिल चुकी है।
- १० आम्कन विनोबा कहाँ हैं और क्या कर रहे हैं।
- ११ विनोबा और गांधी की तुलनात्मक व्याख्या करें तथा विनोबा को सन्त और महात्माओं में अन्तर्गत करें।
- १२ विनोबा जी में व्यक्तित्व क्या तथा उनको महानता का वर्णन करें।

३१ अक्टूबर—पटेल जयन्ती

पूर्व तयारी — जयन्ती की सूचना दो तीन दिन पूर्व ही सबों को दे दी जायगी। सब लोग पहले से ही जयन्ती की तयारी में लग्न हो जायेंगे। जयन्ती के दिन विद्यालय की उल्टी सफाई होगी। सूत्र-यज्ञ का समय भी कुछ दिया जायगा। सत्राय हुए पत्राल में लागू इकट्ठे होकर स्व० पटेल के सम्बन्ध में चर्चा करेंगे। लागू भागण दोगे निबंध पढ़ेंगे, कविता पाठ करेंगे। बाद में सभी उपयोगी रचनाओं का संग्रह कर पुस्तक का रूप देकर प्रधान जी के वक्ष में रख दग।

राज्य की राजनैतिक हालत — राज्य में आजादी के लिए संघर्ष हो रहा था। आजादी की लहर मध्य व्याप्त हो चुकी थी और देशभक्ति व आकांक्षा में प्रत्येक व्यक्ति की बाटी-बाटी फड़क रही थी। लोग शान्ति करत किन्तु गरीब सरकार व जागे उनकी एक न चली। न कोई अच्छा संगठन था और न अनुशासन ही। इन्हें कोई प्रेरणा देनेवाला भी तो न था। अगर वे भी तो उनमें जनता का उत्प्रेरित करने की शक्ति न थी। कोई सुन्दर संगठन नहीं होने के कारण वे एकबार किसी कार्य को कर नहीं सकते थे। ऐसी हालत में एक ऐसा नेता का आवश्यकता थी जो इन गरीब जरूरतों को पूरा कर सके। इस शक्यता का नम में सरकार पटेल का आविर्भाव हुआ और उनके नेतृत्व में हम अग्रजा से टक्कर लेकर स्वतंत्र हुए।

जीवन वृत्त — ३१ अक्टूबर, १८७५ में यह साधु तारा-मा चमक उठा और चमक उठा गुजरान के करमसद का वह छोटा-सा भांगन। आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय होने से उनकी शिक्षा केवल मेट्रिक तक ही हो सकी। पुनः उन्होंने मुन्बारी पास की ओर गांधरा में चले आये।

कुछ दिनों के बाद वे इंग्लैंड में बरिस्ट्री पढने गये। कुछ वर्षों के बाद वे वहाँ से पूरे बैरिस्टर बनकर आ गये। अहमदाबाद में अपनी प्रैक्टिस शुरू की। कुछ ही दिनों में अन्दर के वहाँ के एक बहुत बड़े बरिस्ट्री में गिने जाने लगे। तबतक १९१८ ई० में गांधी जी सम्पारण में लीटे।

जातिवादवाला काम व हत्याकाण्ड के पश्चात् गांधी जी ने मयाग्रह आन्दोलन प्रारम्भ किया। तो बल्लभ भाई पटेल भी अपनी बरिस्ट्री पर छोड़कर मार कर गांधी जी के साथ जाँगे म्यान में कामर बसकर उतर आये। गुजरान के

गाँव गाँव में घूम घूमकर उहाँ जनता में ऐसी जागृति उत्पन्न की कि चरमे और मादी की घूम मच गयी ।

सन १९२३ ई० में नागपुर में राष्ट्रीय भण्डे की मान् मयाग की रणा व लिए उन्ही पहला कर्म उठाया । १९२७ ई० में बोरडाली के सत्याग्रह में सरदार की गिनती भवमाय भारतीय नेताओं में हान गयी और उसी समय उनके बाबा का देखकर बापू ने उन्हें सरदार कह दिया और आगे चलकर वही नाम से विख्यात हुए । १९३० में गाँधी ने नमक सत्याग्रह प्रारम्भ किया । इसमें सरदार ने सक्रिय भाग लिया । यह बढ़ा किए गए और जेल में जनहय कष्टों का सामना करना पड़ा । सन १९३१ में कराची काँग्रेस के वे सभापति चुन गए । तबतक बापू इंग्लैंड से लौट जाय थे । उनसे जान ही कुछ दिना में पुन जागृति उठ खड़ा हुआ । इसमें सरदार भाग बढ़ा किए गए और दो वर्षों के बाद १९३४ ई० में स्वास्थ्य खराब हो जाने के कारण वे वागमुक्त कर लिए गए । १९४५ ई० के चुनाव के समय दौरा करके पूरे देश में नव जीवन की चेतना फैला दी । अंग्रेजों की गतिविधियों के उत्तर में इन्होंने कहा था—'जब वाँस का स्टीम रीजर चलेगा तो सब विराधी वक्त पत्थर के समान कुचन कर चौरंग हो जायेंगे । सन १९४७ में भारत छाना प्रस्ताव का समर्थन करने में ही लिया था । फलस्वरूप वे भाग्य जनाभा की तरह जन में ठूँस लिए गए और १९४५ ई० में मुक्त किए गए ।

उनके उपरांत १५ अगस्त, १९४७ को स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ देशा रियासतों का समाप्ति बड़ी सतापजनक राति में मुलयाई और इन कठिन समय में पूर्ण प्राप्ति एवं व्यवस्था स्थापित करने का उठा ही महान बाध किया और उनकी प्रगति एक अति प्रभावक रूप में हुई ।

हमारी सत्या का कठिन तपस्या के अनन्तर हम आज्ञा प्राप्त हुई । हम मुक्त हुए । हमारे सपने साकार हो होने जा रहे थे कि जन्मान वह नारा जागमान में टूट पड़ा । हम निराधार हो गये, निरर्थक हो गये । आमुत्रा का धारा बन्द खली । रा उठा सारी जनता और रा उठा सारा हिन्दू स्नान । किन्तु धार न कृष्ण कराल हाथा धी कौन राग सकता है । आज हम सभी उनकी याद में नमस्कार हाकर श्रद्धा के शयन अर्पित करने हैं ।

सरदार पटेल अपना योगदान सगठन तथा नियंत्रण शक्ति में अद्वितीय थे । अमरिका के प्रसिद्ध पत्रकार मुर्क विंगर ने कहा था— गाँधी जी और जवाहर लाल नेहरू ने स्वतंत्रता के बाद के भारत में राष्ट्रीयता का धारण किया है । उनमें पार्टी संगठित करने की अमूर्त क्षमता थी । जिस समय

देश में हिन्दू मुस्लिम दगा छिड़ गया था तो उसका जवाब उन्होंने बड़े कठोर और धातमपूर्ण शब्दों में दिया था— 'मुसलमान यह न समझें कि लोग उनके आले और तलवार से डर जायेंगे बल्कि आत्मरक्षा के लिए हिन्दू भी तलवार का जवाब तलवार से देंगे।' इसी कारणों से भारतीय उन्हें अपना जाति के रूप में मानते थे किन्तु आंगा की गलियाँ अकस्मान्त मिश्रित गईं।

सरदार पटेल अनुशासन के बहूत बड़े उपासक थे। उन्हें भाग्य का लोह पुरुष कहा जाता था। उन्हें खतर से प्रेम था। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि ऊपर से वे कबले निन्दुर और अभिमानी से लगते थे किन्तु भानर से वे नारियल की भाँति कामल, मुग़ायम और सरसक। चापक्य की भाँति शत्रु को समूल नष्ट करने में वे विश्वास रखते थे। अपने पहलाक में भाँव भारतीय किसान की भाँति मादगी पसन्द करते थे।

शिक्षाएँ — "सब के लिए सबसेब त्याग करना चाहिए। सुसंगठन करने की शक्ति ग्रहण करनी चाहिए। अनुशासन प्रिय होना चाहिए। बड़ा की बात की मानना चाहिए। पामल सरत एव सन्निय बनना चाहिए। विघ्न याथाया से नहा घबडाना चाहिए। सग अपने कतव्य में दन चित्त रचना चाहिए। सत्य, अहिंसा और प्रेम का पुजारी हाना चाहिए। नभी न साथ नभ्रता का व्यवहार करना चाहिए। मात्गी में जीवन यापन करना चाहिए।

प्रश्न

- १ पटेल का जन्मकाल का राजनैतिक दरायें क्या थीं ?
- २ पटेल का राजनैतिक गत्र में काल ज्ञान से महत्वपूर्ण कार्य किसे ?
- ३ पटेल का नाम आज दुनिया में क्या ऊँचा है ? इनकी चारवनी मत्प में म्नुन कर।
- ४ इनका व्यक्ति क हैला था ?
- ५ पटेल के साथ गांधी त्रिनात्रा और जवाहर लाल की तुलना कर।

महामना पं० मदनमोहन मालवीय

१२ नवम्बर

पृष्ठ भूमि—भारतभूमि में मानवीय जी का प्रादुर्भाव उम्र गमय हुआ, जबकि देश पराधीनता की वेडिया में आबद्ध था। भारत माना लौह प्राचीर में बन्द सिराकिया भर रही था उस समय देश में शान्ति के बगुले उठ रहे थे और जादोलन की चिनगारियाँ प्रज्वलित हो रही थी।

भारत में अंगरेजों का एकच्छत्र राज्य स्थापित हो चुका था। देश की अवस्था दिनो दिन बदतर होती जा रही थी। अंग्रेजों का भारत का माल लूट रहे थे। भारत का धन विदेशों में जा रहा था। भारत के लिए यह असह्य था। स्वतंत्रता के लिए लोग लड़ रहे थे। उनके जन्म के कुछ ही पूर्व सन १८५७ की महान शान्ति हुई थी। इसमें भारतीयों का सफलता तो नहीं मिल सकी किन्तु अंगरेजों का यह नात हो गया कि भारतीय भी अपनी स्वतंत्रता पर मर मिटनेवाले हैं। इस तरह १८५७ ई० की शान्ति का बंदूका और तापान नीचे कुचल दिया गया। फिर भी भारतीयों ने अपनी हिम्मत नहीं हारी थी। अभी भी उनकी धमनियाँ में उष्ण रक्त खिल रहा था। लोग स्वतंत्रता का सूत्र देवता के लिए नम्र रहे थे। अपने को गुलामी की जजीरा से मुक्त होना के लिए यथाशक्ति चपटा कर रहे थे। कुछ ऐसी ही शान्ति काल की बला थी जबकि मालवीय जी का उदय हुआ।

जीवन-वृत्त—जननी रामभूमि के उद्गायका में महामना पं० मदनमोहन मालवीय का नाम अग्रगण्य एवं भारतीय इतिहास के स्वर्णचिह्न में जितित त्रिय जान लायक है। उनका जन्म ४ दिसम्बर १८६१ ई० में इलाहाबाद में हुआ। इनके पिता का नाम पं० यजनाय मालवीय एवं माता का नाम भुना देवी था। मालवीय विद्यापीठ होने के कारण वे अपने को मालवीय कहा करते थे।

इनका विद्यार्थी-जीवन पूरा सफल रहा। वे पढ़ने पढ़ाने में अधिक मधावी नहीं थे किन्तु छात्रों और शिक्षकों के मध्य सर्वप्रिय अवस्थित थे। इनके स्वभाव में सभी आकर्षण ही पाते थे। वे-कूट में इनका विद्यालय मन लगता था और बचपन से ही समाज सेवा की आरंभ उनका सुभाव था। मल-

वृद्ध म अधिक रहने के कारण एक बार व एक० ए० की परीक्षा में असफल रहे । किंतु उससे न तो वे उदास हो हुए और न उनके जीवन का विकास ही था । असफल रहने के बावजूद भी वे सेल-वूद में निरन्तर भाग लेते थे ।

मार्च १८८४ ई० में वनवृत्ता विश्वविद्यालय से उन्होंने स्नातक की परीक्षा पास की । जाग पढ़ने के विचार से एम० ए० में नाम लियाया, किन्तु अध्ययन के काम में व्यक्तिगत उपस्थित हो गया । किंचित मास पढ़ने के पश्चात् जीवन के वायस्यत्र में लगे आए । इस जीवन की समस्त भूमि में उन्होंने अधिक कुशलता दिखाई और छात्र-जीवन में विशेष सफलता प्राप्त की । वास्तविक जीवन के काम श्रेष्ठ में प्रवेश करते समय अनेक लोगों की भांति वे भी साधारण थे । पर जिस समय उनकी यात्रा समाप्त हुई, उस समय वे सबसाधारण के बिल्कुल ऊपर थे ।

अपने जीवन-काल में प्रत्येक क्षण में ही अपनी यात्रा के प्रत्येक पद पर वे जनता-सेवा के साथ कदम-से-कदम मिनाकर चले । छात्र जीवन की समाप्ति के पश्चात् गवर्नमेंट हाई स्कूल में ५०) ६० माहवार वेतन पर उन्होंने ज्ञान-यापन का सहारा लिया । अपनी सरलता, सच्चरित्रता और योग्यता के कारण ही विद्यार्थियों के मध्य सर्वाग्रिय बन गए । इनका प्रतिभा महामुखी थी । तदन्तर आपके समीप कालाकांकर राज्य के राजा रामपाल सिंह की आर से 'हिन्दुस्तान पत्रिका' का सम्पादन करने का निमन्त्रण आया । हिन्दुस्तान आपके सम्पादकत्व में आने से चमक उठा । इसका ग्राहकों की संख्या निरन्तर बढ़ती गई । यहाँ पर भी आपने पूरी सफलता हासिल की । अपनी लेखनी के चमत्कार से सबको चकाचौंध कर लिया ।

छाई वर्षों तक 'हिन्दुस्तान' का सम्पादन करते रहे और इसके बाद इन्होंने बकायत पढ़नी आरम्भ कर दी । बकालत पढ़ते समय भी आप लाफ्लेव और सावजनिक कार्यों से मुक्त न रहे । ब्याक्ति प्राप्त पत्रिका इण्डियन ओपिनियन का भा सम्पादन करने लगे । १८९१ ई० में इन्होंने बकालत की परीक्षा पास की और प्रयाग में अपनी प्रविष्टि आरम्भ कर दी । अपनी सच्चाई और सच्चरित्रता, योग्यता और प्रतिभा एक व्यक्ति से मात्र किंचित जिनो में ही आपका नाम प्रख्यात हो गया । वकील की हैमियन से आपने जितनी सफलता प्राप्त की इसका पता चौराचौरी बाण्ड से ज्ञात होता है । इस केम में १५१ लोगों को फासा की सजा हो गई थी किन्तु मातृवीय जी के सतत प्रयास से सभी मुक्त कर दिये गए ।

सन १९०० से १९१० ई० तक वे सद्युक्त प्रांत व प्रांतीय व्यवस्थापिका के सदस्य रहे। इसमें उनका बाय अत्यधिक सराहनीय है, इस पद पर रहकर भा उन्होंने जनता के हित का सदा ख्याल रखा। अपने जीवन काल का अन्तिम समय उन्होंने लाक-सवा में पूरा समर्पित कर दिया और मदा जनता के धन रहे।

मानवीय जी हिंदी हिंदू, हिन्दुस्तान के समर्थक थे। या हिन्दू की उन्नति के लिए उन्होंने अनवानेक प्रयत्न किये। अनेकानेको हिंदी में दिखाने के लिए मराठी प्रासाहित करते रहे तथा उनका हिंदी पत्र-पत्रिका का सम्पादन किया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति के रूप में उन्होंने हिंदी का जो सेवा की वह सर्वथा मूल्य है। हिंदी के प्रति भारतीयों की उत्साहीनता में उन्हें धारण होता था। वे सदा ही हिंदू धर्म का पालन करते थे इसका परिचय तो उनकी बेग भूषा का देखकर ही प्राप्त हो जाता है। हिंदू धर्म को पतन की ओर जाने से रोकने के लिए अराहनीय प्रयत्न किये पुनरुत्थान एवं पुनराधार के लिए उन्होंने हिंदू महासभा की स्थापना की। प्रारम्भ में इस महासभा में हिन्दुओं की बहुत बड़ी सेवा की किन्तु प्रायः इसका रूप कुछ विकृत हो गया। हिंदू धर्म के जयगुणाओं के अवनयन और उन अवगुणों का प्रमदा निरादर करते थे। अद्धता के प्रति उनकी अपार श्रद्धा थी। ये न केवल हिन्दी या हिन्दू का ही उद्धार उत्थान चाहते थे, बल्कि कुल मितान्तर उनका लक्ष्य भारत का उद्धार करना था। वे चाहते थे कि भारतीय विद्यार्थियों को हिंदू मठवृत्ति एवं हिंदू-आदर्शों के अनुसार शिक्षा मिले और इसी ध्येय का स्वरूप उन्होंने हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना की। वर्षों के धार और अन्तरगत परिश्रम के फलस्वरूप पराडा स्वयं एकाग्र करके उन्होंने स्व विश्वविद्यालय में लगाया। चार फरवरी १९१३ का भारत के नवजातेन वायव्यराय नाड हाउस में इसका शिवाग्राम किया। उस दिन मानवाय जी की सम्पूर्ण जीवन का मालसा पूरा हुई जिसका वे सपना स्व रहे थे। इस दिन भारत की एक बहुत बड़ी क्षति पूर्ति हुई। यह विश्व विद्यालय उनका पुनीत आदर्श उनका बहुमुखी प्रतिभा उच्चतम व्यक्तित्व और उनका भारतीय निरारधारा का गीता जागता स्मारक है। इसका प्रथम स्टेज उनकी महानता और योग का बगान करती है। यह मानवीय जी की आगाधान्तिता और अथक परिश्रम का ज्वलन्त प्रतीक है। इसी का स्मरण में प्रदान जाना है कि वास्तव में मानवीय जी माधारण हात हुए भी महान थे। राजा होते हुए भी रक्त थे और सौमिक हात हुए भी विरक्त थे।

मानवीय जीवन भारत की राजनैतिक प्रगति में भी हाथ बँगाया। कांग्रेस की उद्वेगिता बहुत बड़ी सेवा की। इसके दावा-सभापति भी बन गए। इम्पीरियल लजिस्लैटिव कौमिसन में जातिवादीता वागवद हत्याकाण्ड की घटना का कट जानाचना की ओर उसका सच्चा रूप जनता के समक्ष प्रस्तुत किया। १९२१ ई० में इन्दिरा गांधी का प्रथम मंत्रालय में भाग लेने के लिए वे इंग्लैंड गये और वहाँ पर मनी तरह में महात्मा गांधी का सहयोग प्रदान किया। १९४० ई० में विष्णु मिशन का बुराइया का प्रदर्शन कर उद्धान् अपनी मायता एवं दम्भित्ति का महान् परिचय दिया। भारत विभाजन के आपसदा विरुद्ध रहे। स्कूल एवं कालजा में सैनिक शिक्षा लागू करने तथा छाटी छाटी बालचर स्वाउट-सस्थाओं की स्थापना के लिए सदा प्रोत्साहन दत्त रहे। इनका अटल विश्वास था कि गुनामा की बलियास मुक्त हान के लिए न केवल मानसिक विक्रम की ही आवश्यकता है, बरन सारारिक विकास की भी आवश्यकता है। विद्यार्थियों का वसदा कहा करते थे नि—

दूध पिया कसरत करा, नित्य नजा हरिनाम ॥

मन लगाई विद्या पढ़ा, पूण हाथ मध काम ॥

उनका चरित्र सदा अनुकरणीय रहा है। कस्त व्यपरायणता दानशीलता परोपकार सत्यनिष्ठा निर्भीकता समाज सेवा जार लोक-सेवा तथा धर्म प्रमक मामला में वे साक्षात् अवतार ही थे। जतना बड़ा महान व्यक्ति १० नवम्बर १९४६ को इस जगत् में उठ गया। उनकी मृत्यु से भारत की बहुत बड़ा सदमा पहुँचा और बर्नाचि इन निकट भविष्य में महान क्षति की पूर्ति नहीं हो सका। आज हिन्दू त्रि-विद्ययाय में जाणू तो जनक प्रति श्रद्धा से नतमस्तक हो जाता है। धर्म में मानवीय जी।

शिक्षाएँ—सदा समय वाग्ना चाहिए। निर्भीक साहसी धार निडर हाना चाहिए। सूय ध्यान लगाकर अध्ययन करना चाहिए। भगवान का प्रति-लिन पूजा करने की चाहिए। सारारिक विकास की जार त्रिगुण ध्यान देना चाहिए। समाज-सेवा का कार्य न-कोई काम अवश्य करना चाहिए। काड भी काय जनता की भलाई के लिए करनी चाहिए जिममें मानव समाज का निज भाषा एवं निज देव के उत्थान का जार सतन् प्रयत्नशील रहना चाहिए। साथ ही साथ अपने धर्म का कभी भी त्याग नहीं करना चाहिए। प्रत्येक धर्म के प्रति श्रद्धा रखनी चाहिए। सेवा और महायता से कभी मुख नगा माटना चाहिए। बिनबो बनना चाहिए तथा सत्य साथ नम्रता का बस्ताव करना चाहिए। कार्य ऐसा काय नहीं करना चाहिए, जिससे दूसरे का सत्मा पहुँच।

प्रश्न

- १ मालवाय जी के जन्म के पूरा देश की क्या अवस्था थी ?
सन् १८५७ का क्रान्ति के बारे में क्या जानते हैं ?
 - २ मालवाय जी का जीवन कृतान्तर मन्दिप में प्रस्तुत करें ।
 - ४ मालवाय जी ने भारतीयों के लिए कौन-कौन सा कार्य किया ?
 - ५ भारत के लिए उनका सबसे बड़ा कौन सा कार्य है ?
 - ६ हिन्दू धर्म के उत्थान के लिए कौन सा कार्य किया ?
 - ७ क्या इस क्षेत्र में उनको सफलता मिली ?
 - ८ हिन्दू का कौन सा संवा की ?
 - ९ उनके जीवन का क्या सिद्धान्त था ?
 - १० उनके जीवन से आपको क्या शिक्षाएँ मिलती हैं ?
-

१४ नवम्बर—नेहरू जयन्ती

पूव तयारी —जयन्ती की मूचना दो दिन पूव ही छात्रो एव शिक्षको को दे दी जायगी । लोग निबध कविता, प्रहसन इयादि तयार करेंगे । आज सूत्र यन विरोप रूप से दा घट तब हागा । सूत्र-यन के उपरान्त सांम्भुनिक कायनम का आयाजन हागा । इमम लोग निबध पत्तंग भाषण दगे, कविता पाठ करेंगे जार प्रहसन प्रस्तुत करगे । अन्ततागत्या प्रधान जी अपना विचार प्रगट करय । सभा विघटित हान व उपरान्त सभी निबधा भाषणा, कविताजा और प्रहसना वा सकलिन कर पुस्तक का रूप दकर पुस्तक कक्ष म गुर क्षित रल दगे । इसके अतिरिक्त १५ नवम्बर का बच्चा का दिन माना जाता है । इसलिये छोटे छाट बच्चा को उस दिन स्नान कराकर उनके बन्धादि स्वच्छ कर उनका जुलूस निकालना चाहिय और श्री नहरू क वार म उनके कामल मजिष्क म नानप्रद भावनायें भरनी चाहिय । उमव व उपरान्त बच्चा मे मिष्टान्न वितरण भी करना चाहिये ।

देश की राजनतिक हातत —देश म अग्र जा का एकच्छत्र राज्य जामनु हिमालय कायम था । सार भारत पर उनका दबत्वा था । भारतीय जनता गारा सरकार का नीति म तग आ चुकी थी । वह उम उखाड फँकन की चेष्टा म थी । किन्तु तापा और बढूका व आगे एक न चली । दग म बड-बडे महामान्य नता राजनीतिशेन म अति तीव्रता स काम कर रह व । इनम दा दल थे एक नरम दल दूसरा गरम दल । गरम दल म लान वान पाल थे और नरम दल म वकील वरिस्टर इयादि । इन्हा दल व नताजा म से एक मोती लात नहर भी थ ।

जीवन वृत्त —जवाहर लाल देश के मरामान्य नता थ । इनक साथ होनहार विरवान क हात बिकने पाल वानी कहावन चरिताथ हाती है । मोती का पुत्र जवाहर हुआ । मचमुच यदि माना मानी था ता आज जवाहर भी जवाहर स कम नहीं । कितना मनमोहन सुखिपुण नाम था जवाहर । जसा नाम वसा गुण जसा गुण वसा ही नाम । वदाचित्त म तरह का मनिकचन स योग विरत् हा, कही खन का मितना है । अग्र जी म एक कहा वत है 'Boon with a silver spoon in ones mouth' सचमुच म

उनका जन्म राजनी ठाट बाट म १६ नवम्बर १८८० ई० म इलाहाबाद में आनन्द भवन में हुआ। इनका बचपन मुब की गोद में व्यतीत हुआ। उह कभी किसी वस्तु का जाभाव नहा खटका। ये ग्यारह वर्षों तक माँ-बाप के प्यार में एक मात्र उत्तराधिकारी रहे। पिता के प्यार ने इनके स्वभाव का नव निर्माण किया ता माँ का स्नह न इनक कल्बर की श्री वद्धि की। और इसी क बीच उन्हाने अपने सुन्दर सुव्यवस्थित और सुगठित सामाजिक जीवन का निर्माण किया। जवाहर अपन घर का चाँद था जिसकी गुभ्रग्यात्ना में सभी मुख और सतोप की साँस लव थ।

यदि भारत का उनके जन्म दन का गौरव है ता इगलण्ड का गौरव है उनका सम्यक् विकास करन का। १९०५ ई० में व सबप्रथम इगलण्ड गय। वहाँ के प्रसिद्ध प्राचीन स्कूल हैरा में एण्ट्रंस तक की शिक्षा प्राप्त की तदुपरान्त वेम्ब्रिज विद्वद्विद्यालय व टिनटी कॉलेज में उन्हाने १८१० में बी० ए० का डिग्री प्राप्त की और १९१२ ई० में इनर टम्पुल से बेरिस्त्री परीक्षागीण हा के स्वल्पेण लौट आय।

स्वल्पेण लौटत ही सन १९१२ में य पटना क काँग्रेस अधिवेशन में सम्मिलित हुए। १९१४ में प्रयासी भारतीयों क लिय ५० हजार रुपये सघट कर अफ्रिका भन थ। सा १९१६ में लगनऊ-काँग्रेस क समय महात्मा गाँधी स भेंट हान पर य उनक यत्किन्व का ण्य कर अत्यन्त प्रभावित हुये। उन्हाने फोरन फनन का चागा इतस्तन फैंक तपन्वी का दाता धारण कर लिया। सवा जीव माग्गी का जीवन-यापन करत हुय महला का त्याग भारत की टूटी पटा जापडियों का बार जविरामानि स चल पडे म।

सन १०१० ई० म इन्हाने जख क किसानों म काम किया जीर इसम उन् आगानान सफयता प्राप्त हुई। १९२१ ई० के असहयोग आन्दोलन म स्थान छ महान का जल की सजा हुई किन्तु कुछ ही दिनों म छाट दिये गय। १८ म य विष्णु कपडा का दूजान पर पिक्चरिंग करत हुय पुन बद चित्र रूप। इसा समय इनकी पत्नी कमला तहर बीमार पडी और इनका स्वाज करान क निय स्वाटजरलड गण। किन्तु वही पर उनका स्थान न, गया। १०२२ स १९९ ई० तक य निरन्तर जखिल भारतीय काँग्रेस क सचिव रहे। १९२८ ई० म कनकता अधिवेशन म इन्हाने पूण स्वराज्य का मार्ग का। सन १९२९ क काँग्रेस-महाअधिवेशन क म अध्यक्ष नियुक्तित हुण और उही की अध्यक्षता म रावातट पर एन यन्त बहा अधिवेशन हुआ और इसम उन्हाने पूण स्वराज्य का प्रस्ताव पास किया। १९३०

म नमक कानून भंग करन म उहाने सत्रिय हाथ बटाया जिसम नहण परि-
वार क सभी सत्रिया को जन की हवा खानी पड़ी ।

१९३० ई० के आगमन के साथ ही भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलन म भी
अति तीव्रता आ गई । इसम जवाहर लाल ने वापू क पद चिह्न का अनुसरण
कर स्वतंत्रता देवा का आहुवान किया । इससे १९४० म इहें चार वर्षों की
जेल की सजा हुई ।

पुन स्वतंत्रता सत्याग्रह का तूफानी क्षण लिमन् '४२ का साल आया ।
इस ऐतिहासिक प्राति से ब्रिटिश शासन की जड़ हिल गई ।

अन्ततोगत्वा येन जन प्रकरण भारत का सौभाग्य-सूय चमक उठा और
सदिया क वार १५ अगस्त ४७ का दास्ता की वक्रिया टूट गई और भारत
स्वातंत्र्य सुप्रभात क स्वर्णिम सौंदर्य की आभा म मुखरित और पुलकित हो
उठा और जवाहर लाल नेहरू क नवृत्व और मन्त्रित्व म भारत म स्वतंत्र
स्वतंत्र सावभौम प्रजातंत्र की स्थापना हुई ।

जवाहर लाल जी जनता जनादन के पुजारी थे । जनता उन्हें परम पूज्य
मानती थी । उनक त्याग की महिमा पर काय लिखा जाय ता वह महाशान्त
बन जा सकता है । उहान सवा और सादगी का जीवन अपनाया । अनेकों
बार जेल की शिखर उनक तेन को परख चुकी थी । जलों म रहकर अनका
असह्य याननाओ का सहन किया किन्तु जीवन म उहान हार कबून नहा
का । वे अध्ययनगाल रहे । जन की चहाग्दीवारिया क अन्दर भी उनका
अध्ययन जारी रहा । इतिहास से उन्हें विशय प्रम था । वे एक एक क्षण
का प्रतिष्ठा करत थे । उन्हें शासन से विरोध रुचि थी ।

एन ऐम्बक के शासन म जवाहर लाल का व्यक्तित्व उत्साह कम्प्यता
और अनुशासन का प्रतिरूप है । उनकी दृष्टि म निमल आदग की उद्योति
ह । उनक चरण निगम म सुसम्भृति और आत्म गौरव की लोच है । उनक
हृदय म धार अमनाप है, हमारी सामाजिक विग खतता के प्रति उनक हिल
म दद है, उगा और सूवा क प्रति उनक मन म असीम सहानुभूति है । समा
नता और नाक-कल्याण का भावना, मानविक प्राध, निष्ठुर कायशीलता, शुद्ध
आदगवाद शास निगम की शक्ति और बड़ी प्यारी शुक्ष्णदृष्ट जवाहर लाल
नेहरू की विशेषताय है ।

जहाँ उनम वार यादों का उग्रता स्फूर्ति तथा अधीरता था, वहाँ राज-
नीति का विवेक भी था । वे परिस्थिति से धागे का बात सोचत थे । वह
स्फूर्तिक मणि की भांति पवित्र थे उनकी सत्यगीनता सबह से परे थी । जोखिम

म इहें अनि आनन्द मिलता था । इनका हृदय बामल था । इनमें प्रेम, दया और इसानियत भरी पड़ी थी ।

उनके बारे में "The Hindustan Standard" ने लिखा है—
 "He is aristocratically democratic, subjectively objective, internationally national, institutionally singular, individually of the master and massively above the classes. He is most pleasing in the Superlative Contradiction irrefutable by nature, kind at heart, impulsive in emotion, calm in thinking arrogant in opposition, mild in compromise restless in mood, gentle in manners ready to speak impatient to listen

Politician, historian and scientist, Nehru is diplomat and pacifist, In him is happily blended All that is to be commended "

नहरू जी हमारे भारत के प्रधान मंत्री थे । वे-के-न भारत ही नहीं जपान, एंगिया और विश्व के नेताओं में भी अग्रगण्य थे । इनकी वैश्विक नीति में गांधीवाद परिलक्षित होता था । विश्व उस समय दो-दोनों में विभाजित है । एक अमेरिका दूसरा रूस । भारत इन दोनों दलों के बीच में गये ही नहीं तब पताना लिए अहिंसा का अमाध अस्त्र लिए नहरू के गहन नृत्य में शान्ति पथ का और अग्रसर हो रहा था । सचमुच में नहरू राष्ट्र के लिए धार थे ।

दिसंबर में उस विश्व विभूति गान्धि के एकमात्र अग्रगण्य जगद्गुरु तान का २७ मई १९६४ को २ बजे दिन में अपने यहाँ बुला दिया । उस दिन मारा भारत गांधी-जागरण में डूब गया । विश्व विभूति ही उठा । उस मन्त्राणुष्य ने जहाँ जात विभूति दिया उस गान्धि घाट कहल ह । वह आज ही भारत का तीर्थस्थल बन गया है ।

Oh ! be thou blest with all that
 Heaven can send
 Long health, long youth long pleasure,
 and a friend

शिक्षाओं — श के लिए सबन्ध न्यायावर करने के लिये सदैव तत्पर रहना चाहिए । प्रत्येक काम में आग रहना चाहिए । दीन दुखिया की सेवा करना चाहिए । सादगी से जीवन यापन करना चाहिए । जनता की भाग का स्वाकारण करने चाहिए । स्पष्टवाणी और निर्भीक हाना चाहिए । बप्टा और विधन-बाधाओं का दायकर धवडाना नहा चाहिए । धैर्य धारण करना चाहिए । अनुशासन प्रिय हाना चाहिए । सान कल्याण करना चाहिए । सबके प्रति समानता का भाव प्रदर्शित करना चाहिए । निश्चय और वाय शाल हाना चाहिए । सभी के साथ प्रेम दया और सानियत का भाव प्रदर्शित करना चाहिए ।

प्रश्न

- १ न्हरू के जन्म के पूरू लेश का धरन्ध्या कैसा था ?
- २ न्हरू के राजनीतिक क्षेत्र में कब से पणपण किया ?
- ३ राजनीतिक क्षेत्र में उन्होंने कौन-कौन-सा महत्वपूर्ण कार्य किया ?
- ४ इनका जीवन वृत्त सन्धुप में प्रम्युल करें ।
- ५ इनका नाम आज विश्व में क्यों उँचा है ?
- ६ इनके ध्यक्ति के बारे में क्या जानते हैं ?
- ७ भारत का इनकी कौन-सा धेन है ?
- ८ विश्व के हिलाय इहान कौन सा कार्य किया ?
- ९ विश्व के धन्य प्रमुख लताओं के साथ इनकी तुलना करें और उन सर्वा में उनका स्थान निधारित करें ?
- १० भारत धार रूस का मैत्री में इरू का क्या हाय ग्हा है ?
- ११ महात्मा गांधी के राजनीतिक उत्तराधिकारी न्हरू थे ? इत मिद्ध करें ?
- १२ पचशाल में क्या समकत है ?
- १३ न्हरू की वैदेशिक नीति पर प्रकाश धालें ।

३ दिसम्बर—राजेन्द्र प्रसाद जयन्ती

पूर्व तयारी —दा दिन पूर्व विद्यालय में राजेन्द्र-जयन्ती की सूचना प्रसारित कर दी जायगी। जयन्ती के दिन विशेष रूप से मफाई और सूत्र-यज्ञ करेंगे। सूत्र-यज्ञ में रामायण का पाठ होगा। सूत्र-यज्ञोपरान्त काँग्रेस के साक्षिप्त इतिहास और भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन में बिहार का कहीं तक हाथ रहा है इसका साक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जायगा।

स्वतंत्रता का इतिहास भी स्पष्ट कर दिया जायगा और यह बताना की चेष्टा की जायगी कि स्वतंत्रता की ज्वाला प्रज्वलित करने में राजेन्द्र बाबू का कहीं तक और कितना सहयोग रहा है। तदुपरान्त इनके काय शकुन जावन पर भी दृष्टिपात करने हुए यह स्पष्ट किया जायगा कि इनके जावन में कौन-कौन-सी महत्वपूर्ण घटनायें घटित हुईं। अथ राष्ट्रीय नेताओं के साथ राजेन्द्र प्रसाद की तुलनात्मक विवेचना भी की जायगी और साथ ही राजेन्द्र की महानता पर भी प्रकाश डाला जायगा। इस प्रकार अनेक चर्चाओं के उपरान्त सभी लेखा एवं भाषणा का मकलन कर पुस्तक का रूप देंगे और उसपर जिल्द बंधवाने में मुरतित रस देंगे।

जन्म स्थान का भौगोलिक परिघट्ट —राजेन्द्र बाबू का जन्म छपरा जिले में हुआ था। छपरा जिले में मौनसून से वर्षा होती है। जलवायु उष्ण है और यहाँ धान तथा खेती की फसल अच्छी होती है। गर्मी विशेष पडती है।

पृष्ठभूमि —जननी जन्मभूमि च उन्मायको में देशरत्न डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद का नाम अग्रगण्य एवं भारतीय इतिहास में स्वर्णलिरा में जित्त किए जान योग्य है। इन्होंने विश्वव्यापी बापू के चरण चिह्नना का अनुमरण किया एवं भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम में प्रमुख एवं गतिप्रिय हाथ बटाया। भारतभूमि में राजेन्द्र बाबू का प्रादुर्भाव उम समय हुआ जब देश पराधीनता की बर्हिषा में आवद्ध था। उम समय देश में आतंकी के बगुल उठ रहे थे और आन्दोलन की चिनगाखियाँ प्रज्वलित हो रही थी। साथ स्वतंत्रता के मूल्य दानन के लिए लड़प रहे थे, अपने का गुनामा का जजोरा में मुक्त करने के लिए चेष्टा कर रहे थे। एमी हा मत्रान्ति काल की कुछ बना थी जब राजेन्द्र प्रसाद का बिहार के गणनागन में अन्तुष्य हुआ।

जीवन वृत्त — बिहार की विभूति राजेन्द्र बाबू का जन्म ३ दिसम्बर, १८८४ ई० में बिहार प्रांत के छपरा जिलान्तर्गत औरादेई ग्राम के एक सु-सम्पन्न एवं सुसंस्कृत परिवार में हुआ था। उस समय उर्दू और फारसी का बोलचाल था, अतः इन्होंने भी बचपन से ही उर्दू और फारसी की शिक्षा दी गई। तत्पश्चात् इन्होंने छपरा जिला स्कूल, टी के घोष एकेडमी एवं पटना विद्यालय में शिक्षा पान के बाद कलकत्ता विश्वविद्यालय में सन १९०० में प्रवेश किया परीक्षा सवा नव अंक उपलब्ध कर उत्तीर्ण हुए। इन्होंने आसाम, बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा के समस्त विद्यालयों के रेकड तोड़ दिया। १९०६ ई० में एम० ए० और वाद में एम० एल० की परीक्षाओं में भी उत्तीर्ण हुए। प्रवेशिका परीक्षा और विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम आने पर 'हिन्दुस्तान रिव्यू' के सम्पादन में राजेन्द्र बाबू ने प्रति निम्नांकित विचार व्यक्त किया था— नवयुवक राजेन्द्र सब प्रकार के प्रतिभाशाली विद्यार्थी हैं। हम आशा हैं कि प्रवेशिका परीक्षा में जो स्थान उन्होंने प्राप्त किया है उसे वे जीवन भर निभायेंगे। ईश्वर जाने इस नवयुवक के भविष्य में क्या है। लेकिन यदि इसका स्वास्थ्य ठीक रहा तो कोई भी पद जो हिन्दुस्तानियों के लिए खुला है, इसकी महत्वाकांक्षा के बाहर नहीं। हम आशा हैं, आगे चलकर यह नवयुवक अपने प्रान्त के हाइकोर्ट का 'यायाधीन' और कांग्रेस का सभापति होगा।' सम्पादक की इस भविष्यवाणी से युवक राजेन्द्र को आगे बढ़ने की प्रेरणा प्राप्त हुई। अपने विद्यार्थिकाल में वे सदैव सर्वप्रथम आये। कांग्रेस का सभापति भी नियुक्त हुआ और उन्होंने भारत का प्रथम राष्ट्रपति होकर सारे नभ के शासन की वागडोर पकड़कर इसका संचालन किया। सदैव दम्मे की बीमारी से पीड़ित रहने पर भी राजेन्द्र बाबू ने जो कुछ किया वह आज हमलोगों के समक्ष ही है। १९०६ ई० में ये कांग्रेस में शामिल हुए और अबतक ये कांग्रेस के एक कर्मठ सदस्य रहे हैं। ये बंग भंग आन्दोलन से अत्यधिक प्रभावित हुए। इनके मन में राष्ट्रीय भावना का स्रोत साधारित हुआ। ये राष्ट्रीय आन्दोलन की धक्कती जवाला में कूद पड़े। राजेन्द्र बाबू ने देशोत्थान के कार्यों में खूब खुलकर हाथ बटाया। १९१० ई० से ही ये साधना के पथ के पथिक बन। अपनी खूब चलती धकालत को टाकर मार कर इन्होंने गांधी जी के साथ स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया। १९१९ ई० के रौलेट ऐक्ट के आन्दोलन में गांधी जी का पूरा पूरा साथ दिया। १९२२ ई० में गया कांग्रेस अधिवेशन में आपने सक्रिय हाथ बटाया। बिहार में खादी का प्रचार करने और विद्यापीठ जती शिक्षण

स स्यादा के असहयोग के समय भी संचालित रखने का श्रेय आप ही को है। महात्मा गांधी के नेतृत्व में चम्पारण में जो आंदोलन चलाया गया उसमें भी आपका पूरा सहयोग रहा। मई १९२०, १९३० एवं १९४० और १९४२ के सत्याग्रह सत्रों में उन्होंने मुलकर भाग लिया। १९३० ई० के सत्याग्रह की विचार में जो सफलता मिली उसके ध्येयवाद के पात्र आप ही हैं। कई अवसरों पर जेल की हवा भी खाई। अनेकों बार पुलिसों की ताड़ियों का प्रहार भी सहन करना पड़ा। विहार की कांग्रेस का पूरा संचालन कर इसमें राजनीतिक एवं सांस्कृतिक चेतना लाई।

अठ्ठनाइस आंदोलन में भी आप कभी भी पीछे नहीं रहे। जब कभी देश में वार्ड ऑफ, जवान या भूकम्प का प्रकोप हुआ, आप अपनी सेवा दान करने के लिए सदा तत्पर रहे। स्वयं राजनानि के जाल में फँसे रहने पर भी आपने हिन्दी साहित्य और हिन्दी भाषा के उत्थान के लिए जो कुछ भी किया, उसकी मूल्य कम नहीं। यथा उदा आपने कई पत्रों का सफलतापूर्वक सम्पादन किया। आप ही के परिश्रम के फलस्वरूप पटना विश्वविद्यालय ने हिन्दी भाषा को सर्वप्रथम गिना का माध्यम बनाया। राष्ट्र-सेवा के साथ ही इन्होंने ज्ञान-दान भी किया। मुजफ्फरपुर कांजेज एव कनकता क मिटी कांजेज में प्राध्यापन के पद पर नियुक्त हुए। कनकता के ली कॉलेज में भी अध्यापन काम किया।

राजेंद्र बाबू के परिवार वाना को पूरा विश्वास था कि वे बहुत अधिप सम्पत्ति उपाजन करेंगे। उनका यह निश्वास अथवा फलीभूत हुआ। इन्होंने इतनी सम्पत्ति अर्जित की कि वे यदि दाना हाथा से भी उलाची जाय तो वह कम हान का नहीं। इन्होंने वह धन कमाया कि जिसे बाइ चतुर चिनरा भी चुराने में सफल नहीं हो सकता। वह सम्पत्ति समय का आँच लगन पर भी खराब नहीं हो सकती।

राजेंद्र बाबू सबकुछ में दान के रत्न थे। वे किसानों का कष्ट कम करने में दान के रत्न थे। वे जो कुछ करके अपने लिये कर लिए। उनसे हान्य में घटने के लिए एक स्थान था। मन्त्र निस्वाय रूप में सदा भाव में निरत रहते थे। मेवा ही उनका जीवन था। यही था उनके जीवन का एकमात्र ध्येय। न तो बटप्पन की गान गौरव थी और न नेतृत्व का नाम। परन्तु बार दया, धर्म, महानुभूति आदि गुणों में विभूषित एवं उच्चरानि में विश्वास रखने वाले नव-नव-साधक थे। मन्त्र पूरा निःस्पृह हाथ पर 'कमुधन कुम्भ' में

की भावना को अगोहृत करते थे। इतना स्वभाव अत्यन्त साधु एवं विचार-धारा अमल विमल था। बिहार के गाँधी और अंगरेज के आधुनिक रूप, सयानुरागी और जहिमा क पुजारी सदा सादगी से सहिष्णुता की प्रति-मूर्ति राजेन्द्र बाबू बस्तुन देव के गौरव जोर बिहार के विभूति थे-। सादगी और उच्च विचारा का ऐसा व्यक्ति बिरले ही मिलते हैं। बिहार न जिस क्षण जिस लम्बे में जिस मूर्त में राजेन्द्र का जन्म दिया, उसी दिन, उसी क्षण जोर उसी मूर्त में अनकालेक बाबू का जन्म दिया होगा, पर किसी का राजेन्द्र बाबू जसा दिल और शिवांग, हृदय और मस्तिष्क नहीं मिला। शिवांग में ऐसी जय शक्ति थी जो देव का इतिहास ही बदल दे। हृदय में वह महानता थी जो कट्टर शत्रु का भी हृदयानिगल कर दे। सभी जातों के प्रति इनका हृदय में प्रेमभाव था। ये मुद्धि केवल भी थे। भारतीय सभ्यता और मरुति के उद्घाटक के रूप में अनेकों पुस्तकों का प्रणयन भी किया। विरचित 'आत्म श्या' का अनुवाद कई भाषाओं में हो रहा है।

राजेन्द्र बाबू कोई व्यक्ति नहीं बरन् एक शक्ति थे। इसी शक्ति ने हमारे हृदय में जागृति का प्रभाव संचारित किया। यह शक्ति अजेय थी। और अमर थी। किसी समय हर् साहब ने कहा था जिस देश में राजेन्द्र बाबू जसा व्यक्ति है वह कभी भी परलोक नहीं रह सकता। टीच ही है आज देश परलोक नहीं। उन्होंने राष्ट्रपति के पद पर अधिष्ठित होकर पूण क्षमता के साथ नुसलपूर्वक अपने काम का सम्पानन-संचालन किया। जिस देश का राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू जसा व्यक्ति था वह कल्पि कठिनार्थों के सामने सिर नहीं नत कर सकता। ये हमारे देश के जाग्रत आदर्श थे। आज हम नाज है इस दशरत्न पर। देश का आवश्यकता है इस ही उपायका की। अपने गुण-गरिमा के कारण ये चिरस्मरणाय बने रहेंगे। अंत में कवि कलकटर सिंह 'वेशरी' के शब्दों में—

दीपित निन्दे-द्र-स्य भारतीय नम मे राजेन्द्र हमारा है।

वह कोटि-काटि दीनो प्रथमहीना का एक सहारा है।

निष्ठाएँ — जेभक्त बनना चाहिए। समय पड़ने पर त्याग के लिए बलिदान होने में कभी भी हिचकना नहीं चाहिए। त्यागी और उदार बनना चाहिए। गरीबों का सदैव सवा करनी चाहिए। किसी भी व्यक्ति का सम्मान करना चाहिए। अपना पराया का भेद भाव नहीं रखना चाहिए। सबको समान दृष्टि से देखना चाहिए। सवा और सहायता से कभी मुँह नहीं माडना चाहिए। गरीब व्यक्तियों का भी सवा कर देना चाहिए।

प्रश्न

- १ डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद के समय देश की राजनीतिक अवस्था कैसी थी ?
- २ इनका जीवन-वृत्त मन्त्रिमंडल में प्रस्तुत करें ।
- ३ राजनीतिक क्षेत्र में इनका कब पदार्पण हुआ ? इन्होंने कौन सा प्रमुख काम किया ?
- ४ उन्हें देशरत्न क्यों कहा जाता था ?
- ५ इन्होंने किस पार्टी की स्थापना की थी ? इनके जीवन से आपको कौन से शिक्षाएँ मिलती हैं ?



२५ दिसम्बर—ईसा मसीह जयन्ती

पृष्ठ-भूमि — जब राम साम्राज्य का उत्कृष्ट अपनी चरमसीमा पर था, उस समय रोम के राज्य सिंहासन पर सम्राट आगस्टस आसोन था। बुलियन सौजर की मृत्यु के बाद का म गृह-युद्ध के कारण अशांति फैली हुई थी। इस अशांति को दूर करने और राज्य में शांति स्थापित एवं लोगों में विश्व-बन्धुत्व की भावना को जाग्रत करने के हेतु उसने सम्राट की पूजा करनी प्रारम्भ करवाई। आगस्टस का व्यक्तित्व बहुत महान था। इसमें भी लोग प्रभावित हुए और उसकी पूजा धूम धाम में मनाने लगे। किन्तु साम्राज्य की मुठ राज मत्ता को कमजोर राज्य सम्भालने लगे तो सम्राट पूजा का महत्व कम होने लगा। साम्राज्य में नगरों की प्रधानता थी। इन नगरों में विभिन्न धर्म और सम्प्रदाय के लोग एक स्थान पर इकट्ठ होते थे। इसके कारण भी उनमें विश्व-बन्धुत्व की भावना का उदय होने लगा। लेकिन इस विश्व-बन्धुत्व की भावना पदा हान के उपरान्त भी वे लोग किसी एक धर्म का मानने के लिए तैयार नहीं थे। ईसा के जन्म के पूर्व प्राय २०० वर्षों तक साम्राज्यवादी युद्ध गृह युद्ध एवं बर्ग-संघर्ष के कारण जनता का दुःख दिन पर दिन बढ़ता ही चला जा रहा था। उनका वर्तमान जीवन सीधे संघर्षों में आवद्ध और अविष्य निराशाजनक था। विभिन्न दंगों से महत्त्व की सख्या में लोग गुलाम बनाकर लाए जा रहे थे। इन गुलामों के अपने प्राचीन धार्मिक विश्वास प्राय कमजोर पड़ गए थे। अतः वे कोई एक धर्म की खान में चिन्तित थे जो उन्हें कष्टों में मुक्ति के लिए उन्हीं अन्तका द्वार शक्ति भी की। फिर भी उन्होंने शोषण में छुटकरा न मिल सता। अब उन्हें इस सत्तार से कोई आशा न थी। बस मात्र वे परलोक की आर टक टकी नगाए हुए थे जहाँ उन्हें शांति मिलती। इस ही सशान्ति वान को वेला में ईसा धर्म का उदय हुआ।

ईसा का जीवन वृत्त —

आज विश्व के इतिहास में ईसा का विनिर्दिष्ट स्थान है। ईसा का महती लाग जागृता और रामन उम जसस बह कर पुकारन है। ईसा का जन्म सिरिया के गल्लता प्रान्त के नजेरथ नामक स्थान में प्राय ई० पू० ६ म

हुआ था। उनके माता का नाम मरीयम और पिता का नाम यूसूफ था। ईसा जाति के यहूदी वर्ग के जोर, उनमें इनकी राजी राठी बनती थी। जब ईसा की अवस्था १० सालों की थी तो वहाँ के 'गरीब' नागरिक नराम के विरुद्ध बगावत किया। इस विद्रोह का बहुत ही गहरा प्रभाव ईसा के हृदय पर पड़ा। कल्पित ईसा जान में जनभित थे जब इस युग के धर्म और दान से अपरिचित थे। फिर भा अपने गरीब, अमहाय एव अतिमि भाइयो के कष्टों का देखकर वे उत्तम प्रभावित हुए। इसी न सट जान में गिना पाई थी। सट जान न यहूदिया का यह विश्वास दियाया था कि उनका पुत्र और कष्टों के परिश्रम के लिए एक मसीहा पना होगा। इसमें जान की लोकप्रियता बढ़ती गई। साथ ही उन रोमन अधिकारों का की दृष्टि में दखल लग। इसमें यह प्रभाव में आने में रामन अधिकारिया न सट जान का फामी दे दा। इस घटना में ईसा को अपने गिना के बाय का जारा रखन की प्रेरणा मिली। अब वह पहाड़ा प्रयोग में पयटन करन मल्लाना विदेशियो और गरीबों के बीच अपने उपयोग का प्रचार करन लगा। उसने व्यक्तिव एव तर्क गति में परानित होकर बहुत-से उमक सामाद हा गय। उन्होंने ईसा को मसीहा स्वीकार कर लिया। यूनिया को अब भी एसा विश्वास था कि ममार का कुछ दूर करन के लिए एक दिन मसीहा अवश्य ही पदा होगा इन यहूदिया का अपन पना में सान के विचार से उनका प्रसिद्ध तीथस्थान जरसलम गया। यहाँ के मन्दिर के इशानी पुनर्हिता न ईसा को मसीहा मनान में अम्बीकार कर दिया और मह काटा उनकी आत्मा में सटयन लगा। जरसलम में रामन शासक था जिमका नाम पाएलेटस था। इसका यहाँ लागान न दसा के विरुद्ध धार धार गिनायत ती और उस राजद्रोही सिद्ध करन की कष्टा की। किन्तु पाइलटस एक दिवान व्यक्ति था। उमन ईसा के कृत्या पर ध्यान महा लिया। धार म ईसा का कद बरक साया गया ता पाइलटस में उमन धानचीन की। ईसा की गुण प्रवृत्ति एव उमक प्रम भर आचरण से वह अत्यधिक प्रभावित हुआ और ईसा के विरुद्ध कोई भा कारवाई करने में अस्वाकार लिया। जब गुराहिता न वहाँ पर अपना दाल न गती दन रोमन सम्राट के समाप गिनाया मजन लग। अन्ततोग्द मनदूर हा कर पाइलटस का ईसा के विरुद्ध काम करना पना। ईसा के उपर राजद्रोह का इलजाम लगाया गया और उसे फाँगी की सजा द दी गई। मुमा-का के क्षणा में उमने गिप्या न गाव द्वाट दिया। इन गिप्या न ता यनी तर कह शाला कि वे ईसा का जान का भी नहीं। उनके इन विश्वासपात्र

से ईसा का मर्मन्त्र चोट लगे। मरते समय ईसा ने चिल्ला कर कहा "मेरे ईश्वर मेरे ईश्वर, तू न मुझे क्या साथ छोड़ दिया है ?" साथ ही उसने उन पिप्या के प्रति प्रार्थना की— या खुदा, तू इन्हें माफ कर क्योंकि य अज्ञानी हैं।'

ईसा के उपदेश — ३१ वष का युवा ईसा त्रॉम पर चढ़ गया और अपने गरीब भाइयो के लिए उसने अपनी गहादत दी। इन प्रकार गुलामा और कगाला का मसीहा इन पृथ्वी पर म मदा के लिए उठ गया। ईसा मार दिया गया किंतु उनके उपदेश अमर हो गए। उसने सतप्त ससार दुखी और अमहाय जनता के लिए नवीन आशा और जीवन का संदेश दिया। उसने बतलाया कि भल ही इस ससार म नूरता और असमानता है पर ईश्वर के ससार म ऐसे नहीं है। उसके उपदेश निम्नलिखित हैं —

“तुम गरीब धन्य हा, क्योंकि इश्वर का राज्य तुम्हारा है। अभी जा तुम भूख हा सा धन्य हा क्योंकि तुम सतुष्ट हाग। तुम रोनेवाले धन्य हो जो हंसते। (Blessed are you, who are poor, for the kingdom of God is yours Blessed are you who are hungry now, for you will be satisfied Blessed are you who weep, for you will laugh)

और भी उसने कहा —

‘अफसोस उनके लिए है, जिनके पास खाने को अधिक हैं, क्योंकि वे भूखे रहेंगे। गोचनीय वे है जो धनी है क्योंकि उनके सुख का समय बीत गया और गान्नीय वे है जो अभी हंसते ह, क्योंकि उन्हें रोना पड़ेगा।’

—लोगों को उसने सिखलाया —

‘सम्पदा म विश्वास करनेवाले पुम्पो का ईश्वर के राज्य म प्रवेश हाना बडा हा कठिन है। मूढ़ के छेत् म ऊट का प्रवेश होना बडा सरन काम है। मूढ़ क त्रेत् मे ऊट का प्रवेश करना ईश्वर के राज्य मे धनिको के प्रवेश पान स वही अधिक सुगम है।’

इस प्रकार ईसा ने अपने पीसूपवर्षी उपदेशा से असहायो, दलित एव गरीबी का सात्वना दी। उसने लोगों को कभी भी विद्रोह करना नहीं सिखलाया। गुलामो के लिए उसने धम का द्वार खोल दिया। उसने उप देश दिया: —

—“अपन दुःमना का प्यार कर, जो तुमसे घृणा करते ह उनसे तुम नम्रता का बतान कर। जा तुम्हें अभिगाप दत है उन्हें तुम बरदान दा और जो

तुम्हें गाली देते हैं उनके लिए दुआयें करो। जो मनुष्य तुम्हारे एक गाल पर मार उमके सामने अपनी दूसरा गाल भी पसार दो और जो मनुष्य तुम्हारा कोट छीन ले उसे अपनी कमीज भी दे दो। जो तुम्हें प्यार करते हैं तो इसमें क्या खूबी है। नास्तिक व्यक्ति भी अपने प्यार करनेवाला को प्यार करता है, इसलिये अपने शत्रुओं को प्यार करो और इन्हें सहायता दो। कभी निराग मन होवो तुम्हें इसका पूरा पुरस्कार प्राप्त होगा।

“ईश्वर गरीबा का है और वह उमी को प्यार करता है। ईश्वर धन और उद दखकर पक्षपात नहीं करता। वह तो प्रेम का भूखा है।”

ईसा ने सभी प्रकार से गरीबा और गुलामों का पक्ष लिया। ईसा ने एक गान्ध्याम सिखलाया कि मानव एक दूसरे की सेवा कर और ऐसा करने में ही ईश्वर की सेवा हो सकती है। ईसाई धर्म की यह विशिष्टता है कि धर्म का संचालन करने के लिए पुराहिता की आवश्यकता है। इसमें प्रत्येक मनुष्य ईश्वर से सीधा सम्पर्क रखता था। जिसमें पूजा पाठा और विधि विपधा का स्थान नहीं था। यह एक ईश्वर में विश्वास करता था।

ईसा के मरण के उपरान्त सेंट पाल ने इस धर्म का त्वरित गति में प्रचार किया। धर्म प्रचार के लिए उसने कुछ भी उठा नहीं रखा। धर्म के समर्थन में अपने व्यक्तिगत जीवन को कभी भी भंग नहीं किया। मष्ट पाल ने ईसाई धर्म की व्याख्या इस प्रकार की कि इसमें सभी धर्मों का सार आ गया। उसने नारिया का आदर करने की शिक्षा दी और दासों के हृदय में नूतन आशा का संचार किया।

ईसाई धर्म के प्रति रोमन साम्राज्य की नीति — जिस समय ईसाई धर्म का उदय हुआ था उस समय रोमन साम्राज्य में मन्नाट पूजा बड़े जार गार में चल चुकी थी। ईसाई जबल ईश्वर को ही मानते थे। भन्ना के मन्नाट को देवता के रूप में किस मान सकते थे? मन्नाट के समय तो नतमन्नाट हाना दर की बात रही। वह भी मूर्ति के रूप में। अतः ईसाईयो के इस आचरण में रामन अधिकारी अत्यन्त दुःख हो गए। अब इस धर्म को कुचनन के लिए धार-धार प्रयत्न किया जाने लगा। एक बार २६८ ई० में रोम की स्थापना का वापिको-गय हा रहा था। इस उगव में ईसाईयो के सम्मिलित होने ने अस्वीकार कर लिया। क्योंकि इसमें रामन दबाया की पूजा करनी पानी थी। फलतः सन्ना ईसाई फीरो के दूरे पर दूना स्थित गए। रामन साम्राज्य शायक-शायतन के गामन-नाल में उनपर अथिध्व प्ररुतापूर्ण अत्याचार किए गए। ईसाई धर्मावलम्बियों की सम्पत्ति जप्त कर ली गई।

उकी पावन पुस्तक बाइबिल एव अर धार्मिक पुस्तकें अग्नि की अर्पित कर दी गई । उनके लिए 'यायालय' का द्वार बंद कर दिया गया और ईसाई धर्म लोह श्रावीर म धन्द कदी की भाँति बराहने लगा । इन बेपनाह अया चारा के पश्चात् भी इसकी प्रगति निरन्तर बढ़ती गई । इस दमन ने आग म घो का काम किया । शहीदा की शहादत न च्च की स्थापना की । अब उच्च वर्ग क लोग भी इस धर्म के अनुयायी होने लग । ३२४ ई० मे ईसाईया के मित्र महान कौन्स्टेन्टाईन ने इस धर्म को राज्य धर्म की स्वीकृति प्रदान की । ईसाईया की सम्पत्ति लौटा दी गई और इनपर से कानूनी असुविधायें हटा दी । अब ईसाई धर्म का स्वरूप हो परिवर्तित हो गया, जबतक इमका दमन होता रहा जबतक लपे नपाय लाग ही इस धर्म का स्वीकार करत थे । किन्तु राज्य का समर्थन प्राप्त हाने से इमम अवाछित व्यक्ति भा आने लगे । रोम ईसाई धर्म का सर्वप्रमुख केन्द्र बना, क्योंकि साम्राज्य की राजधानी थी । वहाँ का पादरी जा पाप कहलाता था, कैथोलिक सत्तार का धर्मगुरु बना ।

इस प्रकार अनेक विघ्न-बाधाआ और कष्ट कटका की राहों मे गुजरता हुआ ईसाई धर्म एक दिन राज्य धर्म बन गया । आज भी विश्व म ईसाई धर्म माननवाला की सख्या सबसे अधिक है । इमका कारण यह है कि इसका नियम बहुत ही सरल एव सीध माय है ।

शिक्षायें —एक इश्वर म विश्वास करा । एकनिष्ठ एव दृढ विश्वासी बनो । सबके प्रति सदा सच्चा एव ईमानदार बना । दुःख और मुख म सदा मुस्कुरात रहो । कष्ट एव तकलीफा के क्षण म सबका साथ दो । किसी एक लक्ष्य लेकर आगे बढ़ा । अतीत से प्रेरणा ग्रहण करो और उस अपने जीवन मे उतारने की चेष्टा करो ।

प्रश्न

- (१) इसा क जन्म के पूर्व क्या अवस्था था ?
- (२) इसा का जीवन-कृत अपने शब्दों में लिखो ?
- (३) उनके प्रमुख उद्देश्य कौन-कौन थे ।
- (४) इस धर्म का प्रचार कैसे हुआ और इसके प्रति रोमन साम्राज्य की कैसा नीति रही ?
- (५) इसा के जीवन कृत एवं ईसाई धर्म से आपको कौन-कौन सी शिक्षायें प्राप्त हुए ? आपके जीवन का कौन सा लक्ष्य है और इन शिक्षायों में से किन किन शिक्षायों को अपने जीवन में उतारने की चेष्टा का है ?

चैत्र शुक्ल रामनवमी

पूव सैयारी—स्वून बर होन क पूथ सवा को गचना द टा। चाहिए रि हमनाग रामनवमी का पव मनावेन। यन् आग पाग क गौर म मठ हो या राम का मन्त्रि जाति हा ना वही पर पट्टेकर ग्रामाणा र गाय रामनवमी का पर्व मनाना चाहिए। वहाँ क ग्रामीणा म यज्ञ पना नगा रता चाणि वि वही पर लाग अध-मगह भा कर रह है ? यन् कर र है तो विद्यालय म भी बुद्ध आधिक महायना पर दनी चाहिए। दूगर तिन छात्र एव गिनत विद्यालय का सफार् करव मन्त्रि म पट्टेगे वहाँ की सफार् करगे और वही पर गृत्र-यन करेगे। पुन राम की कथा चचा होगा उनर विषय म कविनाएँ और एव पढ जायेंगे। जन म रामायण पाठ हागा। रामायण पाठोपरान्त प्रवाद वितरण हागा और छात्र पुन निज निज गह लोट जायेंगे।

कथा—बहुत पुराने समय म षड्वाकु वध म दगरम नाम क राजा अवाध्या म राज्य कर। थ। उनकी तीन रानियाँ थी—कौगल्या, ककई और मुमिशा। किन्तु सबसे गद की बात यह था कि उह कोई भी सतान नहीं थी। अत ऋषिमाने कहा कि जाप मन कर। राजा दगरम न एतथ वगिष्ठ का आना दी। वगिष्ठ ऋषि न दू गी शक्ति का मन करन क त्रिए बुनाया। मन प्रारम्भ हुआ। उम मन म खीर बनी। उन खीर का दो भागा म बाँटकर कौगल्या और ककई का द दिया गया। कौगल्या और ककई न अपन-अपन हिमन म धाही धाही खीर निकानकर मुमिशा का ना द दी, अत कौगल्या को एक पुत्र राम और ककई का एक पुत्र भरत तथा मुमिशा का दो पुत्र लक्ष्मण तथा दशरुध्न हुए। राम का जन्म चैत्र शुक्ल नवमी दिन सामवार का हुआ था। चारों भाई प्रमग वधन लगे। इसी समय विश्वामित्र मुनि राम की बहादुरी का मुनकर दगरम क पास दो भाइयों का कुछ तिनो के लिए एन आए। क्याकि जगन म तपस्या करन म बाधन व। राम और लक्ष्मण सार राजसा का मारकर उनर मन का निर्वान पर लिया। विश्वामित्र मुनि उहें परित्रमण क लिए जनकपुर ल गए। इसी समय सीता का स्वयंवर हा रहा था। दग विष्णु क भूपति उन स्वयंवर म आय थ। किन्तु उसम एक शिव धनुष एना हुआ था। उमे चगना था। किन्तु मभी राज हार गय विसी म कुछ न हा सका महाँ तक कि सभी राजाओं न एव माय

उठाने की कोशिश की किन्तु व्यर्थ । "भूप सहस्र दस एवहि चारा, लगे उठावा टरे न टारा ।' अतः जनक जी उदास होकर बोले—

बोर बिहीन मही में जाना ।

जब लक्ष्मण का प्राण नभय उठा । राम ने उन्हें शान्त कर धनुष नामी और सीता से गाली कर घूमघाम से अयोध्या लौटे । राजा दशरथ जब बूढ़े हो चले थे । उन्होंने सोचा कि राम को जब मैं गद्दी पर स्वयं वन में जाकर सपत्न्या करूँ । ऐसा सांचर उहनि एक सभा बुलाई जिसमें राम को युवराज बनाने और नदन्तर उन्हें सिंहासनासन करन की बात का । इसी समय उन्हें खबर लगा कि कैंवई कापू नवन में है । व वहाँ पर घरघाय हुए आए । ककड़ को उन्होंने त्वामुर मगुाम व नभय दा वर भाँगन के लिए कहा था । ककड़ ने कहा कि मैं अवसर आने पर माग लूँगा । इस समय अवसर देखकर उनमें वर मान की आना मानी । उनमें मागा कि राम का चौदह वष का वनवास और भरत का राजगद्दीद । यह वचन सुनते ही उनका परात्मे की मिट्टी खिगकने लगी । कठार बजपात हुआ । उन्होंने समझ रखा था कि—

“जाव नेहू कि मागि खरेना”

किन्तु व तो थे कि 'प्राण लाइ कर वचन न जाई ।' राम वन गये और राम के वियोग में इधर दशरथ के प्राण पसक उच गए । अयोध्या की जनता राम के रथ से पाछे चिन्तानी हुई दागी । 'सुमन्त व राको, सुमन्त रथ राका ।' इस समय भरत ननिहाले में थे । वगिष्ठ ने उन्हें दशरथ के मृत्यापरान्त बुनाया और कहा आन पर उन्हें सारा मम्वाद सुनाया । किन्तु यहाँ पर कुछ दूमेरा हो गया बंधा हुआ था । वहाँ की जनता में न ही कोई सम्मान था और न दित में कोई अरमान । सारी जनता विह्वल हो राम के गोकुल में । भरत अयोध्या की जनता व साथ राम का पुन जगल से वापस जान के लिए चल पड़े । चित्रकूट में दाना भाइया में मुनाजात हुई । भरत और अयोध्या की जनता की दातर बाणी का सुनकर भी राम नहा लौटे । व तो पृथ्वी पर इमीलिए खनीण हुए थे कि पृथ्वी व पापियाक अयाचारा से लोगों का निवारण दिवाना था उन्हें । अतः में भरत राम का खगळे लेकर अयोध्या लौटे गए । और अयोध्या के समीप व वन में निवास करने लग । खडग को सिंहासन पर रख राम की प्रतिमूर्ति व रूप में उनका पूजा करत हुए राय सचालन करत रहे ।

— राम जगल में एक दिन एक स्वर्ण मृग के पाछे उसका वध करत के लिए दाड़े किन्तु वह तो था मामावा मृग । कुछ दूर जान पर वह मामर हो

गया। इधर राम के नहा सौटन पर सीता जति ध्याकुल हुई। उन्होंने लक्ष्मण को राम को साजन के लिए भेजा। लक्ष्मण को नारी हृदय पर विश्वास नहीं हुआ अतः उन्होंने शायदो के चारो जार एव लकीर साच दो और इसके बाहर जाने से निषेध कर लिया। इसी समय लकाधिपति रावण का मुजबसर प्राप्त हुआ और भित्तारी का भय धारण कर सीता को चुरान के निमित्त भिगा लेन आया। सीता सीची लकीर के भीतर स ही भिगा देने लगी। किन्तु रावण जो भित्तारी था कहा कि मैं रंगा के भीतर से भिगा नहीं लूंगा। ज्याही सीता रंगा क बाहर आई। रावण सीता को चुराकर लका ल गया। बीच म जग्यु जा राम का परम भक्त था, रावण स लड पडा किन्तु रावण ने उसका एक पम काट दिया। जब राम अपनी कुटिया म लौटे ता सीता को न दमकर विचलित हुए। सबत्र उहान सीता की साज की। यहाँ तक की वन क पेड-पौधा से भी पूछन चलते ह खग मृग ह मधुकर श्रेणी, तुम दली सीता मृगनयनी

माग म घायल जटायु स मट हुई। उमन मारा विवरण कह सुनाया। अब राम का शोध भडक उठा। माग म उन्होंने विष्णिघा पर बालि का बध किया और सुगीव से मैत्री कर बन्दरा की सना जुटाई और इन सना को लेकर लका पर चडाई करने क लिए प्रस्थान किया। सेतु बांध रामस्वरम म उन्होंने शिव पूजा की और इमक बाद समुद्र पर पुन बांध सनासहित लका पर उतर गए। इम प्रकार वहाँ के अत्याचारी राजा रावण का युद्ध म मारकर भारत का लक्ष्मी का अयोध्या ल आए और पृथ्वी को उमक भीषण दमन-चक्रा से मुक्ति लिलाई। वहाँ के राज्य को उमके भाई विभीषण को सौंप दिया। अयोध्या म खूब आनन्द मनाया गया और खूब धूमधाम के साथ उनका राज्याभिषेक किया गया। इम प्रकार उन्होंने गुरतर लोक-कल्याण का काय किया। आज हमलोग उन्ही की यादगारी म उनकी जम तिथि मनाते हैं।

शिक्षार्थ—राम की तरह पितृ-मातृ भक्त एव देशभक्त होना चाहिए। राम की तरह भ्रातृप्रेम रखना चाहिए। हम सभी को इस जनराज्य को राम राज्य म बदलने के लिए राम बनना चाहिए। भरत और राम के बीच राज्य गेंद की तरह लुढ़क रहा था। इसमे हम असगह तथा निर्लोभ की शिक्षा गहण करते हैं। सीता के पातिव्रत मे और राम के पत्नीव्रत स प्रेरणा लेनी चाहिए। राम के पुण्याय और कष्ट-सहिष्णु जीवन से भी प्रेरणा प्राप्त हाती है। अपन बचन का पालन सदा करना चाहिए। सीता ऐसी लक्ष्मी

को प्राप्त करने के लिए जनक ऐसे विद्वह (स्थितिप्रन) का भी हल उठाकर कमठ बनना पडा। इससे कम तथा जान का समन्वय करन की प्रेरणा होनी है।

प्रश्न

- १ तुलसी न राम-कथा को माया में बाँधकर हिन्दी साहित्य के साथ-साथ देश का बहुत बड़ा कल्याण किया तथा उद्भ्रान्त तथा हास हिन्दू जनता क मानस में बल का संचार किया। कैसे? विवेचना करें।
- २ तुलसीदास जी न राम की कथा का आलम्बन कबीर के निष्पुण्यवाद के प्रतिक्रिया स्वरूप ग्रहण किया, इसकी व्याख्या करें।
राम के जीवन स जो शिक्षाएँ प्राप्त होती हैं, उसे लेखबद्ध करें तथा दिखलाएँ कि राम ने सदा मर्यादा की रक्षा की है और इसीलिए उन्हें मर्यादा पुरुष त्तम कहते हैं।
भारत क मानचित्र प्रदर्शित कर राम की पदभ्रमण को अयोध्या से लका तरु क मार्ग को दिखलाए।

चंद्रशुक्ल १३—महावीर जयन्ती

सूय तयारी —स्वूल व^१ होन क पूव सभी छात्रा एव शिक्षा को मूचित कर लिया जायगा कि अगल दिन महावीर जयन्ती है । त्सर दिन सूय यना परान्त सभी छात्र एक जगह नमिमलिन हंगे जीर यही पर महावीर क सम्बन्ध म चचाएँ चलेंगी । नाग उनो विषय म तक वितक करेंगे । कबिनाएँ पढ़ेंगे निरूप पढ़ेंगे गोष्ठा समाप्त हाने क उपरान्त उन सभी निरुप्या एव कविताओ को मकलिन कर एव नर निरुं के आधार पर मशिन म उनकी जीवनी तिलरर सजिल करया दें और उमे प्रधानाध्यापक क कण म या पुस्तकानय म रल देंग । इमगे हम जागे गहायना मिन रनेगी नया आगामी वष म महावीर-जयन्ती मनान क उपरात हम तुना करेगे कि उनर सम्बन्ध म विगप ताज हुई है या कम । इमग अपनी प्रगति अववा का गान मिल जायगा ।

जम स्थान का मौलिक परिचय —भगवान महावीर का जम गणेश वगानी के एक गाजा नगर कुण्ड ग्राम के नाथिन राजा मिद्धाय क यहाँ हुआ था । उन समय कुण्ड ग्राम नामक दा गाम का वत्तमान नाम उमुकुण्ड है जीर वगानी का बनियावमान । ब्राह्मणा का यहाँ निवास स्थान था वह ब्राह्मण कु डपुर एव जहाँ शशिया का निधान स्थान था वहाँ शशिया का कुण्डपुर कहलाता था । य दागा हा नगर जन उम क अनुयायी थ ।

जाजाल वगाली का नाम बनिया वमाड है । यह विहार प्रांत के मुजफ्फरपुर जिले म है यह तुर्की स्टेशन मे छ मील और मुजफ्फरपुर म १५ मील की दूरी पर है । यहाँ पर प्राचीन काल के बुद्ध प्रतीक भग्नावशेष के रूप म मिलत है । यहाँ की मुख्य फसन घान है किन्तु अच्छी फसल नहा हाती है ।

महावीर के समय म विश्व भर म धार्मिक आंदोलन हा रहे थे । चीन म ताआजे जीर क पयुसीअस और ईरान म जाय्युस् नाम के यक्तियों क नेतृत्व म धार्मिक आन्दोलन चल रहे थ । सभी भारत म भी एक धार्मिक आन्दोलन का जम हुआ । भारत म धार्मिक आन्दोलनक ग मोत फरे । दागा खाना क उत्तम स्थाना से वेद विगधी चितका ने इम क्षेत्र म अपनी प्रौढ प्राति के

बीज टाले । क्षत्र शीघ्र लहलहा उठे । मुख्यत दो चिन्तक थे वद्व मान
महावीर और गौतम बुद्ध ।

यज्ञ का ख़त इतना बढ़ गया था कि साधारण लागा के लिए यज्ञ करना
हुभर प्रतीत हाता जा रहा था । इन यज्ञ मे निरीह, निबल और निर्दोष
पशुआ की बलि चलाई जाती थी । वे तो यह समझते थे कि "वैदिकी हिंसा
हिंसा न भवति ।"

जन्म काल की धार्मिक अवस्था — भगवान महावीर का जन्म युग मे जन्म
हुआ था उस समय का समाज सामाजिक आडम्बरा, रुद्धियो, अध विश्वासो
अधानुकरणा स भरा हुआ था । समाज का पान हा रहा था । वेदा और
उपनिषदा के आदर्शो को कष्टाग कर लेने म ही लाग अपन जीवन की साथकता
समझते थे । और उहोने इसी म ही अपना चरम विकास मान लिया था ।
ब्राह्मण, क्षत्रिय और वश्य अपने को 'द्विज' का उपाधि से आभूषित कर
गूढ़ा और स्त्रिया व साथ बडा ही अनुचित व्यवहार कर रहे थे । इन बठोर
और जमानुषिक अत्याचारा का समाज पर बटा ही गहरा प्रभाव पड रहा था ।
लागा म भाइचार की भावना का सबथा अभाव था । एक दूसरे के साथ
सदा कट्टू व्यवहार कर रहे थे । समाज के लागा म मिलन की भावना नही
थी, अत समाज दिनोदिन पतन के गत म गिरा जा रहा था ।

जन्म काल की राजनतिक अवस्था — जिस समय महावीर का जन्म हुआ
था उस समय बंगाली म गणतन्त्र के सूय की रातनी छिटक रही थी । गंगा
के उत्तर तट म बंगाली का गणतन्त्र राज्य था और दक्षिण म मगध साम्राज्य
का विस्तार हा रहा था । बौगल और काशी, ब्रज और अस्मक जन्म पदादि
मगध के सामन घुटन टक रहे थ । किन्तु बंगाली का भाग्यान्त्य ही रहा था ।
बंगाली व गणतन्त्र राज्य म अमनचैन की वर्षा हा रही थी । धी दूध की
नदिया वह रही थी । सोन के दिन थ, चाँदी की रातें थी । बंगाली के
गणतन्त्र राज्य की दूग्ध धवल चाँदनी म लोग सुख की नाद सा रहे थे । इसी
बंगाली म महावीर का जन्म हुआ था ।

जीवन-परिचय — आज स ढाई हजार वष पूव जन धम व चौबीसवें
तीथकर भगवान महावीर का जन्म ईसा के ५९० वष पूव बंगाली व समीप
कुण्ड गाम मे हुआ था । आजवल कु डगाम का वत्तमान नाम वसुकुण्ड है
और बंगाली का बनिया वसाढ । महावीर के पिता सिद्धाथ कुण्डगाम क
नायक राजा थे । उनकी माता त्रिशला लिच्छविया के प्रतिनिधि राजा 'चन्क'

की भगनी थी। वह क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुए थे। बचपन में इनका नाम बद्धमान था।

अपने माता पिता के दहावत के बाद भगवान महावीर ने ३० वर्ष की उम्र में अपना बद्ध भार्द नदी बद्धन से जाना प्राप्त कर धम्म धम गहन किया। बारह वर्षों की बठार और बष्ट माध्य तपस्या एवं अनवरत चष्टा के उपरांत उन्होंने श्रीमगीन नामक गाँव के बाहर ऋजुपालिका नदी के उत्तरी तट पर बबल्य जथान् माता प्राप्त किया। उस समय से वह अहन अर्थात् पूज्य, जिन अथान् विज्जता, गिगथ बधन मुक्त एवं महावीर कहना लग। इस समय से लगभग ३० वर्षों तक महावीर निरन्तर मगध जग मिथिला और वीणल में अपना धम प्रचार करते रहे। वे सब प्रकार के निगथ थे। समाज के बधना तन का उन्होंने विचार नहीं किया। और प्रश्ना की शीतला मानकर उनका परित्याग कर लिया। वे सत्ता सवत्ता नग्न फिरत रहे। बहतर वर्ष की अवस्था तक अपने उपद्रव का प्रचार करते हुए महावीर ने लगभग ईसा से पूर्व ५०० वर्षों में अपना शरीर त्याग लिया।

भगवान महावीर ने बदिक् कमवाण्डा ता उपयागा और श्रेयस्कर नहीं बनाया है। आत्मा दह रूप है या दह में भिन्न है? परलोक क्या है? गियाण क्या है? ये सब समस्याएँ जिना आत्म चिन्तन के नहीं सुननायी जा सकती। उन्होंने बनाया—वस्तु स्वभावो धमा। अथात् जित वस्तु का जा स्वभाव रूप है उनका उगी रूप में पूरण रूप स्थिर हा जाना ही उसका धम है। भगवान् था वृष्ण ने गाना में भा इसी बात का 'श्रेयान स्वधर्मो निधन' की उक्ति से कहा है।

भगवान महावीर के विचार से शुद्ध जीव को बधन नहीं होगा। जिस जीव में राग-द्वेष है अथान् जा धम से च्युत है उमी जीव में बधन है। उन्होंने कहा कि यह मनुष्य नाक माल है। जीवा के अच्छे बुरे कम जल है। काम योग कीचड है मनुष्य समान कमल है। दोनराग भिगु ही धम है। धम तोष जन का विनारा है। कमल का उडवर हस्तगत हा जाता ही निमाण है।"

जन जीवन का ध्यय पार्थिव अस्तित्व के पाशा से मुक्ति पाना है। जीवा को उनके शारीरी हा के कारण कामिक है। कम मुक्ति के, तीन प्रमुख साधन हैं—सम्यक् श्रद्धा, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरण। महावीर ने इसमें आजीवन ग्रहण ही जाड लिया है। उन्होंने कहा है कि मनुष्य अबतक

कामा है तबतक वह लौकिक कमकाण्ड के पाप में बसा हुआ है। अब उसे आज्ञा ब्रह्मचर्य का धन गृह्य करना चाहिये तभी उसे मुक्तिमित्र मन्त्री है। उन्होंने तप के महत्त्व पर अधिक जग दिया है साथ ही साथ उन्होंने अहिंसा, सत्य अस्पर्श तथा अपरिग्रह पर भी विशेष जोर दिया है। कार्यान्वय यातना और योगिक क्रियाओं का बड़ा महत्त्व देना था। यथा एव उसमें दी जाने वाली प्रति को उन्होंने बहुत ही मना बुरा कहा है। यथा का उन्होंने धार हिंसा का साधन माना और उनके विरुद्ध अपनी जोरदार आवाज उठाई।

भगवान् महावीर के उपदेश अत्यन्त सरल भाषा में होने थे। लोगों को उनके उपदेशों का समझना म तबिक भी कठिनाई नहीं होनी थी और सरल भाषा होने के कारण ही लोगों ने उनके जीवन दर्शन की गभीरता को बड़ी सरलता से समझ लिया और उसी सरलतापूर्वक दर्शन सम्भीरता ने आज उन्हें भारत के अत्यन्त ज्यानिधर महापुरुषों में सम्मान से सुगामित किया है और हम उनके जीवन दर्शन से जनवरत, प्रभावित और पुनर्जित हो रहे हैं।

शिष्याएँ — सदा सत्य बोलना चाहिए। ठिंसा नहीं करनी चाहिए। निवृत्ता एव निरीह प्राणिमा का नहीं सत्ताना चाहिए। ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। इंसत वीर्य की पुष्टि होना है और चेहर पर काँति एव रौनक आती है। देशाटन कर ज्ञानाजन करना चाहिए। देशाटन जानाजन का सर्वश्रेष्ठ साधन है। चोरी नहीं करनी चाहिए। धन रा अमिन्स गृह्य नहीं करना चाहिए।

प्रश्न

- १ महावीर के जन्मकाल के धार्मिक अर्थव्यवस्था का उल्लेख करें। महावीर के जन्मकाल का राजनैतिक अर्थव्यवस्था का वर्णन करें। महावीर का शिक्षित जीवन कितना प्रस्तुत करें। उनको शिक्षा क्या है? उन्हें माँस कहाँ प्राप्त हुआ था? और कितने वर्षों तक उन्होंने धर्म-प्रचार किया?
- ४ महावीर के विचारों से बुद्ध और गांधी के विचारों की तुलना करें।
- ५ वैश्वधर्म अथवा धर्म भारत में प्रचलित है किन्तु बौद्धधर्म का नामानिर्धान मित्र गया क्या? सफारत उत्तर दें?

वैशाख शुक्ल ३-अक्षय तृतीया

वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को अक्षय तृतीया कहते हैं। इसी दिन से लाग सतयुग का प्रारम्भ मानते हैं।

पूर्व तयारी—एक दिन पूर्व सभी छात्राएँ एवं शिक्षिका को इससे विषयार्थ सूचना दे देंगे। दूधर ग्नि स्नान कर श्री लक्ष्मी नारायण का दान एवं पूजन करना चाहिए। जल से भरा मिट्टी का बत्तन, पत्ता जी का सत्तू, चानी दही, और बल तथा आम का दान करना चाहिए। २४ घट में एकबार फल-हार करना चाहिए। स्कूल के हड्डि पडित जी छात्रा और शिक्षिका की एक गोष्ठी बुनाकर, उसमें इसकी वधा सुनावेंगे और इसका महात्म्य बतलावेंगे।

कथा—राजा मुधिष्ठिर के पुत्र पर श्री वृष्ण जी ने इसका महात्म्य इस प्रकार बतलाया था—

पुराने जमान में किसी गाँव में एक गरीब बनियाँ रहता था वह सदा सत्य बोलता था एवं दयताओं और ब्राह्मणों की पूजा करता था। उसका परिवार बहुत बड़ा था अतः वह मदा चिन्तित रहा करता था। एक दिन उसने वही पर अक्षय तृतीय का महात्म्य सुना। उस महात्म्य का सुनकर उससे हृदय में यह उत्कण्ठा जगी कि मैं भी इस व्रत को करूँ, उसने व्रत किया और यथाशक्ति दान भी दिया। ऐसा कहा जाता है कि भृत्यु के उपरांत व्रत के प्रभाव से उसका जन्म कुम्भवाहा पूव में राजा के घर में हुआ। तभी से अक्षय तृतीया व्रत की परम्परा चली आ रही है।

शिक्षाएँ—लक्ष्मी नारायण का दान और पूजन करने से हृदय शुद्ध, निर्मल, कोमल एवं निर्विकार हो जाता है और उसमें सद्गुणों का विकास होता है। दान करने से गरीबों और दरिद्रों को भाजन मिल जाता है और एक प्रकार से कल्कि भगवान का दान हो जाता है, क्योंकि कल्कि भगवान गरीबों का ही माना गया है। उपवास रहने से पेट साफ हो जाता है और चित्त शुद्ध हो जाता है। काम करने में मन लगता है और शरीर में स्फूर्ति तथा चेहरे में प्राप्ति की वृद्धि होती है।

प्रश्न

- १ अक्षय तृतीया कब मनायी जाना है ? इसका विधान क्या है ?
 - २ इसकी क्या क्या है और किनसे कहा है ?
 - ३ इसका क्या महत्त्व है ?
 - ४ क्या अक्षय तृतीया प्रवृत्त करना छात्रों के लिए आनन्ददायक होगा ? यदि हाँ तो कैसे ? संक्षेप उत्तर दें ?
-

वैशाख शुक्ल ३—परमुराम जयन्ती

परमुराम जी का जन्म ऋषभ तृतीया को हुआ था। यह जयन्ती उत्तर भारत में मथुरा और काशी के बीच तथा दक्षिण में परमुराम-शेत्र में विशेष रूप से मनाई जाती है।

पूज तयारी—एक दिन पूज सदा को हमने विषय में मृचना दी जायगी। दूसरे दिन सूत्र-यज्ञोपवीत सभी छात्र एक शिक्षक एक जगह जुटेंगे, वही पर विद्यालय के प्रधान पंडित जी या बाद जय गिराज हमारे विषय में चर्चा करेंगे एक परमुराम जी का जयन्ती एक उनके कार्यों में परिचय करायेंगे। इसका विधान यह है कि दिन भर धन एक उपवास करें। रात का यदि हो सके तो फलाहार कर जीरा करे ता वह भी उत्तम होगा। परमुराम जी का पूजन करें और उनको कथा सुना।

कथा—प्राचीन काग में जब वि बल्कि युग अस्त हो रहा था भृगु-वग में यमदग्नि नाम के महातपस्वी मुनि का आविर्भाव हुआ।

भृगु-वग बड़ा ही प्रतिगठित था। शुभ्राचार्य भृगु के ही पुत्र थे जो दानवा के गुणों और उन्होंने अपनी सजीवनी विद्या में समय समय पर असुरों का बड़ा ही उपहार किया था।

भृगु-वग में ही महर्षि च्यवन बहुत बड़े तपस्वी पत्न टूटे थे। ऐसा कहा जाता है कि राजा सरयानि ने बहुत ही अनुनय विनय के साथ अपना कथा को एक दान में दिया था। एही के वग में अचित्त और जीव जैसे अपि हुए। गर्भावस्था में ही गर्भजात और की हत्या करन की सोची था किंतु प्रयत्न विफल हो गया। १६ वर्ष के सगर राजा को भौव ने ही मुद्ध कला में पारगत बना दिया था। इस प्रकार भृगु-वग बड़े ही सदाचारी सत्यवादी वीर धीर, निष्काम एक परोपकारी होत थे। हरि भजन एक ज्ञान की खोज, तथा सद्-पदेन देकर साक कल्याण करना ही भृगु वसिया का प्रधान काम आर धर्म था।

ता यमदग्नि के जन्म लेते ही सारी कुटिया जालाकित हान लगी। जन्म के समय इनके चेहरे की काति जग्नि के समान थी इसीलिए इन्का नाम यमदग्नि पड़ा।

इनकी पत्नी का नाम रेणुका था। रेणुका से वागु मातादि ५ पुत्र उत्पन्न हुए। परमुराम अपने भाइयों में कनिष्ठ थे। यह वचन से ही